04 - भ्रांति नहीं, सामाजिक क्रांति की जरूरत

05 - धर्म एक चीज है और कानून दूसरी चीज

06 - सूर्योदय स्मॉल फाइनेंस कंपनी के कर्मचारी की निर्मम...

07 - भारतीय संविधान के शिल्पी एवं सामाजिक क्रांति के महानायक

A Daily News Magazine

भोपाल

सोमवार, 14 अप्रैल, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 214, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

पहली बात

राजनीति की मुख्य धारा में संविधान की किताब और बाबा साहेब

उमेश त्रिवेदी
प्रधान संपादक

हम भारत के लोग बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर की 135वीं जयंती पर देश के पचहत्तर साल पुराने संविधान की अवधारणाओं के इर्दगिर्द मचे राजनीतिक घमासान को कौतुहल से देख रहे हैं। कौतुहल इसलिए जायज है कि संविधान की जो किताब गाहे-बगाहे औपचारिक समारोहों में ही विमर्श का सबब बनती थी, उसकी कसमें आज हर राजनेता की जुबान पर हैं। राजनीति में संविधान के हाशिए पर सरक जाने के दुष्परिणाम किसी से छिपे नहीं है। संविधान सम्मत राजनीति के अभाव में देश का दिशाबोध धुंधलाया है। इसलिए जरूरी है कि देश का संचालन संविधान सम्मत राजनीति के माध्यम से हो। सत्ताजनित सियासी वितंडावाद देश के लिए आत्मघाती सिद्ध हुआ है। संविधान की राजनीति और राजनीति के विधान में संतुलन वक्त का तकाजा है। राजनैतिक दलों पर संवैधानिक अनुशासन के बिना यह संभव नही है।

बहरहाल, शायद इसीलिए देश की मुख्य धारा की राजनीति में संविधान का राजनीतिक मुद्दा होना एक गणराज्य के नाते भारत के लिए शुभ घटना है। इस परिप्रेक्ष्य में बाबा-साहब अम्बेडकर के स्मरण के साथ ही संविधान की महत्ता के सुर स्वतः फूटने लगते हैं। राजनीति में संविधान की यही चर्चा ही फलदायी सिद्ध होने वाली है।

संविधान की सुरीली लोकतांत्रिक अनुगूंज में स्वतंत्रता, समता, समानता, बंधुता, संप्रभुता, समाजवादी, धर्म-निरपेक्षता के सात संवेग सुरों ने मिलकर भारत में लोकतंत्र का ऐसा सुरीला संसार रचते हैं, जो दुनिया में भारत को बेमिसाल बनाता है। ये संवैधानिक मूल्य भारत के मार्गदर्शी सिद्धांत हैं, जो भारतीय लोकतंत्र की आत्मा को उद्भासित करते हैं। संविधान और संवैधानिक मूल्यों की पृष्ठभूमि में लोकतंत्र के सात सुरों का स्वप्निल संसार अद्भुत और आलीशान है।

लेकिन संविधान के आसपास जारी राजनीतिक विवादों का सुरीला पक्ष यह है कि अब कोई भी राजनीतिक ताकत संविधान के साथ मन चाहे खिलवाड़ नहीं कर सकेगी। इस बहस में देश के सभी राजनेता और पार्टियां की संविधान के प्रति प्रतिबद्धता खासतौर से गौरतलब है। यह प्रतिबद्धता इस बात का आश्वासन है कि संविधान आगे भी अक्षुण्ण बना रहेगा। संविधान के ऊपर राजनीतिक चर्चाओं का एक लाभ यह है कि अब देश की राजनीति संविधान की मंशाओं को ध्यान में रख कर आगे बढ़ेंगी। दूसरा लाभ यह होगा कि राजनीति के डमरू की कर्कश आवाजें खुद ही खामोश होने लगेगी।

वैसे भी राजनीति के हाशिये पर रखे संविधान का पक्ष-विपक्ष के बीच बहस का मुख्य मुद्दा बना जाना लोकतंत्र के सेहत के लिए बेहतर है। बहस लोगों में संविधान के प्रति जागरूकता की दिशा में दिग्दर्शक का काम कर रही है। लोग संविधान के बारे में पहले की तुलना में ज्यादा उत्सुक और सजग हो चले हैं। लेकिन सजगता और उत्सुकता के बीच आम लोगों के दायित्वों के मंत्रों का गुम हो जाना भी घटनाओं का चिंतनीय पहलू है। 'हम भारत के लोग' जब संविधान की बात करते हैं तो संवैधानिक मूल्यों और अधिकारों के बीच लोकतंत्र के पेंडुलम का संतुलन कायम करने में असमर्थ सा प्रतीत होता है।

यहां संवैधानिक मूल्यों और संवैधानिक अधिकारों में बारीक अंतर को समझना होगा। संवैधानिक अधिकार नागरिकों का जीवन बेहतर बनाने के लिए समाज, राज्य व्यवस्था और अन्य व्यक्तियों द्वारा प्रदान किए जाते हैं, जबकि संवैधानिक मूल्य व्यक्ति और समाज का वह एहसास और भावनाएं हैं, जो अधिकारों के स्वरूप को रूपान्तरित करते हैं। अधिकारों के साथ तर्क, मानक और परिस्थितियां जुड़ी होती हैं, किन्तु मूल्यों को जब अपनाया जाता है तो उनका उनका व्यवहार सार्वभौमिक होता है। कोई भी अधिकार तब तक पूरा नहीं होता है, जब तक कि उसमें मूल्यों का भाव शामिल नहीं हो।

संविधान के संदर्भ में कई जरूरी सवाल सामने हैं। पहला सवाल तो यही है कि हमारे संविधान के प्रगतिशील और दूरदर्शी होने के बावजूद लोकतांत्रिक व्यवस्था की विभिन्न इकाइयों ने इसे कितना आत्मसात किया है? हम किस हद तक इसे हमारे सामाजिक और बौद्धिक जीवन का हिस्सा बना सके हैं? संवैधानिक अधिकारों की भावभूमि पर क्या इतनी जागरूकता आ चुकी है कि हम लोकतंत्र के कथित पहरूओं की ज्यादतियों और जुल्मों का सही तरीके से प्रतिकार कर सकें? लोकतंत्र के मुख्य कारक के रूप में न्याय-पालिका,कार्य-पालिका, विधायिका के साथ मीडिया जैसे स्तम्भ संविधान के मूल्यों,अधिकारों और कानूनों को जीवन की हकीकत में तब्दील करने मे कितने सफल रहे हैं?

हमें नहीं भूलना चाहिए कि संविधान एक जीवंत दस्तावेज है। संविधान की इबारत लोकतंत्र की इबादत है, जिसकी आरती की अनुगूंज और आवाज हमारे संसदीय जीवन का हिस्सा है। संविधान के तकाजे हर वक्त ताकीद करते रहते हैं, वो हर गलती पर टोकते हैं, अन्याय की ओर इशारा करते हैं, अधिकारों के अतिक्रमण पर आगाह करते हैं, समानता के लिए उत्प्रेरित करते हैं, सिद्धांतों की समीक्षा में मदद करते हैं, बदलाव को बढ़ावा देते हैं, हिंसा के खिलाफ आंखे तरेरतें हैं, न्याय, बंधुत्व और स्वतंत्रता की बारीकियों को रेखांकित करते हैं...।

संविधान में अन्तर्निहित राजनीतिक दर्शन राष्ट्र, समाज और आम जनता के हितों के नजरिए से बहुआयामी है। एक उदारवादी, लोकतांत्रिक, धर्म निरपेक्ष, संघवादी, सामुदायिक, जीवन मूल्यों की पक्षधरता संविधान के बुनियादी उसूलों में शरीक है। सदियो से सामाजिक समता, समानता और समरसता को मोहताज देश के वंचित वर्गों के प्रति संवेदनशीलता और उनके उत्थान के प्रति प्रतिबद्धता संविधान का सर्वोच्च मुकाम कहा जा सकता है। इसके साथ ही व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समानता, सामाजिक न्याय तथा राष्ट्रीय एकता के प्रति वचनबद्धता इसकी प्रतिभूतियों में शुमार है। सियासत में देश को नुकसान पहुंचाने वाली प्रवृत्तियों को बोलबाला बढ़ता जा रहा है। जातिवाद, क्षेत्रवाद, मुफलिसी, हिंसा, आंतकवाद, अशिक्षा, सामाजिक विषमताएं, आर्थिक असमानता जैसी कई चुनौतियें देश के विकास को चुनौतियां दे रही हैं। संविधान के संकल्पों के साथ इन चुनौतियों का सर्वसम्मत मुकाबला करना संभव हो सकेगा।

हमें यह भी नही भूलना चाहिए कि संविधान के सारे प्रावधानों का एकमात्र उद्देश्य ही यही है कि लोकतंत्र में सत्ता और सत्ताधीश निरंकुश नहीं रहें। देश की राजनीति संवैधानिक कसौटियों का निर्वाह करते हुए आगे बढ़े। संविधान सत्ता की शक्तियों को नियोजित और नियंत्रित करने का कारगर लोकतांत्रिक औजार है। समाज में बदलाव की प्रक्रिया का शांतिपूर्ण संसाधन है, जिसमें देश की विविधता पूर्ण संस्कृति और अल्पसंख्यकों के सम्मान का मुकम्मल इंतजाम किया गया है। भारत का संविधान देश की राजनीति को कल्याणकारी व्यवस्थाओं को मजबूत करने की दिशा में प्रेरित करता है। देश का संविधान बनाने वाले बाबा साहब अम्बेडकर की 135 जयंती पर देश उन्हें संविधान के सर्वोदयी संकल्पों के साथ याद करे, यह जरूरी है।

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

रवींद्र भवन भोपाल में राज्य स्तरीय सहकारिता सम्मेलन आयोजित

सहकारी समितियां अब पेट्रोल पंप चलाएंगी, गैस बांटेंगी : अमित शाह

भोपाल में कहा- एमपी में काफी संभावनाएं ; सांची और एनडीडीबी के बीच एमओयू

भोपाल (नप्र)। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह भोपाल के रवींद्र भवन में आयोजित राष्ट्रीय सहकारिता सम्मेलन में शामिल हुए। इस दौरान मध्यप्रदेश दुग्ध संघ और नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड (एनडीडीबी) के बीच एमओयू हुआ। इसके साथ ही एमपी के छह दुग्ध संघों और एनडीडीबी के बीच छह अलग-अलग एमओयू भी किए गए।

शाह ने कहा कि देश में सहकारी समितियां अब पेट्रोल पंपों का संचालन करेंगे और रसोई गैस वितरण भी संभालेंगी। सहकारिता सेक्टर में मध्य प्रदेश में काफी संभावनाएं हैं, जिस पर काम करने की जरूरत है।

सहकारिता में काफी काम करने की जरूरत- सम्मेलन को संबोधित करते हुए सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा- मध्य प्रदेश के अंदर कृषि, पशुपालन और सहकारिता क्षेत्र में अधिक संभावनाएं हैं। मैं मानता हूं कि हमें हमारी संभावनाओं का शत प्रतिशत दोहन करने के लिए ढेर सारा काम करने की जरूरत है।

साढ़े 3 साल में काफी बदलाव आया- अमित शाह ने कहा कि ग्रामीण विकास और कृषि विकास के आयाम, पशुपालन के आयाम, इन सबको एक जगह पर रखकर केंद्रीय स्तर पर कोई विचार नहीं किया। विचार होता भी कैसे। कोई सहकारिता मंत्रालय ही नहीं था। आजादी के 75 साल बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने सहकारिता मंत्रालय बनाकर मुझे मंत्री बनाया। मोहन जी कह रहे हैं उन्हें आश्चर्य हुआ तो थोड़ा मुझे भी आश्चर्य हुआ। साढ़े तीन साल के समय में मोदी जी ने खुद बहुत बारीकी से देखकर सहकारिता आंदोलन में बहुत बड़ा बदलाव लाने का काम किया।

मॉडल बायलॉज को सभी राज्यों ने अपनाया- शाह ने कहा- आज भी सहकारिता राज्य का विषय है। भारत सरकार राज्य की सूची में कोई बदलाव नहीं कर सकती, लेकिन टैक्स को पुनर्जीवित करना, डेयरी क्षेत्र को बढ़ाना, उत्पादन के क्षेत्र में सहकारिता को ले जाना, अर्बन को-ऑपरेटिव बैंक, जिला सहकारी बैंक और ग्रामीण बैंकों के सुचारू व्यवस्थापन का सारा काम कैसे होगा। सहकारिता मंत्रालय में सबसे पहले मॉडल बायलॉज बनाए और उसे सभी राज्य सरकारों को भेजे। कई पत्रकार अटकलें लगा रहे थे कि मॉडल बायलॉज राजनीति की भेंट चढ़ जाएगा। कई गैर भाजपा शासित राज्य बायलॉज स्वीकार नहीं करेंगे। मैं कहना चाहता हूं की संपूर्ण भारत में मॉडल बायलॉज को स्वीकार किया गया है। जब आपकी नीयत ठीक हो, श्रम करने की वृद्धि हो तो नतीजे भी ठीक ही आएंगे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने की। इस दौरान सहकारिता मंत्री विश्वास सारंग, पशुपालन-डेयरी विकास मंत्री लखन पटेल के साथ-साथ नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड और मध्यप्रदेश के सहकारिता, पशुपालन एवं डेयरी विभाग के अधिकारी भी मौजूद रहे।

दूध उत्पादन 9 प्रतिशत से बढ़ाकर 24 प्रतिशत करना है- सीएम डॉ मोहन यादव ने कहा कि अंबेडकर जयंती पर हमने कामधेनु गोपालन योजना को शुरू की है। कल सेवा योजना शुरू हो जाएगी। यदि कोई 25 गौ माता पालेगा तो उसे 25 प्रतिशत अनुदान दिया जाएगा। हमारे कृषि विकास दर में अद्भुत पहचान बनी है, लेकिन दूध उत्पादन 9 प्रतिशत से बढ़ाकर 24प्रतिशत करना है।

सीएम यादव ने कहा- किसानों की जिंदगी बेहतर बनाएंगे

सीएम ने कहा कि हजारों साल से ऐसा माना जाता था कि हमारे देश में दूध की नदियां बहती थीं। लेकिन गाय का दूध खरीदने में हाथ जोड़ते थे। यह बात अलग है की दूध में पानी मिलाकर चला दें, लेकिन कोई दूध उत्पादक घर से गाय का दूध लेकर जाए तो गाय का दूध नहीं खरीदते थे।

सांची का नाम नहीं बदलेगा, संचालन एनडीडीबी के हाथ में होगा: मंत्री लखन पटेल

पशुपालन एवं डेयरी विभाग के मंत्री लखन पटेल ने बताया कि मप्र दुग्ध संघ और एनडीडीबी के बीच अनुबंध के बाद भी न तो सांची का नाम हटेगा, न लोगो बदलेगा। संचालन का काम एनडीडीबी के हाथों में रहेगा। दुग्ध संघ में अब सीईओ, एनडीडीबी के अधीनस्थ काम करेंगे। एनडीडीबी मप्र में डेली दुग्ध उत्पादन क्षमता को 10 लाख लीटर से बढ़ाकर 5 साल में 20 लाख लीटर तक ले जाएगा। 5 साल के प्रोजेक्ट के लिए 1447 करोड़ रुपए के बजट का प्रावधान किया गया है।

वीडी बोले- एमओयू से मध्य प्रदेश को नई दिशा मिलेगी

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने कहा आज का दिन हम सब लोगों के लिए इसलिए महत्व का दिन है, क्योंकि देश के गृहमंत्री और प्रथम सहकारिता मंत्री अमित शाह जी ने आज मध्य प्रदेश को जो सौगात दी है, इसके माध्यम से मध्य प्रदेश को नई दिशा मिलेगी।

मंत्री सारंग बोले- आज का दिन श्वेत क्रांति के लिए मील का पत्थर

खेल-सहकारिता मंत्री विश्वास सारंग ने कहा आज का दिन सरकारी आंदोलन और श्वेत क्रांति के लिए मील का पत्थर साबित होगा। फायदे का धंधा बनाना है तो हमें कृषि के साथ उसके सहयोगी विषयों पर भी काम करना होगा। पशुपालन और दूध उत्पादन सबसे महत्वपूर्ण अंग हैं। आज एनडीडीबी के साथ मध्य प्रदेश का सपना साकार हो रहा है, निश्चित रूप से दूध के आंदोलन में नई क्रांति लेकर आएगा।

सुप्रभात

तुम्हारी फ़ाइलों में गाँव का मौसम गुलाबी है
मगर ये आँकड़ें झूठे हैं ये दावा किताबी है
उधर जम्हूरियत ढोल पीटे जा रहे हैं वो
इधर पर्दे के पीछे बर्बरीयत है नवाबी है
लगी है होड़-सी देखो अमीरी और ग़रीबी में
ये पूँजीवाद के ढाँचे की बुनियादी ख़राबी है
तुम्हारी मेज़ चाँदी की तुम्हारे जाम सोने के
यहाँ जुम्मन के घर में आज भी फूटी रक़ाबी है।

- अदम गोंडवी

आतंकी तहव्वुर राणा के वॉयस सैंपल लेगी एनआईए

नई दिल्ली (एजेंसी)। तहव्वुर राणा से राष्ट्रीय जांच एजेंसी रविवार को तीसरे दिन पूछताछ करेगी। 2008 मुंबई आतंकी हमले के आरोपी तहव्वुर राणा के वॉयस सैंपल लिए जा सकते हैं। एनआईए पता लगाएगी कि क्या तहव्वुर नवंबर 2008 के हमलों के दौरान फोन पर निर्देश (इंस्ट्रक्शन) दे रहा था। वॉयस सैंपल लेने के लिए तहव्वुर की सहमति जरूरी होगी। मना करने पर एनआईए कोर्ट जा सकती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, शनिवार को एनआईए की पूछताछ में एक कर्मचारी बी का नाम आया है, इसने राणा के कहने पर हेडली के लिए ऑपरेशन और लॉजिस्टिक में मदद की थी।

हादसों का 'रविवार': 3 घटनाओं में 15 की मौत

● जयपुर और बिजनौर में काली सुबह, 7 की गई जान ● आंध्र की पटाखा फैक्ट्री में धमाका, 8 लोगों की मौत

जयपुर (एजेंसी)। रविवार का दिन तीन राज्यों के लिए बेहद दुखद रहा। राजस्थान और उत्तर प्रदेश में हुए दो अलग-अलग सड़क हादसों में सात लोगों की जान चली गई। वहीं आंध्रप्रदेश

की पटाखा फैक्ट्री में हुए धमाके में 8 लोगों की मौत हो गई है। मृतकों में एक ही परिवार के पांच सदस्य और दो सगे भाई शामिल हैं। राजस्थान के जयपुर जिले में रविवार सुबह एक दर्दनाक

हादसा हुआ। रायसर थाना क्षेत्र में मनोहरपुर-दौसा राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक कार और ट्रेलर की आमने-सामने टक्कर हो गई। इस हादसे में कार सवार एक ही परिवार के पांच लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। थाना प्रभारी रघुवीर सिंह ने बताया कि यह हादसा नेकावाला टोल के पास सुबह करीब आठ बजे हुआ, जब कार सवार परिवार खाटूश्याम मंदिर के दर्शन के लिए जा रहा था। तभी सामने से आ रहे ट्रेलर से उनकी जोरदार भिड़ंत हो गई। मृतकों की पहचान उत्तर प्रदेश के लखनऊ निवासी सत्यप्रकाश सोनी (60), उनकी पत्नी रामादेवी (55), बेटे अभिषेक सोनी (35), बहू प्रियांशी (30) और छह महीने की पोती के रूप में हुई है। ये सभी राजस्थान घूमने आए थे और धार्मिक यात्रा पर निकले थे। उधर, उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले के स्योहारा थाना क्षेत्र में दर्दनाक हादसा हुआ। खेत से घर लौट रहे दो सगे भाइयों की तेज रफ्तार वाहन की टक्कर से मौके पर ही मौत हो गई।

राहुल की रणथंभौर यात्रा में छिपा है बड़ा राजनीतिक बदलाव

● सचिव पायलट को कमान सौंपने की तैयारी! संगठन मजबूत करने पर जोर

दौसा (एजेंसी)। कांग्रेस नेता और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी इन दिनों से सवाई माधोपुर स्थित रणथंभौर में है। वो रणथम्भौर में टाइगर सफारी का लुत्फ उठा रहे हैं। रविवार सुबह एक बार फिर राहुल गांधी टाइगर सफारी पर जाते समय गणेश धाम स्थित रणथंभौर के मुख्य प्रवेश द्वार पर कांग्रेस कार्यकर्ता छुट्टन लाल मीणा से रूबरू हुए। इस दौरान कांग्रेस कार्यकर्ता से राहुल गांधी की संगठन और विभिन्न मुद्दों को लेकर बातचीत हुई। कांग्रेस कार्यकर्ता छुट्टन लाल मीणा ने बताया कि राहुल गांधी से मुलाकात के दौरान उन्होंने समरावता कांड और नरेश मीणा के बारे में चर्चा की। जिस पर राहुल गांधी ने उन्हें नरेश मीणा को कांग्रेस की ओर से समर्थन देने की बात कही। इसी के साथ ही राहुल गांधी ने संगठन को मजबूत करने के लिए कार्यकर्ताओं को सक्रिय भूमिका

में लाने की बात कही। छुट्टन लाल मीणा ने बताया कि राहुल गांधी ने कहा कि वो प्रखंड और जिलाध्यक्षों को आने वाले समय में बड़ी जिम्मेदारी सौंपेंगे और संगठन को मजबूत बनाने के लिए कई कदम उठाएंगे।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 22 °c

न्यूनतम 16°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ सोमवार, 14 अप्रैल 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

झारखंड में विदेशी घुसपैठ ने बढ़ाई सुरक्षा की चिंता

- बोकारो में ग्रामीणों ने संदिग्ध बांग्लादेशी को पकड़ा

बोकारो (एजेंसी)। झारखंड में बोकारो के चंदनकियारी थाना क्षेत्र के झाबरा गांव के ग्रामीणों ने शनिवार रात को इलाके में कुछ संदिग्ध लोगों घूमते देखा। रात के अंधेरे में संदिग्ध लोगों को देखकर जब ग्रामीण इकट्ठा होने लगे, तो सभी भागने लगे। इस दौरान ग्रामीणों ने एक संदिग्ध व्यक्ति को पकड़ कर चंदनकियारी थाना पुलिस के हवाले कर

दिया। पकड़े गए व्यक्ति की पहचान बांग्लादेशी नागरिक के रूप में की गई है। चंदनकियारी थाना की पुलिस ने संदिग्ध व्यक्ति से काफी पूछताछ की लेकिन वो हर सवाल पर टालमटोल जवाब देता रहा। बाद में पुलिस ने उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में इलाज के लिए भर्ती कराया। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार संदिग्ध व्यक्ति ने अपना नाम नूर बीन मुस्तफा बताया और वो बांग्लादेश के ढाका का रहने वाला बताया जा रहा है। चंदनकियारी सीएचसी के डॉक्टर की ओर से रेफर किए जाने के बाद उसे बोकारो जनरल अस्पताल ले जाने की बात कही गई है।

एनकाउंटर के बाद बरामद सामान पर पाकिस्तान का पता

हथियार और गोला-बारूद मिला, 11 अप्रैल को सुरक्षाबलों ने 3 जैश आतंकी मारे थे

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ जिले में 11 अप्रैल की देर रात को हुए मुठभेड़ में सुरक्षाबलों ने 3 आतंकियों को मार गिराया था। जिसके बाद से जारी सर्च ऑपरेशन में सुरक्षा बलों ने शनिवार को 1 एके 4 राइफल, 2 एके 47 राइफल, 11 मैगजीन, 65 एमएम 4 गोलियां और एके 47 की 56 गोलियां, साथ ही टोपी,

दवाइयां, प्राथमिक उपचार सामग्री और मोजे बरामद किए हैं। दवाओं पर पाकिस्तान और लाहौर का पता लिखा है। अधिकारियो के अनुसार मारे गए तीनों आतंकी जैश-ए-मोहम्मद के थे। इनमें टॉप कमांडर सैफुल्लाह भी शामिल था। वहीं, जम्मू-जिले के अखनूर में शनिवार को एक मुठभेड़ में 9 पंजाब रेजीमेंट के जेसीओ कुलदीप चंद शहीद हो गए थे। यहां शुक्रवार देर रात एनकाउंटर शुरू हुआ था। सेना ने एक्स पर पोस्ट कर इसकी जानकारी दी थी। इससे पहले 4 और 5 अप्रैल को जम्मू में पुरा सेक्टर परसीआरपीएफ के जवानों ने एक पाकिस्तानी घुसपैठिए को मार गिराया था।

आतिशी का आरोप दिल्ली सीएम के पति चला रहे सरकार

- पूछा-क्या रेखा काम नहीं संभाल सकतीं दिल्ली सीएम का पद

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री और एएपी नेता आतिशी ने मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता पर आरोप लगाया कि उनके पति सरकार चला रहे हैं। आतिशी ने एक्स पर फोटो शेयर कर लिखा- इन फोटो को ध्यान से देखिए। जो व्यक्ति एमसीडी और अन्य विभागों के अफसरों की मीटिंग ले रहे हैं, यह दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के पति मनीष गुप्ता हैं। आतिशी ने दिल्ली में हो रहें पावर कट और बढ़ती स्कूल

फीस को लेकर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा- क्या रेखा गुप्ता को काम संभालना नहीं आता। इसी वजह से दिल्ली में रोज लंबे-लंबे पावर कट हो रहे हैं। प्राइवेट स्कूलों की फीस बढ़ रही है। वहीं, इसके जवाब में दिल्ली बीजेपी अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने आतिशी पर अपमानजनक टिप्पणी करने का आरोप लगाया। सचदेवा ने कहा कि किसी भी पति का अपनी पत्नी को समर्थन करना सामान्य बात है। एक्स पर सचदेवा ने लिखा-मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प से इस पद तक पहुंची हैं और यह बिल्कुल सामान्य बात है कि परिवार के सदस्य समर्थन कर रहे हैं।

मुझे पापा पर गर्व है... कुलदीप के पार्थिव शरीर के आगे रोती रही बेटी

हर आंख हुई नम, लगते रहे कुलदीप चंद अमर रहे के नारे

हमीरपुर (एजेंसी)। रविवार को शहीद कुलदीप चंद का पार्थिव शरीर उनके पैतृक गांव कोहलवीं पहुंचा। हजारों लोगों ने नम आंखों से शहीद कुलदीप चंद को अंतिम विदाई दी है। जैसे ही कुलदीप चंद का पार्थिव शरीर उनके पैतृक गांव पहुंचा तो स्थानीय युवाओं द्वारा भारत माता की जय के नारे से कोहलवीं गांव गूंज उठा। राजकीय सम्मान के साथ कुलदीप चंद का अंतिम संस्कार किया गया। बेटे आर्यन ने नम आंखों से अपने पिता को मुखाग्नि दी। बता दें कि जम्मू के अखनूर सेक्टर में नियंत्रण रेखा पर आतंकियों ने घुसपैठ की कोशिश की थी, जिसमें भारतीय सेना के जेसीओ कुलदीप चंद शहीद हो गए। कुलदीप चंद की टीम ने तीन आतंकियों को भी एनकाउंटर में ढेर कर दिया। इस दौरान उन्होंने पाकिस्तानी आतंकियों को बॉर्डर पार करने नहीं दिया और अपना सर्वोच्च बलिदान के दे दिया। मां अपने आंसू रोक नहीं पाई।

- **दशाला का नाम शहीद कुलदीप चंद के नाम पर रखा जाए-** बड़सर के पूर्व विधायक बलदेव शर्मा ने बताया कि शहीद कुलदीप चंद ने देश के रक्षा करते हुए अपने प्राणों की आहुति दी है। उनके इस बलिदान को देश कभी भुला नहीं सकता है वहीं उन्होंने कहा कि वह प्रदेश और केंद्र सरकार से मांग करते हैं कि कुलदीप चंद के परिवार की हर संभव मदद की जाए, वहीं उन्होंने कहा कि स्थानीय पाठशाला का नाम शहीद कुलदीप चंद के नाम पर रखा जाए। वहीं पूर्व जिला कांग्रेस अध्यक्ष सुमन भारती ने भी कुलदीप चंद की शहादत पर दुख जताया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश की सरकार कुलदीप चंद के परिवार के साथ खड़ी है। उन्होंने प्रदेश की सरकार से मांग की है कि स्थानीय पाठशाला का नाम कुलदीप चंद के नाम से रखा जाए। जिसकी पर भी प्रदेश के मुख्यमंत्री से करेंगे।

आईएनएस विक्रांत+राफेल मरीन

हिंद महासागर में बन गया 'अजेय' कॉम्बिनेशन

पेरिस (एजेंसी)। हिंद महासार में भारत एक अजेय शक्ति बनने जा रहा है। जब बात समुद्री शक्ति की आती है, तो अब भारत का नाम दुनिया की शीर्ष नौसेनाओं में आता है। और इस बार भारतीय नौसेना के

लिए एक ऐसा सौदा किया गया है, जिसे हिंद महासागर का पूरा गेम बदल जाएगा। वो है राफेल मरीन फाइटर जेट्स की खरीद। भारत ने फ्रांस से 26 राफेल फाइटर जेट्स खरीदने का फैसला किया है और ये सिर्फ एक डिफेंस अपग्रेडेशन नहीं है, बल्कि रणनीतिक प्रभुत्व का ऐलान है। खासकर ऐसे वक्त में, जब भारत को एक साथ पश्चिम में पाकिस्तान और पूर्व में चीन से समुद्री चुनौती मिल रही हो। भारत के नौसेना इतिहास में इस सबसे महत्वपूर्ण समझौतों में से एक बन गया है। नई दिल्ली ने फ्रांस से 26 राफेल फाइटर जेट खरीदने के लिए 63 हजार करोड़ रुपये, यानि करीब 7.5 अरब डॉलर से ज्यादा के सरकारी सौदे को मंजूरी दी है। 26 राफेल फाइटर जेट खरीदने के बाद भारत उन दुर्लभ देशों के क्लब में शामिल हो जाएगा, जिसका विशाल समुद्री विस्तार में दुर्जेय कैरियर बैटल ग्रुप क्षमताओं को प्रदर्शित कर सकते हैं। इस सौदे में 22 सिंगल-सीटर राफेल मरीन फाइटर और चार ट्विन-सीटर वैरिएंट शामिल हैं। भारतीय नौसेना राफेल मरीन फाइटर जेट्स को कैरियर्स से ऑपरेट करने वाली है। इन लड़ाकू विमानों को भारत के दो एयरक्राफ्ट पर तैनात किया जाएगा।

एसडीएम ने महिलाओं को धमकाया - एफआईआर करा देंगे

खंडवा में महिला का जवाब- बदतमीजी मत करिए; जलसंकट पर प्रदर्शन के दौरान विवाद

खंडवा (नप्र)। खंडवा में जलसंकट को लेकर महिलाओं ने चक्काजाम कर दिया। विरोध-प्रदर्शन के दौरान मौके पर पहुंचे एसडीएम बजरंग बहादुर ने प्रदर्शन कर रही महिलाओं को कार्रवाई कर एफआईआर की धमकी दी। जिस पर महिलाओं ने कहा- आप इतने बड़े अधिकारी हैं, इस तरह की भाषा शोभा नहीं देती।

महिलाओं ने कहा कि वे गृहिणियां हैं और नियम-कायदे नहीं जानतीं, लेकिन जब हालात असहनीय हो गए तो सड़कों पर उतरने को मजबूर हुईं। प्रदर्शनकारियों ने आरोप लगाया कि एसडीएम ने न केवल धमकी दी, बल्कि बदसलूकी करते हुए अफसरशाही का रौब भी दिखाया।

दो हफ्तों से यहां पानी की किल्लत

बता दें कि शहर में नर्मदा पाइपलाइन के बार-बार फूटने से दो हफ्तों से लगातार पानी की किल्लत है। रविवार को लोगों का सब्र टूट गया। उन्होंने इंदिरा चौक पर प्रदर्शन किया। इस बीच महिलाओं और एसडीएम बजरंग बहादुर के बीच तीखी बहस हो गई। घटना का वीडियो भी सामने आया है।

एसडीएम बोले- चक्काजाम अपने आप में अपराध है

एसडीएम बजरंग बहादुर का कहना है कि पानी की समस्या को लेकर महिलाओं ने नगर निगम के तीन-चार कर्मचारियों से संपर्क कर उनसे शिकायत की थी। समस्या का समाधान ना होने पर उन्होंने चक्काजाम कर दिया। जबकि ऐसा करना गलत है, चक्काजाम अपने आप में अपराध है। उस क्षेत्र में पानी की बराबर सप्लाई ना होने के संबंध में हमने नगर निगम और विश्वा कंपनी के लोगों को वाल्व चेक करने के निर्देश दिए हैं।

संविधान संशोधन सुप्रीम कोर्ट करेगा तो सदन क्या करेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। केरल के राज्यपाल राजेंद्र आर्लेकर ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले को ज्यूडिशियल ओवररीच बताया है। ज्यूडिशियल ओवररीच का मतलब कोर्ट का सीमा पार कर कार्यपालिका और विधायिका में दखल होता है। उन्होंने आगे कहा, कोर्ट संविधान संशोधन करेगा, तो संसद और विधानसभा की क्या भूमिका रहेगी। केरल राज्यपाल ने कहा- संविधान में गवर्नर के लिए विधेयकों पर निर्णय लेने की समय सीमा नहीं है। कोर्ट द्वारा 3 महीने की सीमा तय करना संविधान संशोधन जैसा है। दो जज संविधान का स्वरूप नहीं बदल सकते। न्यायपालिका खुद मामलों को वर्षों लंबित रखती है, ऐसे में राज्यपाल के पास भी कारण हो सकते हैं। उन्होंने कहा, केरल राजभवन में कोई बिल लंबित नहीं है। कुछ बिल राष्ट्रपति को भेजे गए हैं। गौरतलब है कि केरल सरकार भी इस मामले में सुप्रीम कोर्ट गई है, जिस पर 13 मई को सुनवाई है। केरल सरकार ने सीजेआई संजीव खन्ना से अपना केस जस्टिस पारदीवाला और जस्टिस आर महादेवन की बेंच को भेजने का आग्रह किया है। अपनी तरह के पहले फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने देश के राष्ट्रपति के लिए भी समय सीमा तय की है।

वक्फ पर बवाल, घर छोड़कर भागे 500 से ज्यादा हिंदू

- वक्फ को लेकर वेस्ट बंगाल के मुर्शिदाबाद अब भी तनाव
- बीजेपी बोली-कट्टरपंथियों को शह दे रही है ममता सरकार

कोलकाता (एजेंसी)। वक्फ कानून को लेकर पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद के धुलियान में स्थिति अब भी तनावपूर्ण बनी हुई है। पश्चिम बंगाल के डीजीपी का कहना है कि स्थिति अब नियंत्रण में है। वहीं यहां रविवार सुबह भी फायरिंग की खबरें आई थीं। जानकारी के मुताबिक रविवार सुबह बीएसएफ की टीमों को निशाना बनाकर फायरिंग की गई थी। विधानसभा में विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी का दावा है कि धुलियान में कम से कम 500 हिंदुओं को अपना घर-बार छोड़कर पलायन करना पड़ गया है। बता दें कि इस हिंसा में कम से कम तीन लोगों की जान गई है। अधिकारी ने ममता बनर्जी सरकार को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा कि तुष्टीकरण की राजनीति कि वजह से

कट्टरपंथियों को छूट और बढ़ावा दिया जाता है। अधिकारी ने सोशल मीडिया पर लिखा, 500 से ज्यादा हिंदुओं को धुलियान छोड़ना पड़ गया है। कट्टरपंथियों

के डर के मारे उन्हें पार लालपुर हाई स्कूल, देवनाकुप-सोवापुर जीपी, बैसनाबनगर मालदा में शरण लेनी पड़ी है। इसके अलावा अधिकारी ने वीडियो और फोटो भी शेयर किए। बताया गया कि पार लालपुर हाई स्कूल में कम से कम 500 लोग पलायन करके पहुंचे हैं। वहीं मालदा के स्थानीय लोग उनकी मदद कर रहे हैं। बताया गया कि दो दिनों से लोग पलायन कर रहे हैं। वहां के लोगों ने बताया कि वे जान बचाकर भागे हैं। महिलाओं ने कहा कि पानी में भी जहर मिलाने की धमकी दी गई और इसलिए वे जान बचाकर भाग आए। अधिकारी द्वारा शेयर किए गए वीडियो में एक शख्स ने कहा कि उसके घर को जला दिया गया है और पुलिस अधिकारियों ने उसकी मदद के लिए कुछ नहीं किया। उसने कहा कि बीएसएफ, पुलिस और जिला प्रशासन को मिलकर उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए ताकि वे अपने घरों को लौट सकें।

यूक्रेन पर रूस का भीषण हमला, 20 लोगों की मौत

- सुमी शहर पर मिसाइल अटैक, मेयर की बाल-बाल बची जान

कीव (एजेंसी)। यूक्रेन के सुमी शहर के लिए 13 अप्रैल हमेशा के लिए दर्द और मातम की पहचान बन गया है। जब पूरा शहर पाम

संडे पर चर्चों में प्रार्थना और श्रद्धा में डूबा था, तभी रूस की तरफ से किए गये भीषण मिसाइल हमले ने शांति को झन्नाटेदार धमाकों से चीर दिया। मिनटों में एक खुशहाल इलाका मलबे का ढेर बन गया और 20 से ज्यादा नागरिकों की जान चली गई। सुमी शहर के कार्यवाहक मेयर आर्टेम कोबजार की इस भयानक हमले में बाल बाल जान बच गई है।

उन्होंने इस हमले की पुष्टि करते हुए इसे 'भयानक त्रासदी' करार दिया है। रिपोर्ट के मुताबिक रूस ने यूक्रेन के ऊपर ये भयानक हमला उस वक्त किया है, जब दोनों देशों के बीच ऊर्जा बुनियादी ढांचे पर हमलों को रोकने के लिए अमेरिका की तरफ से की जा रही मध्यस्थता के बीच शर्तों को लेकर गंभीर विवाद चल रहा है।

दावा किया गया है कि दोनों पक्षों ने एक-दूसरे पर इस समझौते का उल्लंघन करने का आरोप लगाया है। यूक्रेन के राष्ट्रपति वलोडिमिर जेलेंस्की के प्रमुख स्टाफ एंड्री यरमक ने इस हमले की निंदा की है और इसे नागरिकों के खिलाफ किया गया हमला करार दिया है। यूक्रेनी सुरक्षा अधिकारी एंड्री कोवालेंको ने इस हमले को अमेरिका के विशेष दूत स्टीव विटकॉफ की रूस यात्रा से जोड़ा है।

ऑनलाइन ठगी की 95 फीसदी रकम बैंकों ने नहीं लौटाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। साइबर स्पेस में ऑनलाइन ठगी का शिकार होने वालों को बैंकिंग सिस्टम भी छका रहा है। पिछले 3 साल में साइबर ठगी का शिकार होने से बची 87.88 करोड रु. की राशि में से सिर्फ 4 करोड़ 15 लाख रु. यानी महज 5 फीसदी ही उपभोक्ताओं को वापस मिल पाए हैं। बाकी रकम बैंकों में कोर्ट के आदेशों के इंतजार में ब्लॉक पड़ी है। डिजिटल पेमेंट पर एक संसदीय रिपोर्ट के अनुसार साइबर ठगी की कुल रकम में से कम से कम 10 फीसदी पकड़ ली जाती है लेकिन वह उपभोक्ता को वापस नहीं मिल पाती। आधिकारियों ने कहा कि डिजिटल फ्रॉड की रकम कोर्ट के आदेश से ही वापस की जा सकती है। एक समस्या यह भी है कि साइबर फ्रॉड और वैध पेमेंट के बीच फर्क करना मुश्किल पड़ता है क्योंकि फ्रॉड करने वाले असली और फ्रॉड ट्रांजेक्शन मिलाकर करते हैं। दूसरा, बैंक और वित्तीय संस्थाएं ब्लॉक की हुई रकम से फ्रीज हटाने में आनाकानी करती हैं। संसदीय समिति की रिपोर्ट के अनुसार, 2021 में 547 करोड़ रु. की साइबर ठगी में से 3 करोड़ 64 लाख रु. की रकम बैंकों ने ब्लॉक कर दी है।

नेशनल हेराल्ड केस में ईडी जब्त करेगी 661 करोड़ की संपत्तियां

- दिल्ली, मुंबई और लखनऊ की 3 प्रॉपर्टीज पर नोटिस चिपकाए, कहा-तुरंत खाली करें

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रवर्तन निदेशालय कांग्रेस के नेशनल हेराल्ड अखबार और एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड (एजेएल) से जुड़ी मनी लॉन्ड्रिंग केस की जांच के दौरान कुर्क संपत्तियों को जब्त करेगी। ईडी ने शनिवार को एक बयान में कहा कि उसने 661 करोड़ रुपए की अचल संपत्तियों को कब्जे में लेने के लिए नोटिस जारी किया है। ईडी ने पीएमएलए एक्ट की धारा 8 और एसोसिएटेड नियमों के नियम 5(1) के अनुसार संबंधित संपत्ति रजिस्ट्रार को दस्तावेज सौंपे हैं, जहां ये संपत्तियां हैं। ईडी ने कब्जे में लिए जाने वाले परिसर को खाली करने की मांग की है। 661 करोड़ की इन अचल संपत्तियों के अलावा एजेएल के 90.2 करोड़ रुपए के शेयरों को ईडी ने नवंबर 2023 में अपराध की आय को सुरक्षित करने और आरोपी को इसे नष्ट करने से रोकने के लिए कुर्क किया था। शुक्रवार को दिल्ली के हेराल्ड हाउस (5ए, बहादुर शाह जफर मार्ग), मुंबई के बांद्रा (ईस्ट) और लखनऊ के बिशेश्वर नाथ रोड स्थित एजेएल की बिल्डिंग पर नोटिस चिपकाए गए हैं। ईडी ने मुंबई के बांद्रा में हेराल्ड हाउस की 7वीं, 8वीं और 9वीं मंजिल पर स्थित जिंदल साउथ वेस्ट प्रोजेक्ट्स लिमिटेड को भी नोटिस दिया गया है, कि वह हर महीने किराया/लीज राशि प्रवर्तन निदेशालय के निदेशक के पक्ष में ट्रांसफर करे।

नर्मदापुरम-पिपरिया हाईवे पर ट्रक से टक्कर के बाद डंपर जला

हादसे के बाद थमा ट्रैफिक, एक घंटे में आग पर पाया गया काबू

नर्मदापुरम (नप्र)। नर्मदापुरम-पिपरिया स्टेट हाईवे पर जासलपुर के पास रविवार को एक ट्रक और डंपर की जोरदार भिड़ंत हो गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि डंपर पलटकर सड़क किनारे खेत में जा गिरा और कुछ ही देर में उसमें आग लग गई। आग की ऊंची लपटें उठने लगीं और तेजी से पूरा डंपर जलने लगा। हादसे में ट्रक भी चपेट में आ गया और उसमें भी आग लग गई। घटना की जानकारी मिलते ही राहगीरों ने तत्काल पुलिस और फायर ब्रिगेड को सूचना दी। नर्मदापुरम से दमकल

की दो गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और आग बुझाने का काम शुरू किया। आग की लपटें इतनी तेज थीं कि उसकी आंच 25 से 30 फीट दूर तक महसूस की जा रही थी। एहतियातन हाईवे पर वाहनों की आवाजाही को कुछ समय के लिए रोक दिया गया। करीब एक घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया जा सका। हादसे में टायर और केबिन पूरी तरह जलकर खाक हो गए। राहत की बात यह रही कि इस दुर्घटना में कोई जनहानि नहीं हुई। देहात थाना पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू कर दी है।

हाईवे पर बस पलटी

20 से अधिक यात्री सवार थे

बुरहानपुर (म.प्र.) (नप्र)। बुरहानपुर से खंडवा जा रही एक निजी बस रविवार दोपहर करीब 2 बजे इंदौर-इच्छापुर हाईवे पर पलट गई। हादसा ग्राम झिरी के पास हुआ। बस में 20 से अधिक यात्री सवार थे। बस संख्या एमपी 12 पी-0901 दोपहर 1:10 बजे बुरहानपुर से खंडवा के लिए निकली थी। झिरी पहुंचने पर सामने से आ रही एक कार को बचाने के प्रयास में बस अनियंत्रित हो गई। हादसे में 5-6 यात्रियों को मामली चोटें

आईं। चोटें हल्की होने के कारण यात्री अपने-अपने साधनों से आगे चले गए।

सामने से आ रही कार को बचाने की कोशिश में हुई बेकाबू- बस कंडक्टर ने बताया कि सामने से आ रही कार को बचाने की कोशिश में यह दुर्घटना हुई। उसने बस में 10 ही यात्री सवार होने की बात कही। प्रत्यक्षदर्शी प्रकाश महाजन के अनुसार, स्थानीय लोगों और कंडक्टर की मदद से यात्रियों को बस का अगला शीशा तोड़कर बाहर निकाला गया। वर्तमान में इंदौर-इच्छापुर हाईवे को फोरलेन में अपग्रेड किया जा रहा है। झिरी के पास सड़क अभी कच्ची है, जहां झिरी वन चौकी के निकट यह हादसा हुआ। किसी यात्री द्वारा शिकायत दर्ज न करने के कारण पुलिस में मामला दर्ज नहीं हुआ।

दिग्विजय बोले-कितने बीजेपी-बजरंग दल वाले जासूसी करते पकड़े गए

एक्स पर नाम पोस्ट कर पूछा- गद्दार कौन; वीडी ने कहा- देश अच्छे से जानता है

भोपाल (नप्र)। दो दिन पहले भोपाल, रतलाम और गुना समेत एमपी के अलग-अलग जिलों में पूर्व सीएम और कांग्रेस से राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह के खिलाफ पोस्टर लगाए गए थे। रतलाम और गुना में लगाए गए इन पोस्टर्स पर लिखा था- वक्फ बिल का विरोध करने वाले धर्म और वतन के गद्दार दिग्विजय सिंह।

इन पोस्टर्स को लेकर शनिवार को पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह से जब सवाल किया गया तो उन्होंने कहा था- गद्दारों को पहचानो। इस पर बीजेपी प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा ने कहा- गद्दार कौन है, देश इस बात को जानता है।

रविवार को दिग्विजय सिंह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट करते हुए कुछ लोगों के नाम लिखे जिन्हें उन्हें आईएसआई के लिए जासूसी करने वाला बताया और कहा कि ये लोग बीजेपी-बजरंग दल के लोग हैं। ऐसे लोगों को क्या कहा जाए।

जासूसी के आरोपियों के नाम लिखकर सवाल उठाए- पोस्टर वार के बाद रविवार को दिग्विजय सिंह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर जासूसी के कुछ लोगों के नाम पोस्ट किए। इन्हें बीजेपी

और बजरंग दल का कार्यकर्ता बताते हुए दिग्विजय ने बीजेपी-आरएसएस पर सवाल उठाए। उन्होंने लिखा- आईएसआई एजेंट के रूप में काम करने वाले भाजपा कार्यकर्ताओं के नाम बलराम सिंह (सतना) बजरंग दल प्रमुख, मनीष गांधी (भोपाल), त्रिलोक सिंह (भोपाल), ध्रुव सक्सेना आईटी सेल भाजपा भोपाल, मोहित अग्रवाल (भोपाल), मोहन भारती (जबलपुर), संदीप गुप्ता (जबलपुर), कुश पंडित (देहरादून), जितेंद्र ठाकुर (ग्वालियर भाजपा पार्षद वंदना ठाकुर के पति का भाई), रितेश खुल्लर, रज्जन तिवारी जिन्होंने बलराम सिंह को दीक्षा दी। दिग्विजय सिंह ने बीजेपी, युवा मोर्चा, आरएसएस को टैग करते हुए पूछा- अंत में आप क्या कहेंगे, गद्दार? जय सिया राम।

वीडी बोले- दिग्विजय सिंह को देश गहराई से जानता है- दिग्विजय सिंह की पोस्ट को लेकर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीडी शर्मा ने कहा कि गद्दार कौन है, देश इस बात को जानता है। दिग्विजय सिंह को भी देश गहराई से जानता है। आप देश विरोधी काम करने वालों के साथ रहते हैं।

मंत्री सारंग बोले-

वे खुद को सुर्खियों में रखना चाहते हैं

पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह के एक्स पोस्ट पर मंत्री विश्वास सारंग ने कहा- दिग्विजय सिंह हर समय सेंसेशनल बयान देकर खुद को सुर्खियों में रखना चाहते हैं। जिसने हर समय सनातन का अपमान किया, भगवा आतंकवाद जैसे शब्दों से पूरे सनातन को बदनाम किया।

दिग्विजय ने देश को तोड़ने वाले बयान दिए

अफजल को गुरु और हाफिज सईद को जी लगाकर सम्मान देना, जाकिर नाइक से गले लगाना। एयर और सर्जिकल स्ट्राइक पर प्रश्न चिन्ह लगाकर सेना का अपमान करना। दिग्विजय सिंह ने हर समय देश को तोड़ने वाले बयान दिए। बिना किसी तथ्य के भाजपा को बदनाम करने की कोशिश करेंगे तो यह नहीं चलेगा।

देवास के टेकरी मंदिर में पुजारी से मारपीट का मामला

कार्रवाई की मांग, दिग्विजय सिंह ने की घटना की निंदा

सीहोर (नप्र)। देवास के मां चामुंडा टेकरी मंदिर में हुई मारपीट का मामला अब तूल पकड़ रहा है। शुक्रवार की आधी रात को इंदौर के भाजपा विधायक का बेटा अपने समर्थकों के साथ कारों के काफिले में मंदिर पहुंचा। आरोपियों ने रात करीब 1 बजे जबरदस्ती मंदिर खुलवाया और पुजारी के बेटे से मारपीट की।

इस घटना को लेकर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने कड़ी प्रतिक्रिया दी है। भोपाल-इंदौर हाईवे पर सीहोर में कांग्रेस नेताओं से मुलाकात के दौरान उन्होंने इस घटना की निंदा की।

पुलिस को मामले में सख्त कार्रवाई करनी चाहिए- दिग्विजय सिंह ने कहा कि मंदिर के पुजारी ने एफआईआर दर्ज कराई है। पुलिस को इस मामले में आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करनी चाहिए। कांग्रेस ने इस मामले को प्रमुखता से उठाया है और न्याय की मांग कर रही है।

दूसरे दिन भी क्लिनिक की जांच

कार्रवाई के डर से कई पर ताले लगे; एक दिन पहले 4 क्लिनिक हो चुके बंद

भोपाल (नप्र)। भोपाल के क्लिनिक की लगातार दूसरे दिन जांच की गई। कार्रवाई के डर से कई क्लिनिक पर तो डाले लग गए। 4 क्लिनिक को स्वास्थ्य विभाग की टीम ने बंद कर दिया। इससे पहले इन्हें नोटिस थमाए गए थे।

जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ. रितेश रावत, सब डिविजनल मेडिकल ऑफिसर डॉ. अश्विन भंबल एवं डॉ. अभिषेक सेन टीम के साथ अशोका गार्डन स्थित गुप्ता क्लिनिक एवं प्लेटिनम प्लाजा स्थित शुद्धि क्लीनिक पर जांच के लिए पहुंचे। हालांकि, कार्रवाई के डर से संचालकों ने क्लिनिक बंद रखें। स्थानीय लोगों से मिली जानकारी के अनुसार शुद्धि क्लिनिक के कहीं अन्य स्थान पर संचालित होने की भी जांच की जा रही है। जांच दलों को ऐसी ही स्थित कई अन्य स्थानों पर भी मिली। सीएमएचओ डॉ. प्रभाकर तिवारी ने बताया, स्वास्थ्य विभाग की कार्रवाई जारी रहेगी। बिना अनुमति चल रहे चिकित्सा संस्थानों पर विधि सम्मत कार्रवाई की जा रही है। रजिस्टर्ड चिकित्सा व्यवसायी, पैथी के उल्लंघन आदि मानकों को भी देखा जा रहा है।

टीम यह देख रही

सीएमएचओ डॉ. तिवारी ने बताया, स्वास्थ्य विभाग की टीम ने जिले में अलग-अलग स्थानों पर चिकित्सा व्यवसाय कर रहे व्यक्तियों की डिग्री, चिकित्सा पद्धति, काउंसिल का पंजीयन, मप्र उपचार्य गृह एवं रूजोपचार संबंधी स्थापना अधिनियम, जैव चिकित्सा अपशिष्ट प्रबंधन अधिनियम, गुमास्ता लाइसेंस की जांच की। कार्रवाई के डर से कई संचालकों ने अपने क्लीनिक्स बंद रखें। इन क्लीनिक्स पर विभाग की टीम नजर रख रही है। स्थानीय पुलिस, नगर निगम एवं प्रशासन का सहयोग भी लिया जा रहा है।

प्रदेश में आज 24 जिलों में आंधी-बारिश का अलर्ट

- **खरगोन में ओले, सतना-शिवपुरी में तेज पानी गिरा, एमपी में 16 अप्रैल से लू का अलर्ट**

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में रविवार को प्रदेश के 24 जिलों में आंधी-बारिश हुई। खरगोन के महेश्वर में रविवार को दोपहर आधे घंटे तेज बारिश और ओले गिरे। सतना में सुबह 4 बजे करीब दो घंटे तेज आंधी के साथ बारिश हुई। इससे पहले शिवपुरी और भिंड में शनिवार देर रात पानी गिरा। शिवपुरी में आकाशीय बिजली गिरने से एक महिला और 11 भैंसों की मौत हो गई। एक मकान पर पेड़ भी गिर गया। मौसम विभाग भोपाल की सीनियर वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया, तीन सिस्टम एक्टिव होने से हल्की बारिश और आंधी का दौर रहेगा। वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ), साइक्लोनिक सकुर्लेशन और ट्रफ की सक्रियता घटने के बाद तेज गर्मी का असर शुरू होगा। 15 अप्रैल को मौसम साफ होने का अनुमान है। 16 अप्रैल से लू चलने लगेगी।

आज इन जिलों में आंधी-बारिश का अनुमान- प्रदेश के 24 जिलों में मौसम बदला रहेगा। ग्वालियर, भिंड, मुरैना, दतिया, श्योपुर, शिवपुरी, सागर, छतरपुर, दमोह, पन्ना, कटनी, जबलपुर, सतना, मैहर, उमरिया, मंडला, डिंडौरी, बालाघाट, अनूपपुर, शहडोल, रीवा, मऊगंज, सीधी और सिंगरौली में गरज-चमक, आंधी और बारिश का दौर रह सकता है।

खरगोन जिले के महेश्वर में दोपहर 3:10

खरगोन

बजे गरज-चमक के साथ करीब आधे घंटे तक तेज बारिश हुई। इसके अलावा, सोमाखेड़ी समेत कुछ गांवों में ओले भी गिरे। शिवपुरी जिले के ग्राम टोडा पिछोर में शनिवार देर रात खेत में सो रही 55 वर्षीय महिला की आकाशीय बिजली गिरने से मौत हो गई। मृतक की पहचान कुसुमा लोधी के रूप में हुई है।

इंदौर-धार समेत कई जिलों में बारिश- तीन सिस्टम के एक्टिव होने की वजह से शनिवार को प्रदेश के कई शहरों में बारिश का दौर जारी रहा। सुबह इंदौर में हल्की बारिश हुई। वहीं, धार के बदनावर समेत आसपास के गांवों में 15 से 20 मिनट तक तेज पानी गिरा। सिंगरौली में शनिवार दोपहर में कई इलाकों में बारिश हुई। सरई, देवसर, चितरंगी और बैढ़न में कहीं तेज तो कहीं हल्की बूंदाबांदी दर्ज की गई। भोपाल में सुबह तक बादल छाए रहे, लेकिन दिन में तेज धूप खिल गई। हरदा, रायसेन, नर्मदापुरम के पचमढ़ी, छिंदवाड़ा, पांढुर्ना, विदिशा, सागर, डिंडौरी, सीधी, मंडला, बालाघाट, सिंगरौली, देवास, सीहोर जिलों में आकाशीय बिजली चमकने, तेज आंधी चलने के साथ हल्की बारिश हुई। नर्मदापुरम, बैतूल, बुरहानपुर, अनूपपुर और सिवनी में भी मौसम बदला रहा।

मौसम बदलने से गिरा तापमान- एमपी के कई शहरों मे दिन के तापमान में गिरावट हुई है। बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल में 37.8 डिग्री, इंदौर में 36.8 डिग्री, ग्वालियर में 36.7 डिग्री, उज्जैन में 38 डिग्री और जबलपुर में पारा 37.6 डिग्री सेल्सियस रहा।

खंडवा सबसे गर्म रहा। यहां अधिकतम तापमान 41.5 डिग्री दर्ज किया गया।

बिट्टन मार्केट में राष्ट्रीय स्वदेशी महोत्सव

गुजरात, उत्तरप्रदेश समेत कई राज्यों के 200 से ज्यादा स्वदेशी वस्तुओं के स्टॉल लगे

भोपाल (नप्र)। भोपाल के बिट्टन मार्केट में राष्ट्रीय स्वदेशी महोत्सव चल रहा है। इस मेले में गुजरात, उत्तर प्रदेश सहित कई राज्यों तथा भारत सरकार की एमएसएमई इकाइयों की 200 से अधिक स्वदेशी उत्पादों की स्टॉल लगाई गई हैं। महोत्सव का उद्देश्य 'आत्मनिर्भर भारत' और 'वोकल फॉर लोकल' को बढ़ावा देना है। यह मेला 7 अप्रैल से शुरू हुआ था और 13 अप्रैल तक चलेगा। हर दिन बड़ी संख्या में भोपालवासी मेले में पहुंचकर जमकर खरीदारी कर रहे हैं।

गुजरात के 44 से ज्यादा स्टॉल लगे- इस मेले में गुजरात के अहमदाबाद से 44 ज्यादा स्टॉल लगे हैं। जिसमें हैंडमेड डिजाइन साड़ी, कुर्ते, जूते और खाने पीने की वस्तुएं भी लगाई गई हैं। साथ ही कोयंबटूर सिल्क, कॉटन सिल्क और तमिलनाडु की कांची साड़ी स्टॉल भी लगे हैं। साथ ही कोयम्बटूर कॉटन सिल्क, मिट्टी के बर्तन जैसे कई स्टॉल लगे है।

मिट्टी के बर्तन आकर्षण का केंद्र-वहीं, मेले के बारे में रीवा से आई शर्मिला ने बताया कि वह भोपाल घूमने आई थीं, तभी उन्हें इस मेले के बारे में पता चला। उन्हें मेले में सबसे ज़्यादा मिट्टी के बर्तन और हैंडमेड सजावटी सामान पसंद आया। इस दौरान, हैंडमेड पेंटिंग का स्टॉल लगाने वाली भारवी ने बताया कि उन्होंने मधुबनी, गोंड और पिचमड़ी जैसी कई पेंटिंग्स स्वयं बनाकर स्टॉल में प्रदर्शित की हैं, जिन्हें लोग काफ़ी पसंद कर रहे हैं। इसके अलावा, मेले में पीतल के बर्तन, आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियां और कई खाने-पीने के स्टॉल भी लगे हैं, जिन्हें दर्शक खूब सराह रहे हैं।

डॉक्टर को एम्बुलेंस में बंधक बनाया

नर्मदापुरम में घायल के इलाज को लेकर परिजन का हंगामा; बीएमओ बोले- लग रहा था भीड़ मार डालेगी

नर्मदापुरम (नप्र)। नर्मदापुरम के बनखेड़ी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में शनिवार रात करीब 9 बजे एक्सीडेंट में घायल लोगों के परिजन ने जमकर हंगामा किया। बीएमओ डॉ. जेएस परिहार की कॉलर पकड़कर धक्का-मुक्की की। महिला स्टाफ से गाली-गलौज कर जान से मारने की धमकियां दी। ये हंगामा लगभग आधे घंटे तक चला।

घटना के कुछ वीडियो भी सामने आए हैं। इनमें परिजन सांसद दर्शन सिंह चौधरी का नाम लेकर धमकी देते और मेडिकल स्टाफ से बदसलूकी करते दिख रहे हैं। इतना ही नहीं वो डॉ. धर्मेंद्र मांझी को एम्बुलेंस में बंधक बनाकर जिला अस्पताल ले जा रहे थे।

बनखेड़ी थाना प्रभारी की सूचना पर सोहागपुर में पुलिस ने डॉक्टर को उतारा, फिर घायलों को जिला अस्पताल के लिए रवाना किया। नर्मदापुरम पहुंचने से पहले ही एक घायल की मौत हो गई।

लामटा के पास हादसे में घायल हुए थे 3 लोग- दरअसल, लामटा के पास दो बाइक की टक्कर में तीन लोग घायल हुए थे। इनमें से एक व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई, जिसकी शिनाख्त नहीं हो पाई। घायल चंद्रभान

साहू (32) और लक्ष्मीचंद साहू (41) निवासी चांदोन को बनखेड़ी अस्पताल लाया गया। लक्ष्मीचंद ने रास्ते में दम तोड़ दिया। चांदोन सांसद दर्शन सिंह चौधरी का गांव है। इससे गुस्साए परिजन ने हंगामा शुरू कर दिया। स्टाफ से बदसलूकी और गाली-गलौज करने लगे।

बीएमओ बोले- परिजन कुछ सुनने को तैयार नहीं थे- बीएमओ डॉ. जेएस परिहार ने कहा कि जानकारी मिलने के बाद मैं खुद अस्पताल पहुंचा। मृतक का शव उतरवाया और घायल को उतरवाने में मदद की। लेकिन परिजन इतने उत्तेजित थे कि किसी की बात सुनने को तैयार नहीं हो रहे रहे थे।

ड्यूटी डॉक्टर को धक्का देकर गाड़ी में जबरन बैठाया- डॉ. परिहार के मुताबिक, मौके पर पुलिस भी थी, पर भीड़ इतनी थी कि पुलिसकर्मी भी कुछ नहीं कर पा रहे थे। सभी के सामने हमारे ड्यूटी डॉक्टर को धक्का देकर गाड़ी में जबरन बैठाया और ले गए। इस घटनाक्रम से स्टाफ डरा हुआ है। माहौल देखकर लग रहा था कि भीड़ किसी को मार ही डालेगी।

सोहागपुर पुलिस की मदद से डॉक्टर को छुड़ाया गया- बनखेड़ी टीआई सुधाकर बारस्कर ने सोहागपुर पुलिस को सूचित किया। इसके फौरन बाद एक्टिव हुई सोहागपुर पुलिस ने नाकाबंदी कर डॉ. मांझी को छुड़वाया। थाना प्रभारी का कहना है कि अभी तक मामले में कोई औपचारिक शिकायत दर्ज नहीं हुई है।

सांसद बोले- ऐसे मामले में परिजन आक्रोशित हो जाते हैं- सांसद दर्शन सिंह चौधरी ने इस बारे में कहा कि एक्सीडेंट में दो लोग घायल थे। एक का निधन हो गया है। डॉक्टर को गाड़ी में बैठकर ले जाने वाली बात की मुझे जानकारी नहीं है।

तहसीलदार और थाना प्रभारी को ज्ञापन सौंपा- अस्पताल में हुए घटनाक्रम को लेकर बनखेड़ी सरकारी अस्पताल का स्टाफ आक्रोशित है। बीएमओ डॉ. परिहार के नेतृत्व में कर्मचारियों ने रविवार को तहसीलदार अलका एक्का और बनखेड़ी थाना प्रभारी सुधारकर बारस्कर को ज्ञापन सौंपकर कार्रवाई की मांग की।

संपादकीय

तमिलनाडु- बीजेपी का नया दांव

राजनीति में कोई स्थायी दोस्त होता है और न ही कोई स्थायी दुश्मन। तमिलनाडु में देश पर सत्तासीन भाजपा ने एक बार फिर अन्नाद्रमुक से हाथ मिला लिया है। पिछले कुछ समय से दोनो एक दूसरे को गरिया रहे थे। लेकिन चूंकि राज्य में अगले साल विधानसभा चुनाव हैं और न तो अन्नाद्रमुक के साथ कोई बड़ी पार्टी है और न ही भाजपा के पास कोई बड़ा सियासी सपोर्ट है। ऐसे में दोनों के पास साथ आने के अलावा कोई चारा नहीं था। अन्नाद्रमुक के भाजपा के साथ आने से तात्कालिक लाभ यह हो गया है कि राज्यसभा में एनडीए का स्पष्ट बहुमत हो गया है। राज्यसभा में एनडीए का आंकड़ा 122 पर पहुंच गया है। उल्लेखनीय है कि राज्यसभा की संख्या 245 है और अभी 9 सीटें खाली हैं। इस तरह मौजूदा संख्या 236 और बहुमत का आंकड़ा 119 है। अन्नाद्रमुक के साथ ताजा गठबंधन की घोषणा के दौरान अमित शाह के दाईं ओर अन्नाद्रमुक महासचिव एडप्पादी पलानीस्वामी और बाईं ओर तमिलनाडु बीजेपी अध्यक्ष के. अन्नामलाई खड़े थे। गौरतलब है कि 2024 के लोकसभा चुनाव में पलानीस्वामी और अन्नामलाई एक-दूसरे पर तीखे हमले बोल रहे थे। अन्नामलाई ने अन्नाद्रमुक की दिवंगत नेता और पूर्व मुख्यमंत्री जे. जयललिता को भ्रष्टाचार सहित कई नकारात्मक विशेषणों से नवाजा था। अब वही जयललिता को प्रधानमंत्री मोदी 'महान नेता' बता रहे हैं, जिन्हें सुप्रीम कोर्ट ने मरणोपरांत आय से अधिक संपत्ति के मामले में लंबी सजा सुनाई थी और भारी जुर्माना सुनाया था। तमिलनाडु की राजनीति बाकी देश से अलग चलती है। वहां डीएमके सरकार लंबे समय बाद सत्ता में आई थी और अन्नाद्रमुक अभी भी नेतृत्व के संकट से जूझ रही है। लेकिन लगता है कि अब बीजेपी ने ई. पलानीसामी के नेतृत्व को मंजूरी दे दी है। दोनो के गठबंधन के अवसर पर आयोजित पत्रकार वार्ता में केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि हमारा गठबंधन भ्रष्टाचारी डीएमके शासन को चुनाव में हराकर जीतेगा। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि भाजपा अन्नाद्रमुक की आंतरिक राजनीति में कोई दखल नहीं देगी। हालांकि उसने इस प्रेस कांफ्रेंस के पहले ई पलानीसामी के इशारे पर भाजपा प्रदेशाध्यक्ष पद से अन्नामलाई को हटा दिया है। उनकी जगह अन्नामलाई के खास और पलानीसामी के अनुकूल नागेन्द्र नयनार को अध्यक्ष बना दिया है। खास बात यह है कि अन्नाद्रमुक के साथ समझौते के चलते बीजेपी ने सनातन जैसे मुद्दों को फिलहाल कालीन के नीचे खिसका दिया है। ई पलानीसामी के नेतृत्व में एनडीए चुनावी जीत पाएगा, कहना मुश्किल है, लेकिन इसने राज्य के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन की मुश्किलें बढ़ा दी है। स्टालिन सनातन, हिंदी, केन्द्र से सहयोग जैसे मुद्दों पर और कड़ा स्टैंड ले सकते हैं। वैसे स्टालिन का पांच साल का कार्यकाल बहुत उल्लेखनीय नहीं रहा है। भाजपा मानती है कि स्टालिन सरकार के खिलाफ जबर्दस्त एंटी इनकम्बेंसी है। जिसका लाभ एनडीए को मिलेगा। हालांकि राज्य में अन्नाद्रमुक के वोट बैंक में करीब 7 फीसदी की कमी आई है, जिसे भरना आसान नहीं है। इस बीच बीजेपी और संघ ने तमिलनाडु में अपना जनाधार बढ़ाने की व्यापक कोशिशें की हैं। यही कारण है कि पिछले विस चुनाव में उसे पहली बार 4 सीटें और करीब ढाई प्रतिशत वोट मिले थे। वैसे तमिलनाडु में एनडीए और इंडिया गठबंधन में सीधी मुठभेड़ होगी। अगर राज्य में मोदी और अन्नाद्रमुक का एनडीए गठबंधन चुनाव जीत जाता है तो यह न केवल डीएमके बल्कि द्रविड राजनीति के लिए भी तगड़ा झटका होगा। यही नतीजे आएंगे, तो यह भी स्पष्ट हो जाएगा कि तमिलनाडु में अब हिंदी विरोध, द्रविडवाद, अलगाववाद के दिन लद चुके। भाजपा का समावेशी राष्ट्रवाद वहां भी जमीन पकड़ चुका है। लेकिन वहां इंडिया गठबंधन जीता तो संदेश जाएगा कि तमिलनाडु की जमीन अभी भी भगवा राजनीति के लिए तैयार नहीं है।

भ्रांति नहीं, सामाजिक क्रांति की जरूरत

बाबा साहब निसंदेह सूट-बूट और टाई पहनते थे, परंतु जीवन के आखिरी दौर में जब वह बौद्ध बने और जब उन्होंने दीक्षा ग्रहण की तब वे सूट-बूट में नहीं थे, बल्कि परंपरागत बौद्ध वेशभूषा में थे। इस घटना का हमारे दलित बुद्धिजीवी किस दृष्टिकोण से विश्लेषण करेंगे मैं नहीं जानता, परंतु हमें एक बात नहीं भूलनी चाहिए कि भाषा और भूषा भी एक प्रकार की गुलामी या मानसिक दास्तां की प्रतीक हो सकती है।

नजरिया
रघु ठाकुर
लेखक समाजवादी विचारक हैं।

हमारे देश के कुछ दलित बुद्धिजीवियों व स्वघोषित आंबेडकरवादियों ने अमेरिकी तर्ज पर भारत में डायवर्सिटी के सिद्धांत को अपना आदर्श लक्ष्य घोषित किया है तथा वे इसे क्रांतिकारी सिद्धांत बताने का प्रयास करते रहे हैं। दरअसल अमेरिका में 1960 के दशक में जब रंग भेद और नस्लभेद के विरुद्ध काले-नीग्रो लोगों का आंदोलन बहुत तीव्र हुआ था तथा जब आंदोलन और हिंसा अमेरिका के शहरों में भी फैली थी तब तत्कालीन राष्ट्रपति जॉनसन ने एक आयोग का गठन किया था। इस आयोग की सिफारिशों के आधार पर यह विविधता का कानून बनाया गया था और इस कानून के माध्यम से सभी क्षेत्रों में काले नीग्रो को भी समाहित किया गया था यह एक प्रकार से भारत के आरक्षण की पद्धति जैसा ही था जिसे बाद में अमेरिकी समाज में एफरमेटिव एक्शन या सकारात्मक कदम के रूप में जाना गया।

हमारे देश के जो कुछ दलित बुद्धिजीवी अमेरिकी परस्त हैं वे अमेरिका के इन कदमों को बहुत क्रांतिकारी कदम मानते हैं और दूसरी तरफ उनके मन मस्तिष्क में कहीं भारत के अतीत या इतिहास के प्रति गहरी नफरत घर कर गई कि अतीत में भारत में उठाये गये इनसे बेहतर कदमों को वे उद्धत करना भी उचित नहीं मानते। महात्मा ज्योतिबा फुले ने जातिवादी भेदभाव एवं अंधविश्वास के विरुद्ध सामाजिक आंदोलन चलाया था। स्वामी विवेकानंद ने जातिवाद पर जबरदस्त हमला किया था तथा 20वीं सदी के शूद्रों की सदी निरूपित किया था। डॉ. राममनोहर लोहिया ने पिछड़े पावे सौ में साठ का नारा दिया था। परंतु हमारे वे दलित बुद्धिजीवी, फुले, विवेकानंद, डॉ. लोहिया की चर्चा नहीं करते। वे बुद्ध की चर्चा कभी कभी कभार ही करते हैं और वह भी लाचारी में क्योंकि आंबेडकर जी जीवन के अंतिम दिनों में बौद्ध हो गये थे।

ये बुद्धिजीवी पेरियार की चर्चा भी नहीं करते हैं, जिन्होंने ब्राह्मणवाद के खिलाफएक सांस्कृतिक आंदोलन खड़ा किया था। बाबा साहब की चर्चा भी वे शायद सामाजिक लाचारी से करते हैं। ये दलित बुद्धिजीवी सूट-बूट को क्रांति का प्रतीक मानते हैं तथा यह उद्धत करते हैं गांधी की लंगोटी अतीतजीवी थी। इसकी खिलाफत में बाबा साहब ने सूट-बूट और टाई पहनी, जिसे गांधी ने त्याग दिया था। इन मित्रों की इस स्थापना का कोई तार्किक आधार नहीं है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि भारत का पिछ्ले हजार डेढ़ हजार वर्ष का इतिहास जाति प्रथा की विकृतियों व जुल्मों से भरा पड़ा है। भारत की इस जाति प्रथा ने देश की बहुसंख्यक आबादी को जन्मना छोटा बना दिया। उसे शूद्र कहकर उत्पादन या सेवा के कार्य तक सीमित कर दिया तथा उत्पादन के लाभ के मालिक स्वयं बन बैठे। मनु स्मृति में शूद्र के जीवन का उददेश्य केवल सवर्ण की सेवा करना ही बताया गया है। हाथ से काम करने वालों तथा सेवा कार्य वाली बड़ी आबादी को गुलामों से भी बदतर बना दिया गया। अतीत के इन अन्यायों के प्रति गुस्सा होना भी चाहिए परंतु भारत में हुए उन प्रयोगों की चर्चा भी ईमानदारी से करनी चाहिए, जिनमें न केवल जाति प्रथा के विरुद्ध अभियान चलाया गया था वरन जिन्होंने तथा कथित ऊँची जातियों के अपने ही लोगों के अन्याय व दमन को भी सहा था। जाति प्रथा पर चोट जिस प्रकार कबीर ने की थी वह कोई मामूली हमला नहीं था। संत रविदास ने जाति के विरुद्ध जो दार्शनिक प्रश्न खड़े किये थे, उसका कोई उत्तर सवर्ण समाज नहीं दे सका था। वह भी कोई मामूली घटना नहीं थी।

बाबा साहब निसंदेह सूट-बूट और टाई पहनते थे, परंतु जीवन के आखिरी दौर में जब वह बौद्ध बने और जब उन्होंने दीक्षा ग्रहण की तब वे सूट-बूट में नहीं थे,बल्कि परंपरागत बौद्ध वेशभूषा में थे। इस घटना का हमारे दलित बुद्धिजीवी किस दृष्टिकोण से विश्लेषण करेंगे मैं नहीं जानता, परंतु हमें एक बात नहीं भूलनी चाहिए कि भाषा और भूषा भी एक प्रकार की गुलामी या मानसिक दास्तां की प्रतीक हो सकती है। अंग्रेजी काल में अंग्रेजी साम्राज्यवाद की भाषा थी और आज भी है। अंग्रेजी उस ब्रिटिश साम्राज्य की भाषा थी जिसने भारत को गुलाम बनाया था और आज अंग्रेजी उस विश्व व्यापार संगठन की भाषा है जो केवल आर्थिक साम्राज्यवाद की प्रतिनिधि संस्था है। इसी प्रकार सूट-बूट और टाई अंग्रेजियत तथा ठंडे मुल्कों की नकल है। चूंकि उस समय ब्रिटेन या यूरोप व अमेरिका में अध्ययन के लिए तथा वकालत जैसे कार्यों के लिए सूट-बूट अपरिहार्य थे, इसलिये बाबा साहब को भी सूट-बूट पहनना पड़ा था। वस्त्रों का संबंध भी जलवायु एवं उत्पादन के साथ होता है। यूरोप व अमेरिका ठंडी जलवायु वाले भूभाग हैं, जहां पर सूट-बूट, टाई आदि आवश्यक हैं परंतु भारत एक गर्म जलवायु वाला देश है, जहां वर्ष में चार माह छोड़कर भीषण गर्मी और उमस होती है। ऐसे मौसम में सूट-बूट उपयुक्त नहीं है। दक्षिण भारत की अधिकांश आबादी जिनमें बहुसंख्यक दलित व पिछड़े भी शामिल हैं लुंगी पहनते हैं। हमारा ग्रामीण समाज जिसमें बहुसंख्यक दलित व पिछड़ा आदिवासी है, धोती पहनता है। हमारे दलित बुद्धिजीवी मित्र जब काले अमेरिकी लोगों की चर्चा करते हैं तब वे यह भूल जाते हैं कि काले लोग विद्रोह के समय अपनी वेशभूषा में थे। अन्य सभी लोग भी अपने ही देश की वेशभूषा में लड़े हैं। भारत में कपास का उत्पादन पर्याप्त था और इसलिए हमारे देश में मौसम के अनुकूल धोती, कुर्ता, लुंगी आदि सुविधाजनक पोषाक थी। क्रांति वस्त्रों से नहीं बल्कि मानसिक परिवर्तन से होती है। ब्रिटिश काल में हमारे तमाम देशी शासक राजा-महाराजे और बड़े नौकरशाह सूट-बूट पहनकर ही अंग्रेजों की जी हुजूरी करते थे। इसके विपरीत खादी और देशी वेशभूषा अंग्रेजों और अंग्रेजियत के विरोध का प्रतीक थी।

दलित उद्योगपति, पूंजीपति, नौकरशाह व सत्ताधीश बनें यह हमारे लिये सुखद होगा, परंतु आदर्श लक्ष्य तो तभी पूरा होगा जब कोई छोटा या बड़ा न रहे सब समान हों। क्रांति का मतलब ऐसे परिवर्तन से हो जो वर्तमान विषमता को समाप्त करे। गरीबी, भुखमरी, शोषण और पीड़ा के विशाल समुद्र में चंद सभ्रांत अमीरी और ताकत के टापू खड़े करने से विशाल दलित समाज को कोई फायदा नहीं होने वाला। दरअसल यह पूँजीवादी षडयंत्र है। यह नई दृष्टि दलितों में विषमता को आदर्श लक्ष्य बनाने की चाल है। आदर्श व्यवस्था वह होगी जिसमें बूट पर पॉलिश करने वाले और बूट की उत्पादक कंपनी का मालिक बाटा, दोनों की दैनिक समान होगी।

जिन बुद्धिजीवी मित्रों के मन में बराबरी की बजाय बड़े बनने की इच्छा है, वे जन्मना दलित हो सकते हैं परंतु दिमाग से शोषक, सवर्ण जैसे ही है। मनुवाद विषमता का भाव है और समानता का भाव व कर्म समाजवाद है। अगर अमेरिका की अमीरी के टापू बनाने की नकल के बजाय यह दलित बुद्धिजीवी देश के आम दलितों से जुड़कर उन्हें परिवर्तन के लिए प्रेरित एवं शिक्षित करें, जिसका प्रयास बाबा साहब ने किया था, और वोट से इस प्रकार की क्रांति संभव है।

हमारे यह दलित, बुद्धिजीवी, गांधी को कितनी ही गाली क्यों न दें, परंतु मैं कहना चाहूँगा कि गांधी को गाली देना, आंबेडकरवाद नहीं है। गांधी और आंबेडकर के बीच रिश्तों को समझने के लिये उस दौर की परिस्थितियों को भी समझना होगा। बाबा साहब स्वतः भी अपने अमेरिकी आग्रहों का इस्तेमाल अपने दलित तबके लिए अधिक से अधिक अधिकार हासिल करने के लिए करते थे, वह कलेक्टिव बार्गेनिंग्य (सामूहिक सौदेबाजी) के चतुर प्रयोगकर्ता थे। वे कुछ समय के लिए कारखाना बंदी का आह्वान तो करते थे, परंतु कारखानों को सदा-सदा के लिए बंद कर रोजगार के जरिया या आमदनी के मूल स्त्रोतों को बंद नहीं करते थे। आज दुनिया में अनेक छोटे-छोटे मुल्क हैं जहां एक ही रंग के लोग ज्यादा भी और उसी रंग शासक भी हैं। ऐसे कुछेक मुल्क काले रंग वालों के भी हैं और गोरे रंग वालों के भी हैं। इन मुल्कों में वैसा ही रंग पूंजीवाद है, जिस प्रकार की कल्पना भारत में दलित पूँजीवादी मित्र करते हैं, परंतु पूँजीवादी व्यवस्था के कारण हर वर्ष करोड़ों लोग भूख और बीमारियों से मौत के शिकार होते हैं। इथोपिया के शासक भी काले रंग के हैं और वहां भूख से मरने वाले लाखों लोग भी काले रंग के ही हैं। पूँजीवाद की यही नियति है। गांधी के आग्रह और बाबा साहब की जिद से जो पूना पैक्ट के नाम से समझौता हुआ उसका यह परिणाम है कि आज कोई दलित आदिवासी या पिछड़े वर्ग का व्यक्ति भारत की 150 करोड़ से अधिक आबादी जो सैकड़ों साल से जातीय शोषण और दमन की परंपरा की शिकार थी, उसमें से मुख्यमंत्री बन सकता है। अगर गांधी के आग्रह और बाबा साहब के आग्रह का संभावित स्वरूप पूना पैक्ट के रूप में सामने नहीं आया होता तो क्या यह स्थिति संभव थी। हो सकता था कि दलित जातियों के या अन्य पिछड़ी जातियों के दक्षिण अफ्रीकी जैसे छोटे-छोटे मुल्क बनते, उनके सत्ताधीश भी उन्हीं में से होते। परंतु क्या वे सुरक्षित होते? आज समूचा भारत एक जनतांत्रिक देश है जिसमें आज नहीं तो कल कोई न कोई दलित जो दूरदृष्टि और मानसिक व्यापकता से परिपूर्ण होगा, भारत के शासन सूत्र को संभालेगा। इसलिए भारत को दलित कैपिटिलिज्य की जरूरत नहीं बल्कि समाजवादी भारत की जरूरत है। ये मित्र सामाजिक क्रांति कहते हैं वह सामाजिक क्रांति नहीं है, बल्कि भ्रांति है। दरअसल इन दलित बुद्धिजीवियों को अपने आपको दलित बुद्धिजीवी घोषित करना व कहलाना भी जातीय शोषण है। ये अच्छी तनख्वाह पाने वाले एलीट क्लास के बुद्धि बेचू हैं, जिनका कोई संबंध अब आम दलित के जीवन से नहीं है। इन्होंने अपना वर्ग परिवर्तन कर लिया है। नये पूँजीवादी विश्व की नई तकनीकों का भरपूर सुख भोग रहे हैं। वे अपने आप को दलित इसलिए लिखते हैं ताकि उनकी मार्केटिंग हो सके और जिन दलितों का पिछले कई सदियों से सवर्णों ने शोषण किया था, उन दलितों का अब ये भावनात्मक शोषण कर सकें।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि माँ का पेट का दर्द असली होता है, दाई की तो सांत्वना भर होती है। इसी तर्क के आधार पर जिन लोगों का जन्म दलित घरों में हुआ है, जिन्होंने जन्म से ही उस भीषण विषमता व छुआछूत की पीड़ा को भोगा व देखा है, उनका अनुभव तथा उसका चित्रण ज्यादा वस्तुपरक व यथार्थ भरा होता। मैं मानता हूँ कि भोगे हुए यथार्थ की तुलना, कष्ट की मानसिक कल्पना से नहीं हो सकती। परंतु इस विषमता व कष्टों को मिटाने का संकल्प केवल जन्मना जातीय आधार पर निर्णायक नहीं हो सकता। संवेदनाएं किसी विचारवान व्यक्ति में हो सकती है और उन्हें जाति या वर्ण की सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता। गांधी की जीवन शैली संयमित, सादा जीवन या कहा जाये तो एक हद तक कष्टप्रद जीवन, अपने संडाश की स्वतरू सफाई और उसे आश्रम के नियमों का हिस्सा बनाना, क्या दलितों के साथ तारतम्य स्थापित करना नहीं था? क्या उनकी पीड़ा से उन्हें मुक्ति दिलाना जातीय आधारित समाज को उसकी ओर प्रेरित करना तथा हर व्यक्ति को अपना शूद्र स्वतः बनाने की पहल एक महत्वपूर्ण प्रयोग था। आज 21वीं सदी में मशीन या तकनीक से दलित/शूद्र को मैला साफकरने के काम से मुक्ति के प्रयास हो रहे हैं। यह जरूरी व उचित भी है। इसमें शूद्र निम्न कार्य की बाध्यता से मुक्त तो होगा परंतु सवर्ण समाज जातीय के श्रेष्ठता के भाव से मुक्त नहीं होगा। गांधी तो एक साथ दोनों लक्ष्य हासिल करने के लिए प्रयासरत थे। एक तरफ दलित को सफाई के बाध्यकारी कार्य से मुक्ति दिलाना और दूसरे सवर्ण को स्वतरू ही सफाई का कार्य कर जातीय श्रेष्ठता के मान को ही समाप्त करना। यह दो तरफा परिवर्तन था जिसमें दोनों की मुक्ति का प्रयास था, जो जन्मना श्रेष्ठी भाव के बंदी हैं, तथा जो सफाई करने को लाचार हैं, दोनों की मुक्ति। यह याद रखना होगा कि तकनीक का प्रयोग बराबरी दे सकती है पर मानसिक बराबरी तो, मानसिक क्रांति से ही होगी।

भारत को पुनः डॉ. अंबेडकर ही चाहिए

डॉ. अंबेडकर जयंती
प्रो. कन्हैया त्रिपाठी
लेखक भारत के राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं और केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

उजड़े हुए पेड़ स्वयं जब अपनी जड़ों को सूखते हुए देखे तो उस समय ही इन पेड़ों की चिंता करने वाला एक माली आया और वह था डॉ. अंबेडकर। डॉ. अंबेडकर ने उन्हें अपने तरीके से सींचा। उसमें अपने चिंतन व संघर्ष की नई उर्वर सोच व संवेदन से भर दिया। उनकी यह इच्छा थी कि ये पेड़ न सूखने पायें नहीं तो इस प्रकृति का बहुत बड़ा क्षय हो जाएगा।

संप्रभु समाज की अपनी चेतना के बीच दमित व दलित समाज का अपना कोई औचित्य नहीं बचा देख डॉ. अंबेडकर ने यह कभी नहीं सोचा कि उनके जीवन का क्या? वह उस पीड़ा को सदैव महसूस किए और जितनी भी कोशिश के साथ सूखते पत्तों को बचाया जा सकता है, उन्होंने बचाया। जीवन की सार्थकता एक माली से ज्यादा अच्छा कौन जान सकता है। वह अपने पौधों को बचाता है। वह उसकी साफ़ सफाई करता है। वह रोपने से पहले अपनी जमीन का निरिक्षण व परिक्षण भी करता है। उसके हिस्से का सुख पेड़ की अपनी हरियाली व उसका विस्तार होता है। कुछ ऐसा ही डॉ. अंबेडकर सोचते थे। उन्हें भारत की बगिया का एक भी पेड़ मुरझाया है तो अच्छा नहीं लगता था। किसी बड़े पेड़ का दंभ भी उन्हें पसंद नहीं था। किसी बड़े पेड़ की छाँव तले किसी पौधे की मृत्यु या संकुचन भी पसंद उन्हें नहीं था।

वह पृथ्वी पर हर पौधे को सह-अस्तित्व के साथ बढ़ते, फलते-फूलते हुए देखना चाहते थे। वह चाहते थे कि इन पौधों के पराग-कण अगर एक हो लें तो इनकी जातीय संकोच समाप्त हो जाएंगे। वह चाहते थे कि ये सब बराबर हो जाएँ। इनमें बढ़ने, खिलने व प्रकीर्णित होने के भाव भी एक हो जाएँ। उन्हें किसी पौधे का दूसरे पौधे पर दबाव कदाचित पसंद ही नहीं थे। प्रभुत्व उन्हें पसंद नहीं थे। उन्हें पसंद थे पुरुआ बयार में सभी के झूमने की छवि। डॉ. अंबेडकर को आखिर यह सब क्यों पसंद थे? इसे समझने के लिए कोई राल्स व लॉक की थियरी समझने की आवश्यकता नहीं है। इसे समझने के लिए डॉ. अंबेडकर की भांति स्वस्थ समाज की समझ का होना ज़रूरी है। वह स्वतंत्रता, न्याय, बंधुत्व को ही समावेशी मानते थे। वह संविधान में अभिव्यक्त अधिकारों व कर्तव्यों को ही जीवन का वरदान मानते थे। इसमें एकात्मकता कैसे हो, इसकी चिंता वह सदा करते रहे। इसमें तादात्म्य कैसे हो, इसे वह सदैव सोचते रहे। इसके लिए उन्हें प्रतिरोध व्यक्त करना पड़े तो कर लेते थे।

उन्हें काले गुलाब के फूलों को हेय दृष्टि से देखना तो बिलकुल पसंद नहीं था। वे रेड रोज की अपनी कठिनाइयों को चाहे जितना समझते हों लेकिन ब्लैक रोज की ब्यूटी को कभी नकारना पसंद नहीं करते थे। यद्यपि ये सारे पुष्प तो प्रकृति के ही अभिन्न सृष्टि हैं। फिर वह इस सृष्टि में भेदभाव को कदाचित कैसे स्वीकार करते? उन्होंने इसीलिए सृष्टि में उद्भूत सभी जीवों में समानता देखी। उनके भीतर उसी प्रकृति का अंश न मानने वाली जातियों को वे पसंद नहीं करते। वह यही चाहते हैं कि सह अस्तित्व के सिद्धांत में तो सभी एक से ही सोच के होने चाहिए। सभी में चेतना का स्तर क्या उनके अच्छे व बुरे जगह के निवास से ही भिन्न हो जाता है? क्या उनके किसी बुरे जगह पर उगने में उनका कोई अपना वश था क्या? फिर, उन्हें अपनी कुटिल भावना से देखना, ठीक है? क्या उन्हें कुछ भी न मानना ठीक है? क्या उनका अपमान करना ठीक है? निःसंदेह यह किसी को पसंद न आएगा। लेकिन फिर भी ऐसी ही चीजों का अस्तित्व है तो उसके पीछे बलिष्ठ व मजबूत जड़ों की पकड़ ही उनकी इस शक्ति में अन्तर्निहित है, ऐसा ही माना जाएगा। मजबूत जड़ों वाले को अपने अस्तित्व पर दूसरों को छाँव देने का अधिकार है न की किसी को रौंदने का अधिकार है। यह कार्य तो जानवर बुद्धि कहलाती है। यह बुद्धि तो विकार वाली बुद्धि है। यह शक्ति तो पीड़ा व द्वेष को जन्म देने वाली है। शक्ति का सिद्धांत यह नहीं है कि वह किसी का हनन कर दे। शक्ति का सिद्धांत तो कुछ और है। यदि हम शिव के ही अस्तित्व को मानें तो शिवत्व हो जाने की ही शक्ति डॉ. अंबेडकर के विचार से वास्तविक शक्ति है जहाँ सभी एक दूसरे से भिन्न जातियों के लोगों को खुलकर एक साथ सांस लेने की स्वतंत्रता है। यह किसी पश्चिम के सिद्धांत से निकली हुई स्वंत्रता की अवधारणा नहीं है, यह भी भारतीय है। फिर भारत में ही शक्ति को लेकर कितने दंभ भरे जाते हैं और प्रताड़ना भी होती है। यह प्रताड़ना सदियों से जो चली आ रही है, क्या कमजोर वर्ग को सदैव सहनी ही चाहिए? क्या उनके होने का फिर कोई अर्थ नहीं है? क्या उनका कोई अस्तित्व नहीं है? फिर क्या उन्हें अपनी पहचान खो देनी चाहिए? डॉ. अंबेडकर के मन में अपने अनेक विचार हैं क्योंकि वह इसे लेकर अपना छोभ भी अभिव्यक्त करें तो भी वह अकेले पड़ जाते हैं क्योंकि उनके विचारों को समझने के लिए उनके जैसी सोच का होना ज़रूरी है। यहाँ तो सोच को कुंद करने वाले लोगों की भीड़ है। वे बहुलता में हैं और बहुल समाज के इस लोकतंत्र में फिर उनकी सुनेगा कौन? उनके जैसा सोचेगा कौन?

बहुलता में रहने वाले अपनी कोमलता को खोकर अच्छे नहीं लगते। शक्तिशाली यदि प्रताड़ना के लिए अस्तित्व में है तो उसका होना, कोई होना नहीं है। उसका वह वीभत्स रंग उसे स्वयं आज नहीं तो हज़ार वर्ष बाद बुरा लगेगा। उसे अपने ऊपर हँसना आएगा। प्रकृति के लिए राजा व प्रजा सब एक हैं। और यदि यह प्रकृति का मूल सौंदर्य है तो वह एक न एक दिन अपने अनुसार चीजों को ठीक करती है। वह क्षण में राजा को रंक बनाती है और बड़ी से बड़ी चट्टानों को धूल बना देती है या पानी में बहा देती है। यह सूनामी यूं ही नहीं आती। यह सूनामी हमारे व्यवहार में आए घमंड को समाप्त करने के लिए आती है। डॉ. अंबेडकर ने ऐसी सूनामी से बचने के लिए ही चेताया कि पीड़ा जैसा कोई शास्त्र नहीं है, पीड़ा जैसा कोई शस्त्र भी नहीं है। पीड़ा किसी भी जगह है, वह हथियार की भांति है और वह शमन करने में सक्षम है। इसलिए प्रकृति के न्याय की तराजू कोई व्यवस्था लेकर नहीं खड़ी है। उसका तराजू तो सदैव सामंजस्य के लिए काम करता ही रहता है, समय जो भी लगे।

बंजर और रेत की अपनी ज़रूरते हैं लेकिन वे कभी प्रकृति के सौंदर्य को वीभत्स बनाने के लिए काम नहीं करते। इसके लिए अपनी ज़रूरतों का रसायन डालकर चालाक लोग अपने उत्पादन को बढ़ाते हैं। ऐसा काम करने वाले पीढ़ियां दोहन की संस्कृति की लत पालते हैं और इस चेतना का विस्तार पृथ्वी के सभी भूभाग पर देखने को मिला है। इन्हें वास्तविक शील ही नहीं पता है। मुनाफे के लिए दमन की यह प्रथा पुरानी है। यह वृत्ति भोग का साधन बन सकेगी लेकिन साध्य से उतना दूर ले जाएगी। साध्य का शायद ऐसे में विलोपन भी हो जाता है। डॉ. अंबेडकर ने इन सबसे बचने की और सबके उन्नति की सोची बिना किसी का अहित किए, इसे प्राप्त करने की बातें सबके समक्ष रखी। आज जो भी परिस्थितियां प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हमारे सामने विद्यमान हैं, वे पुनः उनकी अनुपस्थिति को स्वीकार करते हुए चाहती हैं की डॉ. अंबेडकर सद्यः हम सबके बीच विद्यमान होकर किसी को कुम्हलाने से बचा लें। भारत में अनेक जन हैं लेकिन उनकी सोच का ही माली इस भारत की बहुत सी चुनौतियों को समाप्त कर बराबरी वाले लिवास में सबको ढालने की चेष्ठा कर सकता है, या आवाज़ उठा सकता है।

सामाजिक मुक्ति ही सार

डॉ. अम्बेडकर की शिक्षा
विवेक कुमार मिश्र
लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

बाबा साहब डॉ .भीमराव अंबेडकर शिक्षा , सामाजिक जागरण,स्वतंत्र चेतना के साथ मनुष्य मात्र की मानवीय गरिमा के लिए कार्य करने वाले वैचारिक क्रांति के महानायक हैं, शिक्षा और स्वतंत्रता को जीवन का सर्वोच्च मूल्य मानने वाले डॉ अम्बेडकर के लिए मुक्ति का संदर्भ सामाजिक मुक्ति में थी, इसके लिए स्वयं और पूरे समाज को जागृत करना ही उनके चिंतन के मूल में था। उनकी शिक्षा के मूल में सामाजिक चेतना और सामाजिक लोकतंत्र है जिससे किसी भी स्वस्थ समाज की वैचारिक गति आगे बढ़ती है । वे लोकतांत्रिक चेतना को पूरे समाज में व्याप्त करने की आकांक्षा से समाज में बड़े परिवर्तन की ओर बढ़ रहे क्रांति के अग्रदूत के रूप में काम कर रहे थे । उनकी चेतना स्व की मुक्ति की जगह सामाजिक मुक्ति की बात करती है। इसीलिए उनके यहां अपने अधिकारों के प्रति सजगता और न्याय के समाज पर जोर देते हुए समान अधिकार और सामाजिक न्याय की बात को बार बार सामने लाया गया है । यह सब संभव तब होगा जब पूरा समाज शिक्षित हो । पूरे समाज की शिक्षा पर उनका जोर था । वे चाहते थे कि एक बार समाज शिक्षित हो जाएं फिर वह अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ना सीख जायेगा । जड़ता तभी टूटेगी जब सब शिक्षित हों और समाज में शिक्षा का उजियारा हो, यदि कोई एक शिक्षित होता है तो उससे पूरे समाज का भला नहीं होगा पर वह एक शिक्षित व्यक्ति भी यदि सामाजिक शिक्षा के लिए काम करता है, समाज में फैले अंधियारे को खत्म करने में कार्य करता है तो उसकी शिक्षा अर्थपूर्ण होती है । मनुष्य को सामाजिक, चिंतनशील और स्वतंत्र चेतना के प्राणी के रूप में ही देखते हैं और इसी रूप में उनके सामने मानवीय गरिमा और स्वतंत्र चेतना सबसे बड़े मूल्य के रूप में महत्व पाते हैं ।

डॉ अंबेडकर सबसे पहले ज्ञान सरोवर में स्नान करने की बात करते हैं । उनका नारा है 'शिक्षित बनो' यह शिक्षा केवल तुम्हारे लिए नहीं है इससे पूरे समाज को शिक्षित करो । तुम्हारे शिक्षित होने में जब तक सामाजिक शिक्षा नहीं आएगी जब तक समाज का अंधेरा नहीं कटेगा । जब तक लोगों को अपने बारे में पता नहीं चलेगा सब लोग गूंगे रहेंगे - इसलिए अपने समाज का नाक कान आंख बनो । सबको शिक्षित करो। सामाजिक शिक्षा के लिए काम करो । समाज की मुक्ति की बात करो । लोगों को सामाजिक मुक्ति के लिए तैयार करो। इस तरह लोगों को शिक्षित करो कि वे अपने अधिकारों के बारे में जान सकें और उसके लिए सामूहिक स्वतंत्र चेतना के साथ संघर्ष कर सकें । डॉक्टर अंबेडकर जी अच्छी तरह जानते थे कि जिस सामाजिक जागरण और जिस मुक्ति की बात कर रहे हैं उसका तब तक कोई अर्थ नहीं जब तक स्त्री शिक्षा की बात न की जाए । स्त्री शिक्षा और स्त्री जागरण से ही समाज की दशा बदलेगी । यदि स्त्रियां शिक्षित हो गई यदि उन्हें अपने अधिकारों का पता चल गया तो सही मायने में स्वतंत्र चेतना सामाजिक क्रांति और मुक्ति की बात नई पीढ़ी में जन्म के साथ आ जाएगी । यह समाज सुधार की दिशा में, स्वस्थ लोकतंत्र की दिशा में, न्याय और सामाजिक अधिकार की दिशा में सबसे बड़ी क्रांति होगी कि समाज की स्त्रियां शिक्षित हो । पूरे समाज की स्त्रियां शिक्षित हो और जब पढ़ी-लिखी स्त्रियां आगे आएंगी तो सामाजिक चेतना की दिशा में क्रांतिकारी परिवर्तन आएगा। जो लोकतंत्र की मान्यताएं हैं जो स्वतंत्र चेतना की मान्यताएं हैं और जो सामाजिक बोध है वह तभी स्थापित हो पाएगा जब समाज का भविष्य स्त्री शिक्षा के साथ जुड़ेगा । तभी हम वास्तविक और व्यापक परिवर्तन को प्राप्त करेंगे । कानून है पर उसका उपयोग तभी संभव होगा जब हमें जानकारी हो । किसी कानून का दुरुपयोग उस समाज को पीछे ले जाता है। इसलिए सही संदर्भ में सही ढंग से जब शिक्षा का प्रयोग किया जाएगा तब वास्तव में समाज में परिवर्तन आएगा। यह परिवर्तन सामाजिक जागृति के रास्ते और उसमें भी खासकर स्त्री शिक्षा के रास्ते व्यापक रूप से सामने आएगा । बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जागृत सामाजिक चेतना और क्रांति के अग्रदूत थे और इस दिशा में प्रगति यदि किसी एक सूत्र से हुई व्यापक पैमाने पर आ सकती है तो वह स्त्रियों की शिक्षा से है। स्त्रियों की शिक्षा ही सामाजिक क्रांति का आधार है। यही अंबेडकर की सामाजिक शिक्षा का सार है । यहां से स्वतंत्रता की ओर सामाजिक बदलाव की ओर कदम बढ़ते हैं ।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

क्या बताएं, आदत से लाचार हैं हम !

व्यंग्य
प्रभुनाथ शुक्ल
(वरिष्ठ पत्रकार, लेखक एवं समीक्षक)

हम आदमी के स्वभाव को बदल नहीं सकते हैं। वह अपने स्वभाव यानी आदत से मजबूर होता है। हमारे पूर्वांचल में एक कहावत है कि 'जवन बानी पड़ी लरिकाई छूटे न बुढ़ाई दईयां'। कहने का भाव यह है की बचपन में आदमी की जो आदत बन गई वह अंतिम सांस तक उसके साथ रहती है। जिस तरह हम प्रकृति को नहीं बदल सकते हैं, ठीक उसी तरह हम आदमी की आदत को नहीं बदल सकते हैं। आदत एक कला है। मसलन कुछ आदमी दूसरे की सुनते नहीं सिर्फ अपनी सुनाते हैं क्योंकि उनके अंदर बड़बोलापन अधिक होता है। कुछ लोक सफ़ेद झूठ बोलते हैं, लेकिन लगता है कि वे बिल्कुल सच बोल रहे हैं।

हमारे आसपास ऐसे आदमी भी हैं जिन्हें नींद में टहलने की आदत है। कुछ लोग रात भर सोने के बाद भी कुर्सी पर बैठते ही खर्राटें भरने लगते हैं। इसके साथ कुछ ऐसे भी लोग हैं जो पान और गुटका खाने के बाद उसका महाप्रसाद कहीं भी उड़ेल देते हैं। इस तरह के पुनीत कार्य आम से लेकर ख़ास लोग करते हैं। हमारे माननीय भी विधानभवन को भी नहीं छोड़ते। वहां भी अपने थूकने की कला का प्रदर्शन करते हैं। थूकने वालों के इस पुनीत कार्य से लोग बहुत परेशान हैं। अच्छे -अच्छे ऑफिस, बहुमंजिला ईमारतें, रेलवे स्टेशन, बस अड्डे, सीढ़ियों पर थूकने वालों के लिए विशेष चेतावनी का बोर्ड भी लगा दिया गया है।लेकिन लोग हैं कि मानते नहीं।

हमारे देश में थूकना एक कला है। राजा-महाराजाओं ने तो थूकने के लिए बकायदा पीकदान रखते थे।अब इस तरह के पीकदान नहीं दिखते लेकिन सरकारी ऑफिस के बड़े बाबू की टेबल के नीच प्लास्टिक की बाल्टी पीकदान के रूप में उपयोग होती है। क्योंकि उन्हें मुफ़्त में चाय और पान लेने की आदत होती है। घूस के रूप में भी वे पान की भेंट बत्तीसी निकालते हुए लेते हैं। थूकना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। हमारे यहाँ थूकने की पूरी आजादी है। हम सड़क, विधानसभा और सरकारी ऑफिस में रोज थूकते हैं।अभी एक माननीय विधानसभा में ही थूककर अपनी महानता का अद्भुत परिचय दिया। विधानसभा अध्यक्ष ने उनकी काफी लानत मलानत किया, लेकिन उन्होंने उनके चेहरे को बेनक़ाब नहीं किया, क्योंकि वे माननीय ठहरे। अगर आम आदमी होते तो पता नहीं क्या होता। थूकते हुए उसकी तस्वीर वायरल हो जाती, लेकिन अब सवाल माननीयों के जमात का ठहरा।

हमारे यहाँ थूकना जैसे संविधानिक अधिकार है। आप रेल सफ़र के दौरान शौचालय में पान और गुटका खाकर थूकने वाले यात्रियों की तरफ से किया गया पुनीत कार्य आप आए दिन देखते हैं। खिड़की से भी थूक का महादान करते हैं। क्योंकि पान और गुटका हमें थूकने का पूरा अधिकार देता है। आप बाईक या वाहन पर सफ़र के दौरान भी हम अपने थूकने की कला का प्रदर्शन करते हैं। अच्छे कार्य के लिए जहाँ लोग एक दूसरे की प्रशंसा करते हैं वहीं बुरे कार्य पर थूकते भी हैं यहाँ थूकने का अभिप्राय शाब्दिक निंदा से है। आप जहाँ जाइएगा थूकने वाले आपको आराम से मिल जाएंगे। हमारे समाज में थूक कर चाटने की भी प्रथा रहीं है। हलांकि अब इसका वर्जिनल वर्जन के बजाय शाब्दिक माफ़ी नामा आ गया है। लेकिन वह बात अब मुहावरा बन गया है जिसे आम बोलचाल की भाषा में हम थूक कर चाटना कहते हैं। वैसे आजकल लोग इतने महान कार्य कर दे रहे हैं, जिसकी वजह से हर जगह उनकी थू-थू हो रहीं है। लेकिन अब लोगों की आदत है वे थूकने से बाज नहीं आते और लोग बुरा करते रहते हैं। फिलहाल थूकने की यह बीमारी लाइलाज है फिलहाल इसका कोई समाधान नहीं है।

कानून और न्याय

जैन-हिंदू फैसला-3

विनय झैलावत

(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

धर्म एक चीज है और कानून दूसरी चीज

संविधान के निर्माताओं ने हिंदू और जैन दोनों धर्मों में अंतर को ध्यान में रखते हुए महसूस किया था कि एक में स्पष्ट सभी धर्मों का उल्लेख किया जा सकता है। इस मामले को सभी विवादों से परे रखा जा सकता है। यह कि धर्म एक चीज है और कानून दूसरी चीज है। संविधान को इस विषय पर निर्णयों की लंबी श्रृंखला को रद्द करने वाला नहीं माना जा सकता है। एक जैन संयुक्त परिवार एक हिंदू संयुक्त परिवार होता था। इसमें हिंदू कानून के तहत ऐसे परिवार से जुड़ी सभी घटनाएं शामिल होती हैं।

उच्च न्यायालय ने अपने इस महत्वपूर्ण फैसले में कहा कि हम कुछ ऐसे निर्णयों पर गौर कर सकते हैं, जिनमें विभिन्न विधियों में प्रयुक्त हिंदू शब्द की न्यायालयों द्वारा व्याख्या की गई है। कामावती बनाम दिग्विजय सिंह (एआईआर 1922 पीसी 14) में भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम 1865 की धारा 331 की व्याख्या की जानी है। उस धारा के अनुसार इस अधिनियम के प्रावधान किसी हिंदू की संपत्ति के बिना वसीयत या वसीयत के उत्तराधिकार पर लागू नहीं होते। यह माना गया कि जो व्यक्ति धर्म में हिंदू नहीं रह गया है और ईसाई बन गया। वह भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम के पारित होने के बाद उत्तराधिकार के मामले में हिंदू कानून से आबद्ध होने का चुनाव नहीं कर सकता है। ईसाई धर्म में धर्मांतरित हिंदू पर पूरी तरह से उस अधिनियम का शासन होगा। दूसरे शब्दों में, प्रिवी काउंसिल के अनुसार जो व्यक्ति धर्म से हिंदू नहीं रह गया, वह उक्त अधिनियम की धारा 331 के अर्थ में हिंदू नहीं है। बचेबी बनाम माखनलाल में यह माना गया कि भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम, 1865 की धारा 331 में हिंदू शब्द में जैन भी शामिल है। इसके परिणामस्वरूप उत्तराधिकार के मामलों में जैन उस अधिनियम द्वारा शासित नहीं थे। यह बताया गया कि विरासत का सामान्य हिंदू कानून जैनियों पर लागू होना चाहिए, बशर्ते कि उस कानून में परिवर्तन करने वाली प्रथा या प्रथा का कोई सबूत न हो।

अंबालाल बनाम केशव बंधोचंद गूजर, (आईएलआर 1941 बॉम 250) में सवाल यह था कि क्या जैन हिंदू कानून उत्तराधिकार (संशोधन) अधिनियम, 1929 द्वारा शासित थे, जो मयूखा द्वारा संशोधित मिताक्षरा द्वारा शासित सभी व्यक्तियों पर लागू होता है। उस मामले में यह तर्क दिया गया था कि भारतीय उत्तराधिकार (संशोधन) अधिनियम 1929 जैनियों के साथ-साथ हिंदुओं की भी बात करता है। भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम, 1925 की धारा 4 और 57 में भी यही कहा गया है। उच्च न्यायालय ने बताया कि भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम 1865 की धारा 331 में जैनियों का कोई अलग से उल्लेख नहीं किया गया है। तब भी यह माना गया था कि हिंदू शब्द में जैन भी शामिल हैं। 1870 का हिंदू विल्स एक्ट, जो बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर के अधीन क्षेत्रों और बॉम्बे और मद्रास के शहरों पर लागू होता था, इसमें निस्संदेह जैनियों के साथ-साथ हिंदुओं को भी 1865 के उत्तराधिकार अधिनियम की कुछ धाराओं द्वारा शासित होने का उल्लेख किया गया था।

भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम, 1925 एक समेकित अधिनियम था, जिसने 1865 के पिछले अधिनियम के साथ-साथ 1870 के हिंदू विल्स अधिनियम को निरस्त कर दिया था। इसलिए, संभवत यह आवश्यक समझा गया कि समेकित उपाय में जैनियों का अलग से उल्लेख किया जाए। हालांकि, हिंदू कानून को प्रभावित करने वाले अन्य सभी अधिनियमों में हिंदुओं के साथ जैनियों का कोई अलग उल्लेख नहीं था। इसलिए, जैन हिंदू उत्तराधिकार कानून (संशोधन) अधिनियम, 1929 द्वारा शासित थे। संविधान के अनुच्छेद 25 में जैनियों का अलग से उल्लेख पन्नालाल बनाम सीताबाई में देखा गया था। यह देखा गया था कि संविधान के निर्माताओं ने दोनों धर्मों में अंतर को ध्यान में रखते हुए महसूस किया था कि एक स्पष्ट सभी धर्मों का उल्लेख किया जा सकता है। इस मामले को सभी विवादों से परे रखा जा सकता है। यह कि धर्म एक चीज है और कानून दूसरी चीज है। संविधान को इस विषय पर निर्णयों की लंबी श्रृंखला को रद्द करने वाला नहीं माना जा सकता है।

हिंदू कानून की प्रमुख शाखाओं को चार विधियों अर्थात हिंदू विवाह अधिनियम 1955, हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम 1956, हिंदू अल्पवयस्कता और संरक्षकता अधिनियम 1956, हिंदू दत्तक ग्रहण और भरण-पोषण अधिनियम, 1956 द्वारा संशोधित और संहिताबद्ध किए जाने से पहले, निर्विवाद स्थिति यह थी कि जैनियों पर रीति-रिवाज द्वारा संशोधित हिंदू कानून लागू होता था।

एक जैन संयुक्त परिवार एक हिंदू संयुक्त परिवार होता था। इसमें हिंदू कानून के तहत ऐसे परिवार से जुड़ी सभी घटनाएं शामिल होती थी। विधायी प्रथा भी यह थी कि विभिन्न वैधानिक अधिनियमों में जैनों को आम तौर पर 'हिंदू' शब्द में शामिल माना जाता था। जहां भी जैनों का उल्लेख किया गया था, वह अत्यधिक सावधानी के तौर पर किया गया था। नए कानूनों ने स्थिति को नहीं बदला और यह संभव नहीं है कि उच्च न्यायालय ने अपील के तहत निर्णय में अपने दृष्टिकोण के समर्थन में उन्हें कैसे लागू किया।

उच्च न्यायालय के तर्क में अंतर्निहित भ्रांति यह है कि उन कानूनों में कानून के कृत्रिम अनुप्रयोग क्षेत्र से पता चलता है कि जैन धर्म को हिंदू धर्म के एक रूप या विकास के रूप में भी नहीं माना जाता है। यह एक गलत दृष्टिकोण है। हम इस सवाल से चिंतित नहीं है कि जैन हिंदुओं का एक संप्रदाय है या हिंदू असंतुष्ट है। भले ही धर्म अलग-अलग हो, लेकिन जो बात आम है वह यह है कि इन अधिनियमों के प्रावधानों द्वारा शासित होने वाले सभी लोग 'हिंदू' शब्द में शामिल हैं। वे हिंदुओं की तरह विवाह, उत्तराधिकार, अल्पसंख्यक, संरक्षकता, गोद लेने और रखरखाव से संबंधित समान नियमों द्वारा शासित होंगे। इस प्रकार कानून इस तथ्य को विधायी मान्यता प्रदान करते हैं कि भले ही जैन धर्म से हिंदू न हों, लेकिन उन्हें हिंदुओं के समान ही कानूनों द्वारा शासित होना चाहिए।

इस मामले के इस दृष्टिकोण से हिंदू अविभाजित परिवार अभिव्यक्ति में निश्चित रूप से 'जैन अविभाजित परिवार' शामिल होगा। परिवार का दूसरा वर्ग कानून के लिए अज्ञात है। जैन धर्म हिंदू संयुक्त परिवार से संबंधित सभी घटनाओं से शासित है। हिंदू अविभाजित परिवार एक कानूनी अभिव्यक्ति है जिसका उपयोग कराधान कानूनों में किया गया है। इसका एक निश्चित अर्थ है और यह हिंदू संयुक्त परिवार अभिव्यक्ति को दिए गए अर्थ को दर्शाता है। उच्च न्यायालय ने कहा कि अपर प्रधान न्यायाधीश ने इस निर्णय का सरसरी तौर पर उल्लेख किया, किन्तु पूर्वोक्त टिप्पणियों की सराहना करने में असफल रहे। विद्वान अतिरिक्त प्रधान न्यायाधीश, पारिवारिक न्यायालय द्वारा जिस अधिसूचना पर भरोसा किया गया है, उस पर विचार किया जाता है।

केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम, 1992 की धारा 2 के खंड (सी) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त अधिनियम के प्रयोजन के लिए अल्पसंख्यक समुदायों के रूप में पहले से अधिसूचित पांच समुदायों अर्थात मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध और पारसी के अतिरिक्त जैन समुदाय को अल्पसंख्यक समुदाय के रूप में अधिसूचित किया है। यह अधिसूचना जैन समुदाय को अल्पसंख्यक समुदाय के रूप में मान्यता देती है। यह किसी भी मौजूदा कानून के व्यक्त प्रावधान को संशोधित, अमान्य या अधिक्रमित करना। जैन समुदाय के सदस्यों को किसी भी मौजूदा कानून के आवेदन से बाहर करने के लिए कोई संगत संशोधन नहीं किया गया है।

भारतीय संविधान के संस्थापकों और विधानमंडल ने अपने सामूहिक विवेक से हिंदू विवाह अधिनियम के अनुप्रयोग के लिए हिंदू, बौद्ध, जैन और सिख को एकीकृत किया है। दोनों पक्षों ने दलील दी थी कि उन्होंने हिंदू रीति-रिवाजों और रीति-रिवाजों के अनुसार विवाह किया है। विद्वान उच्च न्यायालय ने अतिरिक्त प्रधान न्यायाधीश के फैसले की आलोचना करते हुए कहा कि कानून के स्पष्ट प्रावधानों के विरुद्ध अपने स्वयं के विचारों और धारणाओं को प्रतिस्थापित करने का कोई अवसर नहीं था। यदि संबंधित न्यायालय संतुष्ट था कि उसके समक्ष लंबित मामले में हिंदू विवाह अधिनियम के प्रावधानों की जैन समुदाय के सदस्यों पर लागू होने के बारे में प्रश्न शामिल है, तो वह सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 की धारा 113 के प्रावधान के तहत उच्च न्यायालय की राय के लिए मामले को संदर्भित कर सकता था, जिसे पारिवारिक न्यायालय अधिनियम, 1984 की धारा 10 के साथ पढ़ा जा सकता था।

उच्च न्यायालय ने परिवार न्यायालय का फैसला निरस्त करते हुए कहा कि विद्वान अतिरिक्त प्रधान न्यायाधीश परिवार न्यायालय ने यह निष्कर्ष निकालने में गंभीर अवैधता और स्पष्ट अनौचित्य किया है कि हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 की धारा 13 बी के तहत दायर याचिका को परिवार न्यायालय अधिनियम की धारा 7 के तहत प्रस्तुत करने के लिए वापस किया जाए। इस कारण परिवार न्यायालय द्वारा दिया गया 8 फरवरी 2025 के विवादित आदेश को अपास्त किया जाता है। अपील स्वीकार की जाती है। प्रथम अपर प्रधान न्यायाधीश पारिवारिक न्यायालय इंदौर को निर्देश दिया जाता है कि वे याचिका पर विधि अनुसार कार्यवाही करें।

अंबेडकर जयंती पर विशेष

लोकेन्द्र सिंह

लेखक, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल में सहायक प्राध्यापक हैं।

संघ की शाखा में आए बाबा साहब डॉ. अंबेडकर

संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचारों में बहुत हद तक साम्य है। विशेषकर, हिन्दू समाज में काल के प्रवाह में आई अस्पृश्यता को दूर करने के लिए जिस प्रकार का संकल्प बाबा साहब के विचारों में दिखायी देता है, उसके दर्शन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्य में प्रत्यक्ष रूप से होते हैं। यही कारण है कि संघ और बाबा साहब प्रारंभ से, अप्रत्यक्ष रूप से एक-दूसरे के निकट रहे हैं। यह तथ्य बहुत कम ही सामने आया है कि डॉ. अंबेडकर ने संघ की शाखा एवं शिक्षा वर्गों में जाकर स्वयंसेवकों को संबोधित भी किया है और संघ के पदाधिकारियों से संघ कार्य की जानकारी भी प्राप्त की थी। इसलिए आज जब कहा जाता है कि बाबा साहब भी संघ की शाखा पर आए थे, तो लोग आर्श्चय व्यक्त करते हैं। परंतु, यह सत्य है। यह भी याद रखें कि संघ के प्रति बाबा साहेब के मन में कभी कोई दुराग्रह या नकारात्मक दृष्टिकोण नहीं रहा है। अवसर आने पर उन्होंने संघ के संबंध में सद्भाव ही प्रकट किए हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के कार्यकर्ताओं एवं अधिकारियों के मन में भी बाबा साहेब के प्रति श्रद्धा का भाव है। संघ के कार्यकर्ता एकात्मता स्रोत में प्रतिदिन बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर का स्मरण करते हैं।

बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर सन् 1935 में पुणे में आयोजित महाराष्ट्र के पहले संघ शिक्षा वर्ग में आए थे। दरअसल, वे अपने व्यवसाय के निमित्त दापोली गए, तब वहाँ की शाखा पर भी गए और स्वयंसेवकों के साथ खुलेमन से चर्चा की। इसका उल्लेख भारतीय मजदूर संघ सहित अनेक सामाजिक संगठनों के संस्थापक रहे विचारक दत्तोपंत ठेंगठी ने अपनी पुस्तक 'डॉ. अंबेडकर और सामाजिक क्रांति की यात्रा' में किया है। इसके साथ ही बाबा साहब डॉ. अंबेडकर से जुड़े रहे पूर्व लोकसभा सांसद बालासाहेब सालुंके ने भी इसका उल्लेख किया है। उनके पुत्र काश्यप सालुंके ने भानुदास गायकवाड़ के साथ मिलकर बालासाहेब सालुंके के संस्मरणों एवं विचारों का संकलन किया है- 'आमचं सायेबः दिवंगत खासदार बालासाहेब सालुंके'। इस पुस्तक के पृष्ठ 25 और 53 पर डॉ. अंबेडकर और आएसएस के संदर्भ में उपरोक्त उल्लेख आते हैं। याद रहे कि बाला साहेब सालुंके और उनके पुत्र काश्यप सालुंके का संघ से कोई संबंध नहीं है।

सन् 1937 में करहाड शाखा (महाराष्ट्र) के विजयादशमी उत्सव पर बाबा साहब का भाषण हुआ। सन् 1939 में एक बार फिर बाबा साहब पुणे के संघ शिक्षा वर्ग के सायंकाल के कार्यक्रम में आए थे। यहाँ उनकी भेंट राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक एवं तत्कालीन सरसंघचालक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार से हुई। इस अवसर पर एक प्रेरणादायी प्रसंग घटित हुआ, जो आज में हमें दिशा देता है। वर्ग में शामिल स्वयंसेवकों के संबंध में जानकारी प्राप्त करते हुए बाबा साहब ने डॉ. हेडगेवार से पूछा- 'इनमें अस्पृश्य कितने हैं?' डॉ. हेडगेवार ने कहा- 'चलो, घूम कर देखते हैं'। बाबा साहब बोले- 'इनमें अस्पृश्य तो कोई दिख नहीं रहा'। डॉ. हेडगेवार ने कहा- 'आप पूछ लें'। बाबा साहब ने पूछा- 'आप में से जो अस्पृश्य हों, वे एक कदम आगे आ जाएं'। उस पंक्ति में से एक भी स्वयंसेवक आगे नहीं आया। बाबासाहब ने कहा- 'देखा, मैं पहले ही कहता था'। इस पर डॉ. हेडगेवार ने कहा- 'हमारे यहाँ यह बताया ही नहीं जाता कि आप अस्पृश्य हैं। आप अपनी अभिप्रेत जाति का नाम लेकर उनसे पूछें'। तब बाबासाहब ने स्वयंसेवकों से प्रश्न किया- 'इस वर्ग में कोई हरिजन, मांग, चमार हो, तो एक कदम आगे आए'। ऐसा कहने पर कई स्वयंसेवकों ने कदम आगे बढ़ाया। उनकी संख्या सौ से ऊपर थी।

सन् 1940 में भी बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर पुणे में संघ की शाखा में गए थे। यहाँ स्वयंसेवकों के समक्ष अपने विचार प्रकट किए। इस संबंध में हाल ही में विश्व संवाद केंद्र, विदर्भ ने 9 जनवरी 1940 को प्रकाशित प्रसिद्ध मराठी दैनिक समाचारपत्र 'केसरी' की प्रति साझा की है। केसरी में प्रकाशित समाचार के अनुसार, बाबा साहब ने संघ के स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए कहा- 'कुछ बातों पर मतभेद हो सकते हैं। लेकिन संघ की तरफ अपनत्व की भावना से देखता हूँ'। बाबा साहब के इस वाक्य से स्पष्ट है कि वे संघ के कार्य को अपना कार्य समझते थे। संभवतः उन्हें इस बात की प्रसन्नता रही होगी कि जिस काम को उन्होंने हाथ में लिया है, संघ के स्वयंसेवक उसे जमीन पर उतारने में बड़ा सहयोग दे रहे हैं।

बाबा साहब का संबंध संघ के साथ लंबे समय तक बना रहा। संघ पर लगे पहले प्रतिबंध को हटाने में बाबा साहब का जो सहयोग एवं परामर्श मिला, उसके प्रति धन्यवाद ज्ञापित करने के लिए तत्कालीन सरसंघचालक माधव सदाशिवराव गोलवलकर 'श्रीगुरुजी' ने सितंबर-1949 में बाबा साहब से दिल्ली में भेंट की। अर्थात् बाबा साहब डॉ. अंबेडकर और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का आपसी संपर्क-संवाद चलता रहा।

डॉ. अम्बेडकर जयंती पर विशेष

डॉ. चन्दर सोनाने

लेखक मप्र जनसंपर्क विभाग के सेनानिवृत्त अधिकारी हैं।

आज बाबा साहब को समझने की जरूरत

भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्यप्रदेश के इन्दौर के पास महू छावनी में हुआ था। पिता रामजी सूबेदार और माता भीमाबाई कै चौदहवें रत्न थे भीवा। मात्र 65 वर्ष की आयु में 6 दिसम्बर 1956 को भीमराव अम्बेडकर का परिनिर्वाण हुआ। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अपनी अल्पआयु में देश के लिए इतने काम किए कि उसको लिखने बैठे तो वह अन्तहीन रहेगा। आज जरूरत है बाबासाहेब के कार्यों और उनके उद्देश्यों को समझने की। संकेत में ये कहा जा सकता है कि बाबासाहेब के योगदान को कभी देश भूल नहीं पायेगा।

शिक्षा के प्रति समर्पित - बड़ौदा महाराजा द्वारा जून 1913 से जून 1916 तक 3 साल के लिए प्रतिभाशाली भीमराव को विदेश में शिक्षा के लिए स्कॉलरशिप दी गई। 15 जून 1913 को बम्बई से पानी के जहाज द्वारा युवा भीमराव अमेरिका के लिए रवाना हुए। उन्होंने 21 जुलाई 1913 को न्यूयार्क के कोलंबिया यूनिवर्सिटी में प्रवेश लिया। भीमराव ने अमेरिका की चकाचौंध से बचते हुए शिक्षा प्राप्त करने के लिए घोर साधना की। सन 1915 में उन्हें प्राचीन भारत मे व्यापार विषय पर थीसीस लिखकर कोलम्बियो यूनिवर्सिटी से एम.ए की डिग्री प्राप्त की। मई 1916 में डॉ. गोल्डन वेजर के मानववंश शास्त्र सेमिनार में अपना लंबा रिसर्च पेपर भारत में जातिप्रथा पढ़ा। भीमराव एक साथ दो थीसीस पर काम कर रहे थे। उनका दूसरे रिसर्च प्रबंध का विषय था भारत के राष्ट्रीय मुनाफे का बंटवारा : एक ऐतिहासिक और विवेचनात्मक अध्ययन। इसे जून 1916 में पीएचडी के लिए स्वीकृत किया गया।

एक साथ दो डिग्री - न्यूयार्क में अपनी शानदार सफलता के बाद डॉ. अम्बेडकर का मन लंदन की ओर आकर्षित हुआ, जो उस समय दुनिया में अध्ययन का प्रमुख केन्द्र था। डॉ. अम्बेडकर ने अक्टूबर 1916 में इकोनोमिक्स में स्टडी के लिए लंदन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स एंड पॉलिटिकल साइंस में और बैरिस्टर के लिए कानून में स्टडी में लिए ग्रेज इन में प्रवेश लिया। उस समय दुनिया के प्रसिद्ध कानून विशेषज्ञ यहीं पर पढ़ने जाते थे। किन्तु आर्थिक तंगी के कारण उन्हें पढ़ाई बीच में छोड़कर 21 अगस्त 1917 को वापस भारत आना पड़ा।

ऐतिहासिक महाड़ आंदोलन - 1924 में कोलाबा जिले के महाड़ गांव की नगरपालिका ने चवदार तालाब के पानी का उपयोग करने का अधिकार अछूतों को दिया। लेकिन, सवर्ण हिन्दुओं के डर के कारण अछूत लोग तालाब के पानी को छूने की हिम्मत भी नहीं कर पाते थे। सवर्ण हिन्दुओं ने तय कर दिया था कि किसी भी हालत में अछूतों तालाब का पानी पीना तो दूर छूने भी नहीं देंगे। आखिर इस अधिकार को पाने के लिए कोलाबा जिले के प्रमुख अछूत नेताओं ने 19 और 20 मार्च 1927 को महाड़ में डॉ. अम्बेडकर की अध्यक्षता में दलित जाति परिषद की ओर से एक सभा का आयोजन किया। उसमें तय किया गया कि 20 मार्च की सुबह चवदार तालाब से पानी पीने के अधिकार को व्यवहारिक रूप दिया जाए। डॉ. अम्बेडकर और अछूतों के लिए एक महत्वपूर्ण और क्रान्तिकारी घटना थी। हजारों लोगों का यह जुलूस शांतिपूर्वक तालाब के किनारे पहुंचा और उन्होंने तालाब का पानी पिया। इस प्रकार उन्होंने तालाब का पानी पीकर अमानवीय, अन्याय और भेदभाव की बेड़ियों को तोड़ डाला। इस महाड़ सत्यागृह से अछूतों में संगठन और संघर्ष का बिगुल बज गया। हालांकि महाड़ सत्यागृह के आद अछूतों पर हमला भी किया गया। डॉ. अम्बेडकर ने 3 अप्रैल 1927 को बहिष्कृत भारत नामक एक दूसरे साप्ताहिक अखबार की शुरूआत की। इस अखबार के जरिए डॉ. अम्बेडकर ने विरोधियों को करारा जबाव दिया।

मनु स्मृति को जलाया - भारत के इतिहास में 25 दिसम्बर 1927 का दिन हमेशा याद रखा जायेगा। उस दिन डॉ. अम्बेडकर ने मनु के काले कानूनों की किताब मनु स्मृति को आग के हवाले कर हिन्दुओं के सामाजिक ढांचे में बदलाव लाने की पुरजोर मांग की। महाड़ के सम्मेलन और मनु स्मृति को जलाने के दूरगामी परिणाम हुए। भारत के इतिहास में अछूतों में सामाजिक जागृति के लिहाज से यह एक ऐतिहासिक दिन था। इसी प्रकार डॉ. अम्बेडकर ने नासिक के कालाराम मंदिर में प्रवेश के लिए भी 2 मार्च 1930 को सत्यागृह किया और सफलता प्राप्त की।

पूना पैक्ट - गाँधी जी को जब कम्युनल अवॉर्ड का पता चला तो उन्होंने 20 सितम्बर 1932 से यरवदा जेल में ही आमरण अनशन शुरू कर दिया। गांधी जी के आमरण अनशन से देशभर में हाहाकार मच गया। गांधी जी के प्राण बचाने के लिए चारों ओर से बाबा साहब पर दबाव आना शुरू हो गया। डॉ. अम्बेडकर ने समझोते के लिए 10 शर्तें रखी। इस पर काफी चर्चा हुई। गांधी जी और अम्बेडकर की भेंट भी हुई। हिन्दू नेताओं की अनेक बार बैठकें हुई। 24 सितम्बर 1932 को पूना के यरवदा जेल में गांधी जी और अम्बेडकर के बीच समझोता हुआ, वह पूना पैक्ट के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस पूना पैक्ट में छुआछूत के खात्में का प्रस्ताव भी था। लेकिन दुखद यह है कि छूआछूत का कौढ़ आज भी किसी न किसी रूप में कायम है। किन्तु इस पूना पैक्ट से अछूतों को राजनैतिक, सामाजिक और शैक्षणिक सुविधा प्राप्त हुई।

शिक्षित करें, संघर्ष करें और संगठित हो - वर्ष 1942 में जून माह में भारत के वायसराय ने अपनी एग्जीक्यूटिव कांउसिल के सदस्यों की

संख्या बढ़ाने का फैसला लिया और उसमें सर सी.पी रामास्वामी अय्यर, सर मुहम्मद उस्मान, डॉ. भीमराव अम्बेडकर, सर जे.पी श्रीवास्तव और सर जोगिन्दर सिंह को शामिल किया गया। 2 जुलाई 1942 को वायसराय ने इन नियुक्तियों की घोषणा की। इसमें डॉ. अम्बेडकर को श्रम मंत्री का दायित्व सौंपा गया। उन्होंने श्रम मंत्री रहते हुए मजदूरों की दयनीय दशा में सुधार के अनेक कार्य किए। 18 और 19 जुलाई को ऑल इंडिया डिप्रेस्ड क्लास का नागपुर में एक सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें 3 मूलमंत्रों का एक संदेश दिया गया। उन्होंने कहा आप स्वयं शिक्षा प्राप्त कर समाज को शिक्षित करें, संघर्ष करें और अपने कल्याण के लिए संगठित हो। उनके ये तीन मूलमंत्र देशभर में खूब प्रसिद्ध हुए।

संविधान निर्मात्री सभा में पहुंचे डॉ. अम्बेडकर - कैबिनेट मिशन की योजना के अनुसार स्टेट विधानसभाओं द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों और सदस्यों द्वारा संविधान निर्मात्री सभा का गठन किया जाना था। इसके लिए चुनाव शुरू हुआ। इसमें बंगाल विधान परिषद से डॉ. भीमराव अम्बेडकर भी चुने गए। वे निर्दलीय उम्मीद्वार के रूप में चुनाव लड़े थे। 20 जुलाई 1946 को चुनाव का नतीजा आ गया और दलितों की मेहनत रंग लाई। बाबासाहेब न सिर्फ जीते बल्कि देश में निर्दलीय उम्मीद्वारों में सबसे ज्यादा वोट उन्हें ही मिले।

स्वतंत्र भारत के पहले कानून मंत्री - स्वतंत्र भारत के पहले कैबिनेट में डॉ. अम्बेडकर को देश के पहले कानून मंत्री की जिम्मेदारी दी गई। यही नहीं इस मंत्रीमंडल के गठन में दलगत राजनीति से परे देश के नवनिर्माण को ध्यान में रखते हुए योग्य व्यक्तियों को मंत्रीमंडल में लिया गया। डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी को भी मंत्रीमंडल में स्थान दिया गया। स्वतंत्र भारत के पहले मंत्रीमंडल में डॉ. अम्बेडकर और डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी जैसे योग्य लेकिन गैर कांग्रेसी नेताओं को शामिल करना पंडित जवाहरलाल नेहरू की योग्यता और राजनैतिक परिपक्वता का उदाहरण था। नए मंत्रीमंडल ने 15 अगस्त 1947 को शपथ ली।

संविधान की प्रारूप समिति के अध्यक्ष बने डॉ. अम्बेडकर - 29 अगस्त 1947 को भारत के संविधान का प्रारूप तैयार करने के लिए प्रारूप समिति बनाई गई, जिसका अध्यक्ष डॉ. भीमराव अम्बेडकर को बनाया गया। यह भारत के इतिहास में एक महान घटना थी। प्रारूप समिति के कुल 7 सदस्य थे। उनके नाम है - सर अलादी कृष्णास्वामी, सर वी.एन राव, सैयद एम. सादुल्ला, सर एन. गोपालास्वामी अयंगर, डॉ. के.एम मुंशी, सर बी.एल मित्तर और श्री डी.पी खेतान। बाद में इस समिति में सर बी.एल मित्तर की जगह एल. माधवाराव और डी.पी खेतान कह जगह टी.टी कृष्णामाचारी को सदस्य बनाया गया था। बाबा साहब को संविधान निर्माण की एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिली थी जिसे उन्होंने दिन रात मेहनत कर देश को बेहतरीन संविधान दिया। बाबासाहेब की उन दिनों सेहत खराब थी लेकिन उन्होंने संविधान निर्माण में रात दिन एक कर दिया। उन्हें संविधान शिल्पी या संविधान निर्माता क्यों कहा जाता है ? इसका उत्तर 5 नवम्बर 1948 को संविधान निर्मात्री सभा के अध्यक्ष टी.टी कृष्णामाचारी ने बाबासाहेब का आभार जताते हुए दिया, जिसमें उन्होंने कहा डॉ. अम्बेडकर ही मुख्य संविधान के निर्माता है। प्रारूप समिति के सदस्यों में से एक का निधन हो गया, लेकिन उनके स्थान पर किसी को मनोनीत नहीं किया गया। एक ने इस्तीफा दे दिया तो वह जगह भर दी गई। एक सदस्य अमेरिका चला गया, उनकी जगह पर भी किसी की नियुक्ति नहीं की गई । एक सदस्य अपने रियासतदारों संबंधी काम काज में ही व्यस्त रहते थे। उनका स्वास्थ्य बिगड़ने से वह भी उपस्थिति नहीं दे पाते थे। अन्य एक दो सदस्य दिल्ली से बाहर के थे और वे इस काम में बहुत कम समय दे पाते थे। आखिर संविधान बनाने की सारी जिम्मेदारी अम्बेडकर को ही निभानी पड़ी।

भारतीय संविधान के शिल्पी - 4 नवम्बर 1948 को बाबासाहेब द्वारा तैयार किया गया कच्चा खाका संविधान सभा में विचार के लिए प्रस्तुत किया गया। उसमें 8 परिशिष्ट और 315 अनुच्छेद थे। अपने भाषण में उन्होनें विस्तार से संविधान के बारे में सबको बताया। भाषण के अन्त में उन्होंने कहा कोई भी संविधान पूर्ण नहीं है। ये संविधान प्रत्यक्ष व्यवहार में लाने योग्य है। यह लचीला है। शांति के दिनों में हो या युद्ध के काल में हो, देश को एकता के सूत्र में बांधे रखने के लिए यह अत्यन्त प्रभावशाली और सक्षम है। संविधान की रूपरेखा पर काफी चर्चा हुई और एक के बाद एक अनुच्छेदों को मंजूर करते गए। 20 नवम्बर 1948 को संविधान की 11वीं धारा को मंजूर करते हुए छुआछूत को अपराध घोषित किया गया। यह संविधान 26 जनवरी 1950 को देष में लागू किया गया।

नागपुर में धम्म दीक्षा समारोह - 14 अक्टूबर 1956 को विजयादशमी के दिन नागपुर में डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अपने हजारो अनुयाईयों के साथ बौद्ध धम्म की दीक्षा गृहण की। इस प्रकार उन्होंने पहले यह कहा था कि हिन्दू धर्म में मेरा जन्म भले ही हुआ हो, किन्तु मैं हिन्दू के रूप में मरूंगा नहीं, को चरितार्थ कर दिखाया।

डॉ. अम्बेडकर ने अपने अपमान को एक चुनौती के रूप में लिया - आज समस्त राजनैतिक दलों और जनप्रतिनिधियों को यह जानने और समझने की आवश्यकता है कि बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर ने संविधान का जो निर्माण किया था क्या उसका देश में सही तरह से क्रियान्वयन हो रहा है। उनके विचार और सीख को समझने की भी आवश्यकता है। उन्होंने अपने जीवन में लगातार हुए अपमान और अन्याय को एक चुनौती के रूप में लिया और अपने लिए एक नया रास्ता बनाया। वे न केवल खुद देश में सबसे अधिक पढ़े-लिखे विद्वान बने, बल्कि अपनी पूरी शक्ति देश के विकास के लिए समर्पित कर दी। कुछ लोगों की धारणा है कि अम्बेडकर ने केवल दलितों की भलाई के लिए ही जीवन संघर्ष किया। इसी कारण उन्हें सिर्फ दलितों के मसीहा के रूप में जाना जाता है। लेकिन यह धारणा न केवल उनकी बहुमुखी प्रतिभा को एक सीमित दायरे में बांधती है बल्कि उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का भरपूर लाभ लेने से भी वंचित करती है। वे एक महान अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, कानूनविज्ञ, महिलाओं और मजदूरों के उद्धारक, संविधान के शिल्पी, समाज सुधारक और सच्चे राष्ट्रभक्त थे। उन्हें देश हमेशा याद रखेगा और उनके द्वारा दिए गए महान योगदान को कभी भूला नहीं पायेगा। उनके किए कार्यों को आज समझने की जरूरत है। जो किसी भी समयसीमा में नहीं बांधे जा सकते।

बाइक स्लिप, जीजा की मौत, साला घायल

बैतूल। बैतूल के सेमलपुरा में बाइक स्लिप होने से एक युवक की मौत हो गई। मृतक सुरेश जुगरु काजले (25) और उसका साला शनिराम सेमलपुरा से नर्मदापुरम जा रहे थे। गांव में ही बाइक स्लिप हो गई, जिससे दोनों गिर पड़े। सुरेश के सिर में गंभीर चोट आई और वो बेहोश हो गया। रविवार सुबह जिला अस्पताल में इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। घायल साले शनिराम ने बताया कि हादसे के बाद गांव के लोगों ने उन्हें शाहपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया। यहां से गंभीर हालत में सुरेश को जिला अस्पताल रेफर किया गया, जहां रविवार सुबह उसकी मौत हो गई। अस्पताल पुलिस चौकी ने पोस्टमार्ट्म के बाद शव परिजनों को सौंप दिया।

पत्रकार सपन दुबे को भ्रातृ शोक

बैतूल। नेशनल रेलवे मजदूर यूनियन के अध्यक्ष रहे, वरिष्ठ कामरेड स्व. शंकरलाल दुबे के बड़े सुपुत्र, पत्रकार सपन दुबे के बड़े भाई पवन (पप्पी) दुबे (58) का 12 अप्रैल की रात्रि

नागरिक के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया था। वे पिछले कुछ समय से गंभीर रूप से अस्वस्थ्य चल रहे थे। स्व. पवन दुबे अपने पीछे पत्नी और एक पुत्र का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनकी अंत्येष्टि रविवार को नागपुर में की गई। मुखाग्नि उनके इकलौते पुत्र शिशिर दुबे ने दी। उल्लेखनीय है कि पूर्व लोको पायलट पवन दुबे अस्वस्थ्य होने के बाद मुख्य कार्यालय अधीक्षक नागपुर लॉबी में पदस्थ थे। लंबी बीमारी के बाद 12 अप्रैल की रात में नागपुर के न्यू मिडास हॉस्पिटल में उनका निधन हो गया। सपन दुबे को भ्रातृ शोक पर जिले के गणमान्य नागरिकों, जनप्रतिनिधियों, राजनेताओं, अधिवक्ताओं, पत्रकारों, चिकित्सकों, सामाजिक बंधुओं, ईष्टमित्रों, शुभचिंतकों ने शोक व्यक्त किया है।

युवक ने खाया जहर, इलाज के दौरान मौत

बैतूल। झल्लार थाना क्षेत्र के ग्राम उमडला में युवक प्रकाश पिता पतिराम कासदेकर (22) ने शुक्रवार को खेत में जहरीला पदार्थ खा लिया था। रविवार सुबह प्राइवेट अस्पताल में इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। जानकारी के अनुसार, युवक ने खेत में जहरीला पदार्थ खा लिया था। आसपास के लोगों ने युवक को बेसुध हालत में देखा, उन्होंने तुरंत परिजनों को सूचित किया। परिजन युवक को पहले भैंसदेही सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले गए। प्राथमिक उपचार के बाद उसे जिला अस्पताल बैतूल रेफर किया गया। जिला अस्पताल में स्थिति में सुधार न होने पर परिजन उसे एक प्राइवेट अस्पताल ले गए। रविवार सुबह इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। रविवार को जिला अस्पताल में पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंपा गया। पुलिस अभी यह पता लगाने में जुटी है। मामले की जांच जारी है।

नरवाई जलाने से पड़ोसी किसान का घर जलकर खाक

बैतूल। चिचोली थाना क्षेत्र के अंतर्गत मंडई बुजुर्ग में एक किसान ने अपने खेत की नरवाई जला दी। तेज हवा के चलते आग बेकाबू हो गई, जिससे आग पड़ोसी किसान के खेत में बने मकान तक

पहुंच गई। मकान तक आग पहुंचने से मकान जलकर राख हो गया और मकान में रखा 25 बोरी खाद, भूसा, बिजली केबल एवं मकान में रखी अन्य सामग्री जलकर राख हो गई। मंडई बुजुर्ग के किसान वेदप्रकाश माचेवार ने बताया कि पड़ोसी किसान अमरु के खेत में दोपहर खेत की नरवाई मे आग लगा दी। आग बेकाबू होकर मेरे खेत में बने मकान तक पहुंच गई। जिसके कारण खेत में बना मकान जलकर राख हो गया। मकान में रखा 25 बोरी यूरिया खाद,15 हजार का भूसा, 5 हजार के 12 पाईप और बिजली का केबल सहित अन्य कृषि उपयोगी सामग्री जलकर राख हो गई। पीड़ित किसान नरवाई जलाने से हुए नुकसान में कार्रवाई को लेकर चिचोली थाने में आवेदन दिया है।

सिमोरी के सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों ने रचा इतिहास

एक उत्कृष्ट में, तो तीन का मॉडल स्कूल में चयन

बैतूल। प्रतिभा कभी भी संसाधनों की मोहताज नहीं होती, यह बात साबित कर दिखाई है, शासकीय माध्यमिक शाला सिमोरी के विद्यार्थियों ने। सत्र 2024-25 में यहां के विद्यार्थियों ने कड़ी मेहनत और लगन से सफलता अर्जित करते हुए अपने गांव और विद्यालय का नाम रोशन किया है। सिमोरी निवासी छात्र मयूर काकोडिया ने जिला स्तरीय चयन परीक्षा पास कर उत्कृष्ट विद्यालय में प्रवेश पाया है। वहीं इसी विद्यालय की तीन छात्रा तनुश्री परते, आदर्श धुर्वे और विशाल सूर्यवंशी का चयन मॉडल स्कूल में हुआ है। इन चारों विद्यार्थियों ने सीमित संसाधनों में पढ़ाई कर यह बड़ी उपलब्धि हासिल की है।

सूर्योदय स्मॉल फाइनेंस कंपनी के कर्मचारी की निर्मम हत्या का पुलिस ने किया खुलासा

बैतूल। सूर्योदय स्मॉल फाइनेंस कंपनी के कर्मचारी की निर्मम हत्या के मामले की गुत्थी को पुलिस ने सुलझा लिया है। रविवार को पुलिस कंट्रोल रूम में मामले का खुलासा करते हुए पुलिस अधीक्षक निश्चत एन झारिया ने बताया कि 9 अप्रैल को मिलानपुर टोल के पास स्थित हवाई पट्टी के पास नहर किनारे कच्चे रास्ते में एक अज्ञात व्यक्ति का खून से सना शव दिखाई देने की सूचना बैतूल बाजार पुलिस को प्राप्त हुई। सूचना पर उप निरीक्षक उत्तम नंदन मस्तकार के नेतृत्व में पुलिस टीम मौके पर पहुंची। शव के गले पर धारदार हथियार के घाव के निशान पाए जाने से प्रथम दृष्टया मामला हत्या का प्रतीत हुआ। वरिष्ठ अधिकारियों को सूचित कर घटनास्थल को सुरक्षित किया गया। मृतक की पहचान के संबंध में सूर्योदय कंपनी के मैनेजर द्वारा बताया गया कि मृतक लोन की राशि वसूलने का कार्य करता है, जिसकी लास्ट लोकेशन लगातार हवाई पट्टी के पास आ रही थी और वह कोई अपडेट नहीं कर रहा था। संदेह होने पर उसकी तलाश की गई तो उसका शव घटनास्थल पर प्राप्त हुआ। इस प्रकार मृतक की शिनाख्त रुपेश पिता दशरथ सोनपुरे, उम्र 35 वर्ष, निवासी शारदा नगर मुलताई के रूप में हुई, जो सूर्योदय स्मॉल फाइनेंस बैंक में वसूली का कार्य करता था। बैतूल बाजार पुलिस ने परिजनों व बैंक प्रबंधन को सूचित कर शव की पंचनामा कार्रवाई उपरांत पोस्टमार्टम के लिए जिला

अस्पताल बैतूल भिजवाया। घटनास्थल का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से निरीक्षण कर साक्ष्य संकलन का कार्य सीन ऑफ क्राइम एक्सपर्ट निरीक्षक आबिद अंसारी द्वारा थाना प्रभारी निरीक्षक अंजना धुर्वे की उपस्थिति में किया गया। मौके की विधिवत फोटोग्राफी एवं वीडियोग्राफी कर महत्वपूर्ण सुराग एकत्र किए गए।

अपराध पंजीबद्ध कर शुरू की जांच – मामला हत्या का प्रतीत होने से बैतूल बाजार थाना में अज्ञात आरोपियों के विरुद्ध धारा 103(1) भारतीय न्याय संहिता के तहत प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। जांच में पाया गया कि मृतक फाइनेंस कंपनी में किस्त वसूलने का कार्य करता था। 9 अप्रैल को वह आरुलढाना क्षेत्र में वसूली के लिए तु गया था, जहां उसे आरोपियों अजय और शिवा से भी किस्त लेना था। आरोपियों को ज्ञात था कि मृतक के पास वसूली की बड़ी रकम होती है। अजय, शिवा और रामराव (तीनों निवासी आरुलढाना) ने उसे किस्त देने के बहाने फोन कर बुलाया और सुनसान स्थान पर धारदार हथियार से हत्या कर शव को झाड़ियों में छिपा दिया।

पकड़े जाने के डर से मोबाइल तोडक़र झाडियों में फेंका– मृतक का बैग, मोबाइल, मोटरसाइकिल व अन्य सामान लूट लिया। पकड़े जाने के डर से आरोपियों ने मोबाइल तोडक़र झीटापाटी गांव में पुराने हाइवे रोड पर रोड किनारे झाडियो में फेंक दिया, मोटरसाइकिल को बायगांव-मासोद के बीच झाडियों में छिपाया, बैग को आरोपी अजय कुमरे के खेत के पास नाला में छुपाया तथा हत्या में प्रयुक्त हथियार को बायगांव-मासोद के पास एक कुएं में फेंक दिया। आरोपियों द्वारा पहने गए कपड़े और चप्पल जूता भी छुपा दिए गए थे। बैतूल बाजार पुलिस द्वारा आरोपियों के बताए अनुसार मृतक के लूटे गए सामान, हत्या में प्रयुक्त हथियार और घटना के समय पहने गए कपड़े व अन्य वस्तुएं बरामद कर ली गई हैं।

पुलिस ने आरोपियों को किया गिरफ्तार– सूक्ष्म विवेचना एवं तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर रामराव पिता झुग्गी भलावी, अजय कुमरे पिता नन्हू कुमरे और शिवा उर्फ शिवकिशोर पिता गणेश धुर्वे, निवासी आरुलढाना को हिरासत में लिया गया। पूछताछ में अपराध स्वीकार करने पर उन्हें गिरफ्तार कर न्यायालय में प्रस्तुत किया गया। इस प्रकरण को सुलझाने में निरीक्षक अंजना धुर्वे थाना प्रभारी, निरीक्षक आबिद अंसारी सीन ऑफ क्राइम एक्सपर्ट, उप निरीक्षक उत्तम मस्तकार, उप निरीक्षक विनोद मालवीय, सउनि संजय कलम, प्र.आर. प्रहलाद उईके, प्र.आर. अशोक झरबड़े, प्र.आर. अजय बरवड़े, प्र.आर. सुभाष मकोड़े, आर. कमल पवार सहित अन्य पुलिस कर्मियों की सराहनीय भूमिका रही।

ग्राम तिरमहु में हुए गोलीकांड के तीनों आरोपी पुलिस की गिरफ्त में

बैतूल। दिनांक 07.04.2025 को दोपहर लगभग 04:00 बजे ग्राम देवगांव निवासी दुर्गेश पिता घनश्याम सरले (उम्र 26 वर्ष) को सफेद टियागो कार से आए तीन बदमाशों में से एक ने पीछे से पीठ में गोली मार दी, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना की रिपोर्ट पर थाना आमला में अपराध क्रमांक 247/25 धारा 109, 3(5) बीएनएस एवं 25, 27 आर्म्स एक्ट के तहत आरोपी श्यामलाल घोघडे निवासी देवगांव एवं दो अन्य अज्ञात आरोपियों के विरुद्ध प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया।

आहत को प्राथमिक उपचार हेतु सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र आमला से जिला चिकित्सालय बैतूल तथा तत्पश्चात एम्स भोपाल रेफर किया गया, जहां उसकी रीढ़ की हड्डी में गोली फंसी होने के कारण इलाज जारी है। दिनदहाड़े हुई इस गोलीबारी की घटना को पुलिस ने एक सनसनीखेज अपराध मानते हुए गहनता से विवेचना प्रारंभ की। पुलिस अधीक्षक बैतूल श्री निश्चल झारिया के निर्देशन में थाना प्रभारी आमला निरीक्षक एस.पी. सक्सेना द्वारा दो टीमें गठित की गईं। विवेचना के दौरान जानकारी मिली कि इस वारदात में श्यामलाल घोघडे उर्फ गोलू के साथ ग्राम बोपलवाड़ी निवासी दशरथ राठौर उर्फ श्याम तथा ग्राम सोनतलाई निवासी नितेन्द्र परमार उर्फ आर्यन भी शामिल थे। तकनीकी विश्लेषण (सीडीआर, टोल नाका वीडीपी आदि) के आधार पर उपनिरीक्षक अमित पवार, उपनिरीक्षक नितिन पटेल, प्रआर 292 वसंत उईके, आर 395 नागेंद्र सिंह एवं आर 452 विवेक टेटवार की टीम उड़ीसा के पुरी समुद्रतट रवाना की गई। टीम ने तकनीकी और व्यावसायिक दक्षता का उपयोग करते हुए तीनों आरोपियों को अभिरक्षा में लिया और दिनांक 13.04.2025 को घटना में प्रयुक्त टियागो कार एवं देसी पिस्तौल जब्त करते हुए आरोपियों को विधिवत गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में सहआरोपियों श्याम राठौर और आर्यन परमार ने बताया कि श्यामलाल घोघडे ने उन्हें अपराध में शामिल होने के लिए 50-50 हजार रुपये देने का वादा किया था, जिनमें से 10-10 हजार रुपये अग्रिम रूप में दिए गए थे। घटना का मूल कारण दुर्गेश सरले और श्यामलाल की बेटी के मध्य प्रेम संबंध रहे हैं, जिससे श्यामलाल और उसका परिवार नाखुश था। वर्ष 2023 में श्यामलाल की पुत्री की शिकायत पर दुर्गेश सरले के विरुद्ध अपराध क्रमांक 024/2023 धारा 376 भादवि एवं 3/4 पॉक्सो एक्ट तथा वर्ष 2024 में अपराध क्रमांक 373/24 धारा 363 भादवि के तहत प्रकरण दर्ज किया गया था।

पेट्रोल पंप मालिक व भतीजे पर चाकू से हमला करने वाले आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। पेट्रोल पंप मालिक व भतीजे पर चाकू से हमला करने वाले आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। 11 अप्रैल को फरियादी निशांत तिवारी ने थाना गंज में रिपोर्ट दर्ज कराई गई कि 10 अप्रैल को रात्रि लगभग 10.45 बजे वे अपने पेट्रोल पंप पर खड़े थे, तभी तीन युवक मोटरसाइकिल से वहाँ आए और सिगरेट पीने लगे। फरियादी द्वारा मना करने पर तीनों युवकों ने विवाद करना शुरू कर दिया। विवाद की आवाज सुनकर पेट्रोल पंप के कर्मचारी और अन्य ग्राहक भी वहाँ एकत्र हो गए, जिन्होंने युवकों को समझाने की कोशिश की। इसके बावजूद वे नहीं माने और फरियादी को अश्लील गालियाँ देने लगे। फरियादी का भतीजा पूर्वांश तिवारी उन्हें समझाने आया, तो उनमें से एक युवक ने अपनी कमर से चाकू निकालकर पूर्वांश पर हमला कर दिया, जिससे उसके बाएँ हाथ की भुजा पर गंभीर चोट आई। बीच-बचाव करने पर फरियादी को भी चाकू मारकर घायल कर दिया गया। आरोपियों ने धमकी दी कि अगली बार उलझे तो जान से खत्म कर देंगे और मौके से फरार हो गए। फरियादी की रिपोर्ट पर अपराध धारा 296, 118(1), 351(2), 3(5) बीएनएस का पंजीबद्ध किया गया था। आरोपियों की पतासाजी कर संभावित स्थानों पर दबिश दी गई। इस दौरान सूचना मिली कि प्रकरण के आरोपी काली चट्टान माता मंदिर के पीछे, कालापाठा में मौजूद हैं।

सारा देश, समाज बाबा साहब का ऋणी है : उपाध्यक्ष मोहन नागर

संविधान निर्माता डॉ.भीमराव अंबेडकर जयंती के उपलक्ष्य में संगोष्ठी का आयोजन

बैतूल। डॉ.भीमराव अंबेडकर की जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्र को उनके द्वारा दिए गए योगदान पर तथ्यात्मक जानकारी एवं उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व आदि के संबंध में समाज को अवगत कराए जाने के लिए रविवार को विकासखंड स्तरीय व्याख्यान माला कार्यक्रम का आयोजन जिला पंचायत सभा कक्ष बैतूल में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष राज्य मंत्री दर्जा मोहन नागर, वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता एवं जिला अध्यक्ष भाजपा सुधाकर पवार, नपा अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर, भंते दीपांकर और बैतूल के विभिन्न बुद्ध विहारों से आए हुए गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में सर्वप्रथम त्रिशरण पंचशील का सामुहिक पाठ कराया। जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष मोहन नागर ने कहा कि सारा देश, समाज बाबा साहब का ऋणी है, समाज में सकारात्मक को लेकर आने के लिए बाबा साहब ने सदैव समानता के मुद्दे पर बात की और डॉ. अंबेडकर भारतीय संविधान के

मुख्य शिल्पकार थे और दलित वर्गों के अधिकारों के लिए जीवनभर संघर्ष करते रहे। जिला अध्यक्ष भाजपा सुधाकर पवार ने बताया कि बाबा साहब का मूल मंत्र शिक्षित बनो, संघर्ष करो और संगठित रहो पर आज हमें अनुशरण की आवश्यकता है। बाबा साहब ने सभी वर्गों के हितों को ध्यान में रखते हुए संविधान लिखा। नपा अध्यक्ष श्रीमती पार्वतीबाई बारस्कर ने कहा कि भारतीय महिलाओं, दलितों,पिछडों एवं आदिवासियों को शिक्षा, समानता,न्याय एवं स्वतंत्रता का अधिकार दिलवाया। प्राध्यापक जेएच कॉलेज सुखदेव डोंगरे ने कहा कि बाबा साहब ने हम सभी को लोकतंत्र का अधिकार दिया है। लोकतंत्र संविधान से चलता है जो हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। कार्यक्रम के अंत में जिला समन्वयक श्रीमती प्रिया चौधरी द्वारा जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत सभी को संकल्प दिलाया गया। उक्त कार्यक्रम में मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद से संबंधित नवांकुर समिति प्रस्फुटन समिति के सदस्य मुख्यमंत्री, सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठ्यक्रम के छात्र-छात्राएं सामाजिक कार्यकर्ताएं और नेहरू युवा केंद्र के प्रतिनिधि भी उपस्थित रहे। सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह भी प्रदान किया गया।

मुलताई पुलिस ने खेत की नरवाई जलाने वाले दो व्यक्तियों के विरुद्ध प्रकरण किया दर्ज

मुलताई। पुलिस ने खेत की नरवाई जलाने वाले दो व्यक्तियों के विरुद्ध प्रकरण दर्ज किया है। दरअसल पुलिस अधीक्षक बैतूल निश्चल एन झारिया तथा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्रीमती कमला जोशी द्वारा खेतों में नरवाई जलाने से संभावित जन-धन हानि को दृष्टिगत रखते हुए ऐसे कृत्य करने वालों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही करने के निर्देश दिए गए हैं। उक्त निर्देशों के पालन में, एसडीओपी मुलताई एसके सिंह के मार्गदर्शन में थाना मुलताई पुलिस द्वारा नरवाई जलाने वाले दो व्यक्तियों के विरुद्ध प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया है। फरियादिया उर्मिला पति नान्हू खपरिये, निवासी चंदोरा खुद द्वारा थाना मुलताई में रिपोर्ट की गई कि 10 अप्रैल को दोपहर लगभग 1 बजे उनके खेत के समीप स्थित आनंदराव कवड़े ने अपने खेत में लगी गेहूं की नरवाई में आग लगा दी, जिससे आग फैलकर फरियादिया के खेत तक पहुंच गई। इससे उनके खेत में बने मकान में आग लग गई, जिसमें बंधी भैंस का छह माह का बच्चा जलकर मर गया तथा मकान में रखा 5 ट्रॉली भूसा, 2 पुरानी सिंचाई मोटरें, 20 नग प्लास्टिक पाइप, 800 फीट केबल वायर, जलावन लकड़ी

एवं गोबर के कंडे जलकर नष्ट हो गए। फरियादिया को लगभग 50,000 रुपये की क्षति हुई है। वहीं दूसरे प्रकरण में फरियादी गणेश पिता महादेव बारगे, उम्र 42 वर्ष, निवासी शास्त्री वार्ड, मुलताई द्वारा रिपोर्ट की गई कि उन्होंने गगन पिता रमेश जैसवाल, निवासी मुलताई का 9 एकड़ खेत ग्राम 47 ढाबा के पास ठेके पर गेहूं की फसल हेतु लिया था। उक्त खेत में 15 दिन पूर्व गेहूं की कटाई कर ली गई थी और खेत में नरवाई शेष थी। सिंचाई हेतु खेत में प्लास्टिक का रोल पाइप बिछा हुआ था। 10 अप्रैल को सुबह 8.30 बजे गगन जैसवाल ने उक्त खेत में आकर नरवाई में आग लगा दी। फरियादी द्वारा मना करने के बावजूद उसने आगजनी की, जिससे सिंचाई हेतु रखा गया 250 फीट प्लास्टिक पाइप जल गया, जिससे लगभग 18,000 रुपये की क्षति हुई है। चूंकि श्रीमान कलेक्टर महोदय द्वारा नरवाई जलाने पर प्रतिबंधात्मक आदेश लागू किया गया है, आरोपी द्वारा उक्त आदेश का उल्लंघन करना पाया गया। आरोपी गगन जैसवाल के विरुद्ध धारा 223, 324(1) भारतीय न्याय संहिता के तहत प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया है।

महाराष्ट्र के वरूड में सारनी के आदिल को पर्यावरण संरक्षण में उत्कृष्ट कार्य के लिये सम्मानित किया

भौंरा। उत्क्रांति शिक्षण संस्थान सवेरा फाउंडेशन (भारत) सण उत्सव समिति जरूड एवं उर्दू एजुकेशन सोसायटी के तत्वावधान में रविवार को जरूड के उत्क्रांति कालेज के सभागार में ईद स्नेह मिलन समारोह का आयोजन किया गया था। उक्त समारोह में देश के विभिन्न क्षेत्रों में समाज सेवा में उत्कृष्ट कार्य कर रहे लोगों को सम्मानित किया गया। समारोह का मुख्य उद्देश्य सामाजिक एकता और भाईचारे को बढ़ावा देने के साथ ही सामाजिक सुधार के लिए काम कर रहे लोगों को सम्मानित करना था। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीकांतजी देशपांडे, रविन्द्रमंगला हनुमंत राव ठाकरे, गिरजा ताई उईके एवं पुलिस इंस्पेक्टर अर्जुनजी ठोसरे उपस्थित थे। कार्यक्रम के आयोजक सीटी पठान द्वारा सभी अतिथियों का स्वागत कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई तत्पश्चात समारोह में बैतूल जिले के सारनी निवासी सामाजिक कार्यकर्ता एवं वाइल्डलाइफ एंड नेचर कंजर्वेशन एक्टिविस्ट आदिल खान को पर्यावरण संरक्षण की दिशा में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु उत्क्रांती शिक्षण संस्थान, सवेरा फाउंडेशन (भारत), सण उत्सव समिति जरूड एवं उर्दू एजुकेशन सोसायटी द्वारा सम्मानित किया गया। वहीं वनों की अवैध कटाई, वन्य प्राणियों की तस्करी रोकने के लिए आदिल के संघर्ष की सराहना करते हुए समितियों के माध्यम से संयुक्त रूप से आदिल को सम्मानपत्र भी दिया गया है।

कार्यक्रम में उपस्थित सवेरा फाउंडेशन (भारत) के संस्थापक अध्यक्ष डॉ भारत भारती ने बताया कि इस कार्यक्रम के माध्यम से समाजिक क्षेत्रों में काम कर रहे लोगों को सम्मानित किया गया है, आदिल खान द्वारा सांपों व अन्य जीवों के संरक्षण, जल संरक्षण, वन्यजीवों की तस्करी रोकने एवं अवैध रेत उत्खनन के खिलाफ चलाई गई उनकी मुहिम को लेकर उन्हें सम्मानित किया गया है। उनका कार्य सराहनीय है एवं युवाओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत है।

पूर्व में भी हो चुके हैं सम्मानित

आदिल खान को सांपों की जान बचाने के लिए पूर्व में बैतूल सीसीएफ, बैतूल कलेक्टर द्वारा सम्मानित किया जा चुका है वहीं कुछ निजी संस्थाओं समेत मध्यप्रदेश के वन मंत्री द्वारा भी आदिल को सम्मानित किया जा चुका हैं। वे 2018-19 में सारनी आए बाघ रेस्क्यू समिति के सदस्य भी रह चुके है, उस दौरान उनके माध्यम से सोशल मीडिया पर लोगों को बाघ के संरक्षण व रेस्क्यू के संबंध में जानकारी दी गई और लोगों में बाघ को लेकर जो अफ़वाह फैली थी उसे दूर करने का काम भी किया जिसके चलते बाघ रेस्क्यू में सहयोग मिला। उन्हें मध्यप्रदेश का पहला एल्बीनो कोबरा भी मिला था, वहीं विभिन्न प्रजाति के घायल सांपों, पक्षियों व छोटे वन्यजीवों समेत घायल गाय, कुत्ते इत्यादि का उपचार भी उनके माध्यम से करवाया जाता रहा है। उनके इन्हीं सेवा कार्यों व पर्यावरण संरक्षण में किए जा रहे कार्यों को देखते हुए उन्हें महाराष्ट्र में सम्मानित किया गया है।

डॉ. अम्बेडकर जयंती पर विशेष

भारतीय संविधान के शिल्पी एवं सामाजिक क्रांति के महानायक

सुरेश पचौरी

लेखक पूर्व केन्द्रीय मंत्री रहे हैं।

मध्यप्रदेश की माटी के गौरव सपूत, भारत रत्न डॉ भीमराव अम्बेडकर, समता मूलक समाज की स्थापना के प्रणेता और भारत के संविधान के निर्माता हैं। डॉ अम्बेडकर का जीवन संघर्षों की ऐसी महागाथा है जिसने इंसानियत को सही अर्थों में समझा और मानवीय गरिमा को स्थापित कर इतिहास को गौरवान्वित किया। डॉ अम्बेडकर देश के कमजोर वर्गों के आत्मसम्मान और सामाजिक, आर्थिक समानता के सबसे बड़े पैरोकार थे। उनका जन्म 14 अप्रैल 1891 में मध्यप्रदेश के महू में हुआ था। महार जाति में जन्में डॉ अम्बेडकर ने गैर बराबरी, छुआछूत, अन्याय, शोषण, दमन, घृणा, तिरस्कार और वेदना की पराकाष्ठा की भट्टी में तपते हुए सतह से शिखर की उंचाई को स्पर्श किया है।

डॉ भीमराव अम्बेडकर बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। 1912 में उन्होंने स्नातक परीक्षा पास की। उन्होंने अमेरिका के कोलंबिया विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. किया, लंदन स्कूल ऑफ इकोनामिक्स से डी.एससी. एवं कोलंबिया यूनिवर्सिटी से डॉक्टर ऑफ लॉ की डिग्री हासिल की। वे एक चिंतनशील व्यक्ति तथा कर्मयोगी थे। उनका जीवन, उन्हें मिली सफलताऐं और उपलब्धियां अपने आप में इस बात का प्रमाण है कि प्रतिभा का जाति से कोई संबंध नहीं होता। महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रतिभा को खुला और उन्मुक्त वातावरण मिलना चाहिए। असाधारण संगठन क्षमता और अन्याय के विरूद्ध लोहा लेने की उनकी संकल्पबद्धता उन्हें सहज ही एक महान इतिहास पुरूष के रूप में प्रतिष्ठापित कर देती है। दलित समाज में मानवाधिकारों के प्रति चेतना जगाने में उनका विशेष योगदान है। दलित एवं कमजोर वर्गों के लिए उनका स्पष्ट संदेश था - 'शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो।'

आजाद भारत के पहले मंत्रिमंडल में डॉ अम्बेडकर देश के कानून मंत्री बने। वे संविधान सभा के सदस्य भी थे तथा उन्हें संविधान सभा की ड्रॉफ्ट कमेटी का सभापति बनाया गया था। आजादी के तत्काल बाद 1947 में जब साम्प्रदायिक विद्वेष की आग फैल रही थी ऐसे में सबसे बड़ी चुनौती थी, एक ऐसा संविधान बनाने की, जो सर्वस्वीकार्य हो। डॉ अम्बेडकर ने इस चुनौती को सहर्ष स्वीकार किया।

डॉ अम्बेडकर राजनैतिक लोकतंत्र को सामाजिक लोकतंत्र में बदलना चाहते थे। वे आर्थिक शोषण के खिलाफ संरक्षण को संविधान के मूलभूत अधिकारों के रूप में सम्मिलित करने के पक्षधर थे। डॉ अम्बेडकर ने विश्व संविधानों के श्रेष्ठ मूल्यों, उन्नत प्रावधानों को भारतीय संस्कृति के अनुरूप ढालकर भारतीय संविधान को वैश्विक संघर्षों एवं अनुभवों से समृद्ध किया। स्वतंत्र भारत के संविधान के शिल्पकार के रूप में डॉ अम्बेडकर के योगदान को पूरा देश बड़े गौरव के साथ स्मरण करता है।

डॉ अम्बेडकर ने संविधान की रचना करते समय इस बात को बारीकी से ध्यान में रखा कि आजाद भारत जातियों, संप्रदायों में विभाजित हुये बिना एकजुट मानव समाज के रूप में अपनी विकास यात्रा तय करे। संविधान में डॉ अम्बेडकर ने ऐसे अनेक प्रावधान रखे, जिसके चलते न केवल दलित वर्ग को अपितु संपूर्ण मानव समाज को समानता से जीने का अधिकार मिला। उन्हीं के प्रयासों से छुआछूत को दंडनीय अपराध घोषित किया गया। संविधान में सामाजिक न्याय और कमजोर वर्ग की बेहतरी के अनेक प्रावधान किये गये।

डॉ अम्बेडकर का जीवन एवं दर्शन सामाजिक एवं आर्थिक नवनिर्माण को सही दिशा देने का मूल मंत्र है। उन्होंने वित्त आयोग, आर.बी.आई. निर्वाचन आयोग, पानी, बिजली, ग्रिड सिस्टम, संपत्ति में महिलाओं का अधिकार आदि अनेक विषयों पर अपने विचार आलेख के रूप में प्रस्तुत किये। राष्ट्रनिर्माण, विदेशनीति निर्धारण, श्रमिक कल्याण, कृषि तथा औद्योगिक विकास में उनका तत्कालीन चिंतन आज भी देश की जनता के लिए धरोहर सरीखा है।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी डॉ अम्बेडकर एक चिंतनशील पत्रकार थे। वे पत्रकारिता को सामाजिक न्याय का माध्यम मानते थे। पत्रकारिता की आवश्यकता और प्रभाव को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा था 'जैसे पंख के बिना पक्षी नहीं होते वैसे समाचार पत्र के बिना आंदोलन नहीं होते।' डॉ अम्बेडकर ने खुद भी 1920 में 'मूकनायक' अखबार का प्रकाशन शुरू किया जिसके माध्यम से मानवीय संवेदनाओं को राष्ट्रीय स्वर दिया। इसका असर यह हुआ कि अंग्रेजों की दलित समाज को हिन्दू समाज से अलग करने की चाल विफल हुई। डॉ अम्बेडकर द्वारा उठाये गये सामाजिक आर्थिक प्रश्नों से आजादी के आंदोलन को गति एवं शक्ति प्राप्त हुई।

सामाजिक समरसता और समाज में बराबरी का भाव डॉ अम्बेडकर के चिंतन के केन्द्र बिन्दु रहे लेकिन यह सिर्फ दलित या कमजोर वर्ग तक सीमित नहीं था, उन्होंने महिलाओं को संपत्ति में अधिकार, हिन्दू समाज में बहुविवाह प्रथा पर रोक लगाने के हिन्दू कोड बिल को लागू करवाने के लिये अथक प्रयास किये। यह उनके सिद्धांतों के प्रति दृढ़ता का परिचायक था कि हिन्दू कोड बिल को पारित न होने पर उन्होंने कानून मंत्री के पद से स्तीफा दे दिया।

समानता पर आधारित शोषणमुक्त समाज के निर्माण की दिशा में निर्णायक कदम उठाते हुये उन्होंने 14 अक्टूम्बर 1956 को अपने लाखों अनुयायियों सहित बौद्ध धर्म अपनाया। नागपुर की पवित्र दीक्षाभूमि पर उन्होंने प्रतिज्ञा की कि मैं इस सिद्धांत को मानूंगा कि सभी मनुष्य एक हैं। मैं बौद्धधर्म के तीन तत्वों 1. ज्ञान 2. करूणा 3. शील के अनुरूप स्वंय को ढालूंगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में केन्द्र सरकार ने डॉ अम्बेडकर के जीवन और कृतित्व को चिरस्मरणीय बनाने के लिये अनेक कदम उठाये हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने बाबा साहब अम्बेडकर के जीवन से गहरे संबंध रखने वाले पांच स्थानों को पंचतीर्थ के रूप में विकसित करने की योजना बनाई है। ये पंचतीर्थ इस प्रकार हैं।

अम्बेडकर जन्म स्थली, महू- डॉ अम्बेडकर की जन्म स्थली महू में उनकी स्मृति में भव्य स्मारक बनाया गया है एवं मध्यप्रदेश सरकार द्वारा महू में डॉ बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है।

शिक्षा भूमि, लंदन- डॉ अम्बेडकर ने लंदन में जिस इमारत में रहकर अपनी पढ़ाई पूरी की थी उसे खरीद कर, उस तीन मंजिला इमारत को अंतर्राष्ट्रीय सहअनुसंधान केन्द्र के रूप में विकसित किया है।

दीक्षा भूमि, नागपुर- डॉ अम्बेडकर ने नागपुर में जिस जगह बौद्ध धर्म को स्वीकार किया था, उस दीक्षा भूमि पर एक भव्य ग्रंथालय, शोध केन्द्र और सभागार का निर्माण कराया गया है।

महापरिनिर्वाण भूमि, दिल्ली- दिल्ली के अलीपुर रोड पर वह बंगला स्थित है, जहां पर डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अंतिम सांस ली थी। इस स्थल पर एक स्मारक बनाया गया।

अम्बेडकर स्मारक, मुम्बई- मुंबई के उस मकान में, जहां बाबा साहब अंबेडकर ने वर्षों तक निवास किया वहां डॉ अम्बेडकर की आदमकद प्रतिमा लगायी गई तथा लगभग 13 हजार लोगों की क्षमता वाला विपश्यना हाल बनाया गया है।

आज डॉ बाबासाहब अंबेडकर हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनके विचार हमेशा हमारे साथ रहेंगे। वे संपूर्ण मानवजाति के उद्धारक थे। उन्होंने धर्म और जाति से परे शोषण मुक्त समाज का सपना देखा था और उसे साकार करने के लिए वे संकल्पबद्ध थे। आज उनकी जन्मतिथि है। आज के दिन हम ये संकल्प लें कि हम डॉ अम्बेडकर के सामाजिक समरसता, समानता और सद्भाव की नयी चेतना को जन-जन तक ले जाकर बाबा साहेब के सपनों को साकार करने की दिशा में सार्थक पहल करेंगे।

पेयजल संकट से निपटने के लिए नलकूप खनन के वेंडर बढ़ाये जाएंगे : स्कूल शिक्षा मंत्री सिंह

भोपाल (नप्र)। स्कूल शिक्षा, परिवहन एवं बालाघाट जिले के प्रभारी मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह ने कहा है कि गर्मी के मौसम को देखते हुए, ऐसी व्यवस्था करें कि जिले में कही पर भी पानी का संकट न हो। उन्होंने कहा कि जिले में नलकूप खनन के साथ ही मोटर पम्प और राइजिंग पाइप सहित सभी व्यवस्थाएं तैयार रखें। साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में 15 वें वित्त से भी पेयजल के संबंध में व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि नलकूप खनन के वेंडर की वर्तमान संख्या पर्याप्त नहीं है इसे बढ़ाया जाये। प्रभारी मंत्री श्री सिंह शनिवार को बालाघाट जिले के मलाजखंड में पेयजल व्यवस्था संबंधित बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में वर्तमान जल संकट सहित कई विषयों पर चर्चा हुई।

प्रभारी मंत्री श्री सिंह ने कहा कि पेयजल, बिजली और जल संरक्षण राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। आने वाले 2 माह तक इन कार्यो पर लगकर कार्य करना आवश्यक है। प्रभारी मंत्री श्री सिंह ने किसानों को धान के साथ मक्का की फसल लेने की सराहना की। उन्होंने कहा कि बिजली की 30 वर्षों की मांग को ध्यान में रखते हुए कार्य योजना तैयार की जाये। मंत्री

श्री सिंह ने कहा कि पीएम आवास सहित आम नागरिकों के लिए रेत की व्यवस्था सुगमता से होनी चाहिए।बैठक में सांसद श्रीमती भारती पारधी, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री सम्राट सिंह सरस्वार, विधायक सर्वश्री संजय उइके, मधु भगत, श्रीमती अनुभा मुंजारे, गौरव पारधी, विक्की पटेल, राजकुमार कर्राहे एवं स्थानीय जनप्रतिनिधि मौजूद थे।

मलाजखण्ड लायब्रेरी अच्छा प्रयास

प्रभारी मंत्री श्री सिंह ने मलाजखंड नगर परिषद में बनाई गई लायब्रेरी का अवलोकन कर प्रयासों की सराहना की। प्रभारी मंत्री श्री सिंह को अवगत कराया कि नगर के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में भी लायब्रेरी स्थापित करने के प्रयासों जारी है। उन्होंने पीएम आवास हितग्राही श्री दलम सिंह के घर चाय और कोदो कुटकी का स्वादलिया।

सामूहिक विवाह में हुए शामिल

प्रभारी मंत्री श्री सिंह मुख्यमंत्री सामूहिक कन्या विवाह योजना कार्यक्रम में भी शामिल हुए। उन्होंने 285 नवदंपति के सुखमय और मंगलमय जीवन की कामना की। प्रभारी मंत्री ने प्रत्येक नवदंपति को 49-49 हजार रूपये के चैक प्रदान किये।

प्रभारी मंत्री ने कहा कि अब हर विधानसभा क्षेत्र में हेलीपेड तैयार किया जायेगा। आपात स्थिति में ग्रामीणों के उपचार के लिये एयर लिफ्ट कर देश के बड़े अस्पतालों में उपचार कराया जायेगा।

बारातियों से भरी पिकअप को ट्रक ने मारी टक्कर

रीवा में एक महिला की मौत 14 घायल

रीवा (नप्र)। रीवा जिले के रायपुर कर्चुलियान थाना क्षेत्र में शादी समारोह से लौट रहे बारातियों की पिकअप को ट्रक ने टक्कर मार दी। हादसे में एक महिला की मौत हो गई, वहीं 14 लोग घायल हो गए। घायलों को रीवा के संजय गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

तेज रफ्तार ट्रक से भिड़ी पिकअप- एडिशनल एसपी विवेक लाल ने बताया कि सेमरिया थाना क्षेत्र के सांव गांव के साकेत परिवार के लोग मऊगंज जिले के देवतालाब में एक वैवाहिक कार्यक्रम में शामिल होकर लौट रहे थे। इस दौरान कोस्टा में जिउला के पास तेज रफ्तार ट्रक से पिकअप की भिड़ंत हो गई, जिससे ट्रक पलट गया।

एक महिला की मौत, 14 लोग घायल- घटना में एक महिला बुद्दू साकेत की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं करीब 14 लोग घायल हो गए। इनमें से रामनिलोचन और रामनिरंजन गंभीर रूप से घायल हुए हैं। स्थानीय लोगों की मदद से पुलिस ने सभी घायलों को रीवा के संजय गांधी अस्पताल में भर्ती कराया है, जहां उनका उपचार जारी है। सभी घायलों की हालत स्थिर बताई जा रही है।

पांच विवि का राष्ट्रीय शोध सम्मेलन आयोजित

भोपाल। पुण्यश्लोक देवी अहिल्याबाई होल्कर की जन्म त्रिशताब्दी के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में राष्ट्रीय शोध सम्मेलन का आयोजन राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान,भोपाल में पांच विश्वविद्यालयों (बरकतउल्ला विवि, भोज विवि, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विवि, सांची बौद्ध विवि, अटल बिहारी वाजपई हिंदी विवि) के सहयोग से किया गया।इस सम्मेलन में देश भर से करीब 200 शोध पत्र शोधार्थियों द्वारा प्रेषित किए गए थे। चयनित 125 शोध पत्र सम्मेलन के विभिन्न सत्रों में प्रस्तुत किए गए।

यह सत्र विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा आयोजित किए गए थे। इस शोध सम्मेलन में एक सत्र की अध्यक्षता करने का अवसर गिरीश जोशी ने की। सत्र में शोधार्थियों द्वारा अपने शोध पत्र पढ़े गए। उनके शोध पत्र पर समीक्षात्मक टिप्पणी, शोध के अंतर्गत आए कुछ तथ्यों का संशोधन तथा शोध को आगे बढ़ाने के संबंध में शोधार्थियों से चर्चा की। सत्र में माखनलाल चतुर्वेदी विवि की डीन अकादमिक डॉ.पी. शशिकला रविचंद्रन के साथ विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक, शोधार्थी, विद्यार्थी उपस्थित थे। पुरुषार्थ सेवा संस्थान के संस्थापक सुरेंद्र मिश्रा की संकल्पना से यह सफल आयोजन हुआ।

भाजपा का बदनावर विधानसभा स्तरीय सक्रिय सदस्य सम्मेलन संपन्न

बदनावर विधानसभा के सभी 6 मंडलों के सक्रिय सदस्य हुए शामिल

धार। भाजपा जिलाध्यक्ष महंत निलेश भारती के मार्गदर्शन में पूरे जिले में भाजपा के सम्मेलन हो रहे है। रविवार को भारतीय जनता पार्टी का बदनावर विधानसभा स्तरीय सक्रिय सदस्य सम्मेलन रविवार को ग्राम कोद में स्थित माली समाज धर्मशाला में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष व भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य विनोद शर्मा थे। पूर्व विधायक खेमराज पाटीदार, पूर्व राज्यमंत्री राजेश अग्रवाल, भाजपा पिछड़ा वर्ग मोर्चा प्रदेश सहमीडिया प्रभारी नरेंद्र राठौड़, भाजपा जिला उपाध्यक्ष धर्मेंद्र शर्मा व जितेंद्र जाट, नगर परिषद अध्यक्ष मीना यादव, भाजपा के वरिष्ठ नेता रामेश्वर मुकाती व भाजपा के जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा भी अतिथि रूप में मंचासीन थे। सम्मेलन की शुरुआत पंडित दीनदयाल उपाध्याय व श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर माल्यार्पण कर की गई। भाजपा के सभी छह मंडलो के अध्यक्षो क्रमश प्रीतेशसिंह पंवार, गोविंद रघुवंशी, संजय सिंह राठौर, संतोष ढोलकिया, धर्मेंद्र राठौड़ व मुन्नालाल पटेल आदि ने अतिथियो का स्वागत किया।

मुख्य वक्ता शर्मा ने कार्यकर्ताओं को संबोधित कर पार्टी के नीति सिद्धांत, देशहित में भाजपा के योगदान और

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा पिछले 11 वर्षों में देश व जनहित में किये गये कार्य व मुख्य उपलब्धियों से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि भाजपा ही एकमात्र ऐसी पार्टी है, जिसमें एक साधारण कार्यकर्ता मुख्यमंत्री व प्रधानमंत्री बन सकता है। उन्होंने पुराने दिनों को याद कर कहा कि पहले के दौर में कार्यकर्ताओं ने कड़ी मेहनत से इस पार्टी को खड़ा किया है। पहले न साधन होते थे और न ही संसाधन। उन्होंने संघर्ष के साथ काम किया। उनकी बदौलत हम यहां तक पहुंचे। हमारा दल कार्यकर्ताओ पर आधारित दल है। हर निर्णय नीचे से ऊपर तक होता है। भाजपा की असली ताकत हमारे कार्यकर्ता हैं। पार्टी के हर कार्यकर्ता को यह समझना होगा कि संगठन की नींव बूथ पर रखी जाती है। कार्यकर्ता सक्रियता से काम करे। पूर्व विधायक पाटीदार, अग्रवाल, शर्मा आदि अतिथियो ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन भाजपा के पूर्व जिला उपाध्यक्ष ईश्वर कटारा ने किया। आभार बखतगढ़ मंडल अध्यक्ष संजय सिंह राठौर ने माना। इस मौके पर बड़ी संख्या में सक्रिय सदस्य मौजूद थे।

बारिश से भीगे गेहूं कट्टे, उपार्जन प्रभारी निलंबित

बखतगढ़ सोसाइटी का मामला

धार। कलेक्टर प्रियंक मिश्रा के उपार्जन केंद्रों पर तत्काल निरीक्षण और सुरक्षित भंडारण की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देशों के पालन में लापरवाही बरतने पर बखतगढ़ में प्राथमिक कृषि साख समिति के उपार्जन प्रभारी को निलम्बित कर दिया गया है। शनिवार को हुई बारिश में प्राथमिक कृषि साख समिति बखतगढ़ में खुले में रखे गए गेहूं के कट्टे भीग गए। संबंधित समिति द्वारा कट्टों को तिरपाल से ढंकने की व्यवस्था नहीं की गई थी।सहकारिता उपायुक्त वर्षा श्रीवास ने बताया कि आंधी के कारण तिरपाल उड़ गई थी और गेहूं को अगले दिन धूप में सुखा लिया गया है और किसी बड़े नुकसान की पुष्टि नहीं हुई है। लापरवाही के चलते उपार्जन प्रभारी को निलंबित किया गया है। उल्लेखनीय है की बारिश की आशंका के मद्देनज़र कलेक्टर प्रियंक मिश्रा ने सहकारिता, खाद्य विभाग सहित संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया था कि किसी भी हालत में गेहूं नहीं भीगना चाहिए। सभी उपार्जन केंद्रों पर तत्काल निरीक्षण और सुरक्षित भंडारण की व्यवस्था सुनिश्चित करने को कहा गया था। कलेक्टर ने चेतावनी दी थी कि किसी भी प्रकार की लापरवाही पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

मैनिट में छात्रों की तबीयत बिगड़ी

15 से अधिक फूड प्वाइजनिंग का शिकार; शिकायतों के बावजूद नहीं सुधरी मेस व्यवस्था

भोपाल (नप्र)। भोपाल के मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (मैनिट) में शुक्रवार शाम और शनिवार सुबह छात्रों को परोसे गए भोजन के बाद दर्जनों छात्रों की तबीयत बिगड़ गई। छात्रों को उल्टी, पेट दर्द और सिर दर्द जैसे लक्षण हुए, जिसके चलते कई को शारदा अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। प्रभावित छात्रों में अधिकांश प्रथम वर्ष के बताए जा रहे हैं।

छात्र संगठनों का आरोप है कि हॉस्टल के भोजन की गुणवत्ता लंबे समय से खराब रही है और इस संबंध में प्रशासन को कई बार शिकायत की गई थी, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई।

उधर, मैनिट प्रशासन का कहना है कि सिर्फ 15 छात्रों ने स्वास्थ्य संबंधी शिकायत की थी, जिन्हें रेजिडेंट डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार दिया, जबकि कुछ को अस्पताल रेफर किया गया। अस्पताल सूत्रों के अनुसार, रविवार सुबह से शाम तक 20 से अधिक छात्र इलाज के लिए पहुंचे। डॉक्टरों का मानना है कि मामला फूड प्वाइजनिंग का हो सकता है। फिलहाल छात्रों की स्थिति स्थिर है।

'जल बचाएं, जीवन और धरा को सुरक्षित बनाएं' के जन-संकल्प से अभियान को मिलेगी सिद्धि : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'विश्व जल दिवस पर कहा था, 'हम जल संरक्षण और सतत विकास को बढ़ावा देने के अपने संकल्प को दोहराते हैं। जल ही जीवन का आधार है, इसलिए इसे आने वाली पीढ़ियों के लिए बचाना जरूरी है। उन्होंने कहा कि हमारे पूर्वजों ने जल संरक्षण को हमेशा प्राथमिकता दी है। वेदों और पुराणों में भी जलाशय, बांध और तालाब बनाने को मानव का परम कर्तव्य बताया गया है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के संकल्प को सिद्धि मिलेगी। प्रधानमंत्री श्री मोदी के संकल्प को सिद्ध करने के लिए प्रदेश में 90 दिवसीय जल गंगा संवर्धन अभियान का शुभारंभ किया है। उन्होंने इस अभियान में गांवों में जल स्रोतों के संरक्षण के लिए प्रयास किये जा रहे हैं। अभियान में नदियों के संरक्षण पर भी जोर दिया जा रहा है।

श्रीराम और माता सीता की साक्षी मंदाकिनी को सहेजने जुटी जन-शक्ति- सतना में जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. भरत मिश्रा नेतृत्व में प्रत्येक शनिवार को मंदाकिनी नदी के तट और स्फटिक शिला क्षेत्र की स्वच्छता के लिए जन-शक्ति जुट रही है। भगवान श्री राम और माता सीता ने 14 वर्ष के वनवास का अधिकांश समय मंदाकिनी नदी के जल से साक्षात्कार करते हुए ही व्यतीत किया था।

भोपाल एम्स में दो नई रिफ्रेक्शन यूनिट शुरू

आंखों की जांच के लिए अब नहीं करना होगा दो दिन का इंतजार

भोपाल (नप्र)। शरीर के सबसे नाजुक अंगों में से एक, आंखों की समस्या हो और इलाज के लिए लंबी वेटिंग हो, तो यह गंभीर परेशानी का कारण बन सकता है। इसी समस्या को देखते हुए भोपाल एम्स के नेत्र विभाग की ओपीडी में दो नई रिफ्रेक्शन यूनिट शुरू की गई हैं। अब संस्थान में ऐसी कुल 6 यूनिट हैं, जिनमें 3 नए रिफ्रेक्शनिस्ट (आंखों की जांच करने वाले टेक्नीशियन) समेत कुल 8 सदस्यीय टीम तैनात रहेगी। यहां नेत्र रोग से ग्रसित मरीजों की कॉर्निया (आंख की सबसे बाहरी पारदर्शी परत) से लेकर मांसपेशियों तक की जांच की जाती है। नेत्र विभागाध्यक्ष डॉ. भावना शर्मा ने बताया कि इन इकाइयों के माध्यम से मरीजों को समय पर जांच और परामर्श की सुविधा मिल सकेगी, जिससे उनके उपचार में मदद मिलेगी।

दो दिन तक की रहती थी वेटिंग

नेत्र विभाग के डॉक्टरों के अनुसार, अब तक केवल चार रिफ्रेक्शन यूनिटों के माध्यम से ही नेत्र रोगियों की जांच की जा रही थी। समय के साथ मरीजों की संख्या में लगातार इजाफा होने के कारण, ओपीडी में आने वाले सभी मरीजों की जांच एक ही दिन में कर पाना कठिन हो गया था।

ऐसे में मरीजों को जांच के लिए एक से दो दिन तक इंतजार करना पड़ता था। जिससे दूरदराज से आने वाले मरीजों को रुकने और खाने-पीने के अतिरिक्त खर्च का सामना करना पड़ता था।मरीजों की परेशानी को देखते हुए, नेत्र विभाग द्वारा तीन नए रिफ्रेक्शनिस्ट की नियुक्ति के साथ दो नई रिफ्रेक्शन यूनिटों की स्थापना की गई है। ये नई यूनिटें ट्रामा ओपीडी के पास स्थित हैं, जबकि पुरानी चार यूनिटें नेत्र रोग विभाग की ओपीडी में पहले से संचालित हो रही हैं।

रिफ्रेक्शन यूनिट में होती हैं यह जांचें

दृष्टि परीक्षण और चश्मे या कॉन्टैक्ट लेंस की सलाह

कॉर्निया टोपोग्राफी (कॉर्निया की सतह की जांच)

हेस स्क्रीनिंग (आंखों की मांसपेशियों की स्थिति और गति का मूल्यांकन)

त्वरित जांच में मिलेगी मदद

एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक डॉ. अजय सिंह ने कहा कि नई रिफ्रेक्शन यूनिट्स से मरीजों की प्रतीक्षा अवधि में कमी आएगी। इसके साथ ही ये यूनिटें नेत्र जांच की गुणवत्ता और दायरे को भी बढ़ाएंगी।

॥ मंदिरम् ॥

82

कमलधाम मंदिर, हैदराबाद

नामपल्ली रेलवे स्टेशन से 21 किमी की दूरी पर, गोलकोंडा किले से 15 किमी और चिलकुर बालाजी मंदिर से 3 किमी की दूरी पर, कमलधाम मंदिर को लोटस टेम्पल भी कहा जाता है। यह चिलकुर बालाजी मंदिर से 3 किलोमीटर पहले हिमायत नगर जंक्शन के पास राजमार्ग पर श्री स्वामीनारायण गुरुकुल में स्थित है। हरे-भरे परिवेश के साथ मंदिर की वास्तुकला अद्भुत है। यह मंदिर कमल के आकार के आधार वाले तालाब पर बना है। इष्टदेव भगवान श्री स्वामीनारायण, भगवान विष्णु, भगवान शिव, भगवान गणपति, देवी पार्वती और भगवान सूर्य हैं।

गुना में शोभायात्रा पर पथराव में वीडियो के आधार पर 9 गिरफ्तार... शहर में भारी पुलिस बल तैनात

विरोध में हिंदूवादी संगठनों ने बाजार बंद कराया, चक्काजाम

गुना (नप्र)। गुना शहर में एक मस्जिद के सामने हनुमान जन्मोत्सव की शोभायात्रा पर शनिवार को पथराव किया गया तो इसके विरोध में गुस्साए हिंदूवादी संगठनों के कार्यकर्ता सड़क पर उतर आए। उन्होंने उपद्रवियों पर कार्रवाई की मांग को लेकर बाजार बंद करा दिया।

चक्काजाम के साथ ही थाने का भी घेराव भी किया गया। देर रात तक हंगामे के बाद प्रशासन और पुलिस अधिकारियों ने उपद्रवियों पर कार्रवाई का आश्वासन दिया तब हंगामा शांत हुआ। पुलिस ने दंगा, हत्या के प्रयास और संपत्ति को नुकसान पहुंचाने, मारपीट जैसे मामलों में केस दर्ज किया गया है।

5 नामजद और 20 अज्ञात आरोपी- पांच नामजद और 15-20 अज्ञात पर मामला दर्ज हुआ है। एएसपी मानसिंह ठाकुर ने बताया कि उपद्रव के वीडियो फुटेज के आधार पर नौ लोगों की गिरफ्तारी हो चुकी है, शेष की तलाश जारी है। शहर में माहौल शांतिपूर्ण है और यहां भारी पुलिसबल तैनात किया गया है।

डीजे बजाने पर हुआ विवाद- दरअसल, शहर के कोल्हूपुरा से निकलकर हाट रोड रपटा की ओर जा रही थी शोभायात्रा पर कर्नलगंज मस्जिद के सामने डीजे बजाने पर कुछ लोगों ने आपत्ति दर्ज कराई। उन लोगों का शोभायात्रा के आयोजकों से विवाद हो गया। पुलिस भी दोनों पक्षों को समझाने की कोशिश करती रही। विवाद के बीच किसी अराजक तत्व ने शोभायात्रा पर पत्थर फेंक दिए तो अफरातफरी के साथ ही दोनों पक्षों में विवाद बढ़ गया। पुलिस व प्रशासन के अधिकारी पहुंचे और बड़ी संख्या में बल तैनात कर दिया गया। इसके बाद हिंदूवादी संगठनों के कार्यकर्ताओं ने दूसरे पक्ष पर कार्रवाई की मांग को लेकर प्रदर्शन शुरू कर दिया।

बाजार बंद करा दिया। रात्रि करीब 11 बजे जयस्तंभ चौराहा पहुंचकर नारेबाजी की, वहां उन्हें पुलिस अधिकारियों ने कार्रवाई का भरोसा दिया तो वह माने। एएसपी मानसिंह ठाकुर ने बताया कि विवाद की वजह पथराव बताया जा रहा है।

जनता अफवाहों पर ध्यान न दे

कर्नलगंज मस्जिद के समीप हनुमान जयंती के जुलूस पर पथराव की जानकारी मिली। स्थिति को नियंत्रण में ले लिया गया है। जनता से भी आग्रह है कि किसी भी प्रकार की अफवाहों पर ध्यान न दें।

- किशोरकुमार कन्याल, कलेक्टर

जुलूस की अनुमति नहीं थी

गुना जुलूस को अनुमति नहीं थी। कर्नलगंज मस्जिद के पास पथराव के बाद विवाद की स्थिति बनी। एक पक्ष की शिकायत पर पथराव करने वाले दूसरे पक्ष पर एफआईआर की जा रही है।

- संजीव सिन्हा, पुलिस अधीक्षक गुना

सीधी में मेरठ जैसा कांड

पति के सीने में कई बार घोंपे चाकू, फिर लोडिंग गाड़ी चढ़ाकर मारने की कोशिश

रीवा (नप्र)। सीधी जिले में उत्तर प्रदेश के मेरठ कांड जैसा सनसनीखेज मामला प्रकाश में आया है। मेरठ में जिस तरह से मुस्कान नाम की महिला ने प्रेमी के साथ मिलकर अपने पति सौरभ की हत्या की थी ठीक उसी तरह सीधी जिले में भी एक पत्नी ने प्रेमी के साथ मिलकर अपने ही पति के कत्ल की साजिश रच डाली।

जिंदगी और मौत के बीच संघर्ष कर रहा है पति

इस साजिश का शिकार होते-होते पति बाल बाल बच गया, लेकिन पत्नी द्वारा कराए गए हमले में वह अभी भी जिंदगी और मौत के बीच संघर्ष कर रहा है। दरअसल अपने आशिक के प्रेम में पागल पत्नी ने पति को मौत के घाट उतार देने की साजिश रची और पति के शरीर पर चाकू से बेवफाई की तहरीर लिख दी। पति के शरीर पर चाकू से एक दर्जन से अधिक हमले किए गए, इसके बाद भी जब जी नहीं भरा तो गाड़ी चढ़ाकर उसे करने का प्रयास किया गया। फिलहाल घायल की हालत गंभीर है और उसका उपचार रीवा के संजय गांधी अस्पताल में जारी है।

दरअसल यह सनसनीखेज घटना सीधी जिले के ककरहा झार की बताई जा रही है, परिजनों ने आरोप लगाया कि घायल रईस साकेत की पत्नी फोन पर अपने आशिक से बात किया करती थी। इस बात को लेकर पति-पत्नी के बीच हमेशा विवाद होता था। बताया गया कि शादी के अभी 2 वर्ष भी पूरे नहीं हुए थे कि पति-पत्नी के रिश्तों में दरार आने लगी।

पहले रईस साकेत के शरीर पर चाकू से ताबड़तोड़ हमले किए गए, इसके बाद लोडर वाहन चढ़ाकर उसे मारने का प्रयास किया गया।

बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में बाघ का चौथा शिकार

महुआ बीनने गई महिला के सिर पर मारा पंजा, डॉक्टर्स को लगाने पड़े 15 टांके

उमरिया (नप्र)। बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व के धमोखर बफर क्षेत्र में रविवार सुबह एक बाघ ने महिला पर हमला कर दिया। सिमरिया निवासी 38 वर्षीय रीता बैगा पिपरिया के पास जंगल में महुआ बीनने गई थी। झाड़ियों में छिपे बाघ ने उन पर पंजे से हमला किया, जिससे उनके सिर के पिछले हिस्से में गहरा जख्म हो गया।

घटना की सूचना मिलते ही टाइगर रिजर्व के अधिकारी मौके पर पहुंचे। घायल महिला को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। महिला के सिर के पिछले हिस्से में 15 टांके लगाए गए हैं।

20 दिन के भीतर टाइगर रिजर्व में बाघ के इंसान पर हमले की ये चौथी घटना है। इससे पहले की तीन घटनाओं में एक पुरुष, एक महिला और एक 12 साल के बालक की मौत हो चुकी है।

वन विभाग ने कहा जंगल में न जाएं- धमोखर बफर के परिक्षेत्र अधिकारी विजय श्रीवास्तव ने बताया कि अस्पताल में टाइगर रिजर्व की टीम तैनात है। साथ ही जंगल में भी गाड़ियां और कर्मचारियों को तैनात किया गया है। मै स्वयं जंगल में निगरानी में कर रहा हूं। ग्रामीणों को जंगल न जाने की समझाइश दी जा रही है। बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व की टीम बाघ की गतिविधियों पर नजर रख रही है।

12 अप्रैल को किया था बालक का शिकार- उमरिया जिले के बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में बाघ ने 12 साल के एक बच्चे पर हमला कर दिया था। जिससे उसकी मौत हो गई। बच्चे का शव एक नाले से बरामद किया गया था।ये घटना शनिवार 12 अप्रैल को सुबह की है। मृतक का नाम विजय कोल है। वह पिपरिया का रहने वाला है। विजय अपने दादा और चाचा के साथ धमोखर क्षेत्र के जंगल में महुआ बीनने गया था। इसी दौरान अचानक झाड़ियों से निकलकर आए बाघ ने उस पर हमला कर दिया। बाघ उसे जबड़े में दबाकर झाड़ियों में ले गया था।

बच्चे के दादा की सूचना पर ग्रामीण और बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व की टीम मौके पर पहुंची। सभी ने मिलकर जंगल में सर्चिंग की। विजय का शव एक नाले में पड़ा मिला था।

दादा-चाचा चिल्लाए, बाघ बच्चे को खींच ले गया- विजय घर का इकलौता लड़का था। वह 6वीं कक्षा में पढ़ता था। उसकी एक बहन भी है। जब बाघ ने उस पर हमला किया तब दादा और चाचा संजय भी वहीं पर महुआ बीन रहे थे। उन्होंने देखा तो शोर मचाने लगे। लेकिन बाघ विजय को झाड़ियों ले गया। शोर की आवाज सुनकर वन विभाग की टीम बाघ के पीछे दौड़ी। जिसके बाद बाघ बच्चे को नाले में छोड़कर जंगल की ओर चला गया।

उज्जैन समेत 4 जिलों के कलेक्टर बदले

आईएएस अफसरों के तबादले, जॉइंट सीईओ बंसत कुर्रे को श्रम विभाग भेजा

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में 9 आईएएस अफसरों के तबादले किए गए हैं। रविवार शाम को जारी आदेश में 4 जिलों उज्जैन, अशोकनगर, हरदा और विदिशा के कलेक्टर बदले गए हैं। संयुक्त मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी बसंत कुर्रे को श्रम विभाग में अपर सचिव बनाया गया है। वहीं संचालक जनसंपर्क अंशुल गुप्ता को विदिशा जिले का कलेक्टर की जिम्मेदारी दी गई है।

किस अधिकारी को कहां भेजा

अधिकारी का नाम	वर्तमान पदस्थापना	नई पदस्थापना
बसंत कुर	जॉइंट सीईओ, राज्य निर्वाचन	अपर सचिव, श्रम विभाग
नीरज कुमार सिंह	कलेक्टर, उज्जैन	संचालक, लोक स्वा.-परिवार कल्याण
सुभाष कुमार द्विवेदी	कलेक्टर, अशोकनगर	अपर सचिव, सा.प्र.विभाग
आदित्य सिंह	कलेक्टर, हरदा	कलेक्टर, अशोकनगर
रौशन कुमार सिंह	कलेक्टर, विदिशा	कलेक्टर, उज्जैन
सिद्धार्थ जैन	अपर कलेक्टर, भोपाल	कलेक्टर, हरदा
अंशुल गुप्ता	संचालक, जनसंपर्क	कलेक्टर, विदिशा
ज्योति शर्मा	अपर कलेक्टर, इंदौर	सीईओ, जिला पंचायत देवास
हिमांशु प्रजापति	सीईओ, जिला पंचायत देवास	कार्यकारी संचालक, मप्र औद्योगिक विकास निगम इंदौर

इन अफसरों के पास ये अतिरिक्त प्रभार

जनजातीय कार्य विभाग के पीएस गुलशन बामरा को अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन एवं नीति विश्लेषण संस्थान भोपाल के सीईओ का अतिरिक्त प्रभार दिया गया है। इंदौर कलेक्टर आशीष सिंह को सिंहस्थ मेला उज्जैन के मेला अधिकारी का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। राज्य योजना आयोग के सदस्य सचिव ऋषि गर्ग को अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन एवं नीति विश्लेषण संस्थान भोपाल के संचालक का अतिरिक्त प्रभार दिया गया है।

दमोह के फर्जी डॉक्टर का होगा पॉलीग्राफ टेस्ट

एसपी ने एसआईटी की गठित; हार्ट सर्जरी के बाद 7 मरीजों की गई थी जान

दमोह (नप्र)। दमोह के मिशन अस्पताल में 7 हार्ट मरीजों की मौत के मामले में जांच तेज हो गई है। एसपी श्रुत कीर्ति सोमवंशी ने बताया कि आरोपी डॉ. नरेंद्र यादव उर्फ एनजॉन केम का पॉलीग्राफी टेस्ट कराया जाएगा। इसके लिए पीएचक्यू को पत्र लिखा है।

एसपी ने मामले की जांच के लिए पांच अधिकारियों की एक विशेष जांच टीम (एसआईटी) का गठन किया है। उन्होंने कहा कि पोलीग्राफ टेस्ट कोर्ट में सबूत नहीं माना जाता, लेकिन यह जांच को सही दिशा देने में मदद करेगा।

पुलिस को प्रयागराज में आरोपी के घर से नकली दस्तावेज बनाने का सामान मिला है। कई आधार कार्ड, पैन कार्ड और अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेज बरामद हुए हैं।

कानपुर में आरोपी के परिवार से पूछताछ- कानपुर में आरोपी के परिवार से पूछताछ में पता चला कि वह 1998 तक वहीं रहा। एमबीबीएस की पढ़ाई के बाद वह वहां से चला गया। स्कूल के रिकॉर्ड में उसका नाम नरेंद्र यादव और पिता का नाम गया बहादुर यादव दर्ज है। उसने निजी नौकरी करके अपनी पढ़ाई का खर्च उठाया था।

2013 में नोएडा में केस दर्ज हुआ था

जांच में एक और अहम जानकारी सामने आई है। 2013 में नोएडा के कैलाश अस्पताल में भी आरोपी के खिलाफ फर्जी दस्तावेजों का केस दर्ज हुआ था। इसके बाद वह वहां से फरार हो गया। संभवतः इसी कारण उसने अपना नाम बदला। नोएडा पुलिस सोमवार तक संबंधित दस्तावेज उपलब्ध करा देगी।

आरोपी ने जबलपुर और बिलासपुर में काम किया

सीएमएचओ से भी बात की गई है। एफआईआर में शामिल दो अन्य लोगों में किसके नाम जोड़े जाएंगे इसकी जानकारी सीएमएचओ बताएंगे अभी तक यह पता चला है कि आरोपी ने नरसिंहपुर, जबलपुर और बिलासपुर में काम किया है। लेकिन वहां पर इसका कोई भी विवादित रिकॉर्ड नहीं मिला है।

कही-सुनी

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

साय मंत्रिमंडल विस्तार में फंस गया पेंच

एक बार फिर विष्णुदेव साय के मंत्रिमंडल में विस्तार का मसला उलझ गया। कहते हैं मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय अपने मंत्रिमंडल का विस्तार कर हल्का होना चाहते हैं, पर बड़े नेताओं के फार्मूले में मामला सुलझ ही नहीं पा रहा है। इस बार तो मुख्यमंत्री ने मंत्रिमडल के विस्तार के संकेत दे दिए थे, फिर भी नए लोगों की इंट्री नहीं हो पाई। माना जा रहा है साय कैबिनेट में तीन विधायकों की इंट्री होनी है, किसी मंत्री की छुट्टी नहीं होगी। अलबत्ता डिपार्टमेंट उलट-पुलट होंगे। बताते हैं सबसे ज्यादा दिक्कत रायपुर शहर के विधायकों को लेकर है। रायपुर से राजेश मूणत, पुरंदर मिश्रा और सुनील सोनी दावेदार हैं। खबर है कि राजेश मूणत के लिए पूर्व मुख्यमंत्री और विधानसभा अध्यक्ष डॉ रमन सिंह वीटो पावर लगाए हुए हैं। पुरंदर मिश्रा के लिए ओड़िया लॉबी लगी हुई है। सुनील सोनी की वकालत सांसद बृजमोहन अग्रवाल कर रहे हैं। चर्चा है कि टक्कर राजेश मूणत और पुरंदर मिश्रा में है। हवा है कि अमर अग्रवाल और गजेंद्र यादव का मंत्रिमंडल में स्थान पक्का है। अमर अग्रवाल को मंत्री बनाए जाने का संगठन के कुछ नेता विरोध कर रहे हैं, पर अमर अग्रवाल को मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय और दिल्ली के नेता भी मंत्रिमंडल में स्थान देने के पक्ष में हैं। गजेंद्र यादव को लेकर कोई विरोध की स्थिति नहीं है। आरएसएस पृष्ठभूमि के चलते गजेंद्र यादव के लिए सभी सहमत बताए जाते हैं। बताते हैं अब छत्तीसगढ़ में मंत्रिमंडल का विस्तार नए राष्ट्रीय अध्यक्ष की नियुक्ति के बाद ही होगा और मंत्रियों के नामों पर फैसला हाईकमान करेगी।

बंद बोर्ड में अध्यक्ष और उपाध्यक्ष की नियुक्ति

लगता है भाजपा सरकार और संगठन ने नेताओं को निगम-मंडलों में एडजेस्ट के लिए अपडेट ही नहीं लिया। राज्य समाज कल्याण बोर्ड पिछले साल ही बंद हो गया, पर सरकार ने श्रीमती शालिनी राजपूत को समाज कल्याण बोर्ड का अध्यक्ष और श्रीमती चंद्रकांति वर्मा को उपाध्यक्ष नियुक्त कर दिया है। बताते हैं भारत सरकार के निर्देश पर ही राज्य समाज कल्याण बोर्ड को बंद किया गया। राज्य समाज कल्याण बोर्ड में भारत सरकार का 50 फीसदी अंशदान होता था। कहा जाता है कि कामकाज नहीं होने के कारण भारत सरकार ने केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड को बंद कर दिया और सभी राज्यों को समाज कल्याण बोर्ड बंद करने के निर्देश दिए। समाज कल्याण बोर्ड अधिकतर परिवार परामर्श केंद्र ही चलाते थे।

निगम-मंडलों में नियुक्ति के बाद एक नेता निशाने पर

चर्चा है कि निगम-मंडलों में अध्यक्षों की नियुक्ति के बाद भाजपा के एक बड़े नेता निशाने पर आ गए हैं। खबर उड़ रही है कि योग्यता की जगह बंदरबाट से हाईकमान भी खुश नहीं है। बताते हैं दिल्ली दरबार में नियुक्तियों और बड़े नेता की कार्यशैली से हलचल है। वैसे इस नेता का छत्तीसगढ़ से जमीनी वास्ता नहीं है, पर छत्तीसगढ़ में दिलचस्पी रखते हैं। कहते हैं कि भाजपा के भीतर आवाज उठ रही है कि जमीन से जुड़े लोगों की जगह हवा-हवाई लोगों को निगम-मंडलों में ज्यादा पद मिल गए। गौरीशंकर श्रीवास ने तो निगम -मंडल और आयोग का ताज ठुकरा दिया। संगठन ने गौरीशंकर श्रीवास को राज्य केश शिल्पी कल्याण बोर्ड का उपाध्यक्ष बनाया था। निगम-मंडलों में नियुक्ति की दूसरी लिस्ट अभी आना बाकी है, अब देखते हैं उसमें कितने असंतुष्टों का दिल बाग़-बाग़ होता है।

बृजमोहन के सुर के मायने

कहा जा रहा है कि सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने ढ़ाई हजार से अधिक बीएड प्रशिक्षित शिक्षकों का पक्ष लेकर सरकार के सामने संकट पैदा कर दिया है। सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर हटाए गए इन शिक्षकों को प्रयोगशाला सहायक और व्यायाम शिक्षक बनाए जाने का सुझाव पत्र लिखकर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय को दिया है। बर्खास्त शिक्षक बहाली के लिए लंबे समय से हड़ताल पर हैं। बर्खास्त शिक्षकों के मामले में साय सरकार अभी चुप्पी साधे हुए है, ऐसे में भाजपा सांसद के बयान को लेकर तरह-तरह के मायने निकाले जा रहे हैं। बताते हैं मंत्री पद छोड़कर सांसदी से बृजमोहन अग्रवाल तो कतई खुश नहीं हैं। बर्खास्त शिक्षकों के मामले में उनके बयान को सरकार पर तीर के रूप में देखा जा रहा है। इस कारण उनके बयान से राजनीतिक गर्मी भी देखी जा रही है।

शक्ति प्रदर्शन या नई परंपरा

अब तक मुख्यमंत्री और मंत्रिमंडल के शपथ समारोह का आयोजन खुले और विशाल मैदान में देखा गया था। अब कुछ निगम-मंडल अध्यक्षों ने भी भव्य समारोह आयोजित कर पदभार ग्रहण करने की परंपरा शुरू कर दी है। पाठ्य पुस्तक निगम के नव नियुक्त अध्यक्ष राजा पांडे ने शहीद स्मारक भवन में समारोह आयोजित कर पदभार संभाला। नागरिक आपूर्ति के नवनियुक्त अध्यक्ष संजय श्रीवास्तव रायपुर के 16 अप्रैल को बीटीआई ग्राउंड में एक भव्य कार्यक्रम में पदभार संभालेंगे। समारोह में शामिल होने वालों के लिए भोजन की व्यवस्था है। मेडिकल कार्पोरेशन के नव नियुक्त अध्यक्ष दीपक म्हस्के 18 अप्रैल को मेडिकल सभागार में आयोजित एक कार्यक्रम में पद संभालेंगे। राज्य बनने के बाद यह पहला अवसर होगा जब निगम-मंडल के अध्यक्षों के लिए कार्यक्रम का आयोजन हो रहा है। लोग यह सवाल उठा रहे हैं कि निगम-मंडल अध्यक्ष शक्ति प्रदर्शन कर रहे हैं या फिर नई परंपरा डाल रहे हैं। अब पदभार ग्रहण कार्यक्रम के आयोजन में जो खर्च होगा, उसका वहन कौन करेगा, यह भी बड़ा सवाल है। क्या संबंधित निगम बोझ उठाएगा या फिर बोर्ड के ठेकेदारों को टोपी पहनाई जाएगी? कुछ निगम-मंडल अध्यक्षों ने अपने-अपने दफ्तरों में कामकाज संभाला। कुछ अध्यक्षों के पदभार समारोह में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय उपस्थित रहे।

नए मुख्य सूचना आयुक्त कब तक ?

छत्तीसगढ़ के नए सूचना आयुक्त के लिए अधिकारियों की कमेटी ने दावेदारों के इंटरव्यू ले लिए हैं। अब मुख्यमंत्री की अध्यक्षता वाली समिति को अंतिम निर्णय लेना है। इस समिति में नेता प्रतिपक्ष और एक मंत्री भी होंगे। लोगों को नए मुख्य सूचना आयुक्त का बेसब्री से इंतजार है, क्योंकि यह पद काफी दिनों से खाली है। पर नए मुख्य सूचना आयुक्त की नियुक्ति से पहले अधिकारियों की समिति द्वारा मुख्य सचिव अमिताभ जैन का इंटरव्यू लेना चर्चा में है। मुख्य सचिव का जिन अफसरों ने इंटरव्यू लिया है, वे उनसे जूनियर हैं और फिलहाल वे उनके मातहत कार्यरत भी हैं। लोग तकनीकी सवाल भी खड़ा कर रहे हैं और काना-फूसी भी कर रहे हैं। अब नए मुख्य सूचना आयुक्त को लेकर नतीजे आने के बाद ही स्थिति स्पष्ट होगी।